

ओम् शान्ति 18-10-20 मधुबन

प्राणप्यारे अव्यक्तमूर्त मात-पिता बापदादा के अति लाडले, सदा परमात्म स्नेह में समाये हुए निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - ड्रामा में यह नये प्रकार का "अव्यक्त-मिलन" भी हर बच्चे में नया उमंग-नया उत्साह भर रहा है। देखो, चारों ओर बाबा के बच्चे ऑनलाइन वीडियो द्वारा अव्यक्त मिलन मनाते कितना हर्षित हो रहे हैं। सभी सूक्ष्म रूप से अपने-अपने बुद्धि के विमान द्वारा मधुबन घर में पहुंचे हुए हैं। यह पहला टर्न यू.पी. से प्रारम्भ हुआ है। वहाँ की कुछ मुख्य टीचर्स व भाई शान्तिवन में 3 दिन की तपस्या भट्टी कर रहे हैं। सभी अपनी और परिवार की सुरक्षा के लिए सोशल डिस्टेंस का भी ध्यान रखते और मास्क भी पहनकर रखते हैं। यह भी ड्रामा की नई सीन सभी साक्षीदृष्टा बन देखते, वाह बाबा वाह! वाह ड्रामा वाह! के गीत गाते खुश हो रहे हैं। सब तरफ साइंस के साधनों द्वारा बहुत अच्छी अनुभूतियां कर रहे हैं। आज मीठे बाबा ने भी विश्व सेवक बच्चों को वाचा सेवा के साथ मन्सा सेवा पर विशेष ध्यान खिंचवाया है। सभी भाई बहिनें इसका अभ्यास तो कर ही रहे हैं। बाबा कहते बच्चे अब मायाजीत, मनजीत, जगतजीत बनकर सदा एवररेडी रहो। जब बाप आपका टीचर है तो समय को टीचर नहीं बनाना, पहले से ही तीव्र पुरुषार्थ कर पास विद आनर बन जाना। ऐसे मीठे प्रेरणादायक महावाक्य सुनकर, सभी इसी होमवर्क प्रमाण विशेष पुरुषार्थ करना जी।

अच्छा - सभी को बहुत-बहुत याद.... ओम् शान्ति।

18-10-20 ओम् शान्ति "अव्यक्त महावाक्य" वीडियो - 17-02-11 मधुबन

" मन्सा सेवा द्वारा आत्माओं को अंचली देने की सेवा करते , बहुतकाल से तीव्र पुरुषार्थ कर एवररेडी रहो तो माला का मणका बन जायेंगे "

आज स्नेह के सागर अपने स्नेही बच्चों से मिलने आये हैं। बच्चों ने याद किया मेरे बाबा आ जाओ तो बाप कहते हैं मेरे स्नेही बच्चे, स्नेह में ऐसा आकर्षण है जो हर बच्चे ने बाप को अपना बनाया और बाप ने हर बच्चे को मेरे बच्चे कहते अपने में समाया। कमाल है, बच्चों ने कहा मेरे बाबा तो मेरे शब्द में इतना स्नेह भरा हुआ है जो बाप ने भी कहा मेरे बच्चे, स्नेह क्या से क्या बना देता है। हर बच्चे के मस्तक में आज स्नेह की लहरें लहरा रही हैं, यह देख बापदादा हर्षित हो रहे हैं। स्नेह ही दिल को अपना बनाने वाला साधन है। तो हर एक बच्चे के अन्दर आज स्नेह की लहरें लहराती हुई देख-देख बापदादा भी खुश हो रहे हैं।

अभी-अभी 5 मिनट के लिए एक ड्रिल बापदादा सबको करा रहे हैं। अपने मन्सा शक्ति से सृष्टि में जो भी आपके भक्त वा अनेक दुःखी अशान्त आत्मायें आपको याद कर रही हैं, हे हमारे पूर्वज हमें थोड़े समय के लिए भी शान्ति दे दो, जरा सा सुख की अंचली दे दो, बचाओ ऐसी आत्माओं को यहाँ बैठे हुए इमर्ज करो, आवाज सुनने आ रहा है! बचाओ, बचाओ..., तो ऐसी आत्माओं को अपने मन्सा शक्ति द्वारा सुख शान्ति की किरणें पहुंचाओ। यह मन्सा सेवा सारे दिन में बार-बार करते रहो क्योंकि बाप के साथ आप बच्चे भी विश्व सेवक हो। सारा दिन वाणी द्वारा जैसे सेवा के निमित्त बनते हो ऐसे ही बीच-बीच में मन्सा सेवा का भी अभ्यास करते चलो। इसमें आपका अपना भी फायदा है क्योंकि अगर आपका मन सदा सेवा में बिजी रहेगा तो आपके पास जो बीच-बीच में माया फालतू संकल्प वा व्यर्थ संकल्प करती है, उससे बच जायेंगे। मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। अभी बापदादा पूछते हैं कैसे हो? तो क्या जवाब देते हो? पुरुषार्थ है लेकिन कभी कभी...! सदा का पुरुषार्थ नहीं चल रहा है। तो बापदादा अभी सभी बच्चों का यह रिकार्ड देखने चाहते हैं, यह कभी-कभी का शब्द समाप्त हो जाए। क्या यह हो सकता है, कभी-कभी समाप्त हो जाये? समय पर तैयार हो जायेंगे? हो रहे हैं, होना ही है.., इसके बजाए अभी एवररेडी बन सकते हैं? क्यों? एवररेडी रहने का अभ्यास मायाजीत, मनजीत जगतजीत यह संस्कार भी बहुत समय से बनायेंगे तब अन्त समय भी यह बहुतकाल का अभ्यास विजयी बनाकर आपको विशेष माला का मणका बनायेगा। पास विद ऑनर बनेंगे। पास नहीं, पास विद ऑनर। तो बोलो, यह हिम्मत है ना! पास विद ऑनर तो होना है ना? जो द्वापर से लेके अब तक पूज्य बनते हैं अर्थात् माला के मणके बनते हैं तो अपने को माला के मणके बनाने का शुद्ध संकल्प है ना!

बापदादा भी रोज़ अमृतवेले अपने माला के मणकों को देखते और विशेष मिलन मनाते हैं। तो आप सभी अपने को माला के मणकों में समझते हो। है तो दूसरी माला भी 16 हजार की, लेकिन फिर भी सेकण्ड माला हो गई। विशेष माला जो गायन और पूजनीय योग्य बनती है, वह पहली माला है। तो आज बापदादा उन मणकों को देख रहे थे क्योंकि ब्रह्मा बाप के साथ विशेष राज्य अधिकारी साथी वही बनते हैं। तो आज ब्रह्मा बाप अपने अब के तीव्र पुरुषार्थी और भविष्य के राज्य अधिकारी, तख्त पर तो दो ही बैठते हैं लेकिन राज्य के साथी उन्हीं की पहली माला है। तो अपने को चेक किया है। बापदादा के साथ तो चलेंगे क्योंकि अभी आप सबकी रिटर्न जरूरी है। जब जाना ही है, बाप के साथ जाना है, अकेला नहीं जाना है। तो साथ जाने वाले नजदीक के मणके कौन होंगे? जो बहुतकाल के तीव्र पुरुषार्थी होंगे। पुरुषार्थी नहीं, कब-कब वाले नहीं। बहुतकाल के बाप समान ही राज्य अधिकारी बनेंगे। तो क्या समझते हो? तीव्र पुरुषार्थ है? जो समझते हैं मैं तीव्र पुरुषार्थी की लाइन में हूँ, वह हाथ उठायेंगे। तीव्र पुरुषार्थी, बड़ा हाथ उठाओ, छोटा हाथ उठाते हैं। अच्छा, बहुत उठा रहे हैं। फिर लम्बा हाथ उठाओ, ऐसे (छोटा) नहीं। अच्छा।

बापदादा तो रोज़ बच्चों का चार्ट देखते हैं। मैजारिटी तीव्र पुरुषार्थी भी हैं लेकिन कभी-कभी का शब्द भी साथ में लगा देते हैं। लेकिन बाप क्यों कह रहे हैं? अटेन्शन प्लीज़, सूक्ष्म संकल्प में भी हलचल नहीं हो। अचल, अडोल, शुद्ध संकल्पधारी बहुत समय से बनना ही है। कई बच्चे बहुत मीठी-मीठी रूहरिहान करते हैं, कहते हैं बाबा हम तैयार हो ही जायेंगे क्योंकि समय जितना नजदीक आयेगा, हालतें हलचल में आयेंगी तो वैराग्य तो आटोमेटिकली आ जायेगा। लेकिन आपका टीचर कौन हुआ? समय या बाप? समय तो आपकी रचना है। तो बाप अभी इशारा दे रहा है कि बहुत समय का तीव्र पुरुषार्थ अन्त में पास विद ऑनर बनायेगा। पास तो सभी होंगे लेकिन पास विद ऑनर बनने वाला बहुत समय का लगातार तीव्र पुरुषार्थ करने वाला आवश्यक है इसलिए आज की तारीख नोट कर दो, अब भी कभी-कभी, समर्थिंग, हो जायेंगे, कर ही लेंगे... यह शब्द आगे भी चलते न रहें। बाप का प्यार तो सदा ही है। लास्ट दाने पर भी बाप का प्यार है। क्यों? दिल से मेरा बाबा तो कहा, आज की बड़ी-बड़ी आत्मायें मेरा बाबा नहीं कहती, लेकिन वह मेरा बाबा तो मानता है इसलिए बाप का प्यार तो उससे भी है। बच्चों से प्यार तो बाप का सदा ही है, लास्ट तक भी है, लास्ट वाले तक भी है। स्नेह ने ही आपको बाप का बनाया है। बापदादा ने यह भी कहा है कि स्नेह मैजारिटी बच्चों का है और रहेगा लेकिन सिर्फ स्नेह नहीं, शक्ति भी चाहिए। तीव्र पुरुषार्थ भी चाहिए। अच्छा।

बापदादा का तो बच्चों में फेथ है ना। तो अभी से ही पदम पदमगुणा ऐसे बच्चों को मुबारक दे रहे हैं। वाह बच्चे वाह! हिम्मत वाले हैं। आपकी हिम्मत और बाप की मदद तो होगी ही। अभी एक बात करना। जो अपने मन को बिजी रखने के लिए, जैसे पहले बाप ने कहा सेकण्ड में स्टाप, बिन्दू हूँ, बिन्दू लगाना है और सबको बिन्दू रूप में देखना है। जब देखेंगे ही बिन्दू तो और कोई भी संकल्प नहीं चलेगा। मन्सा सेवा का अटेन्शन रखना, इतनी दुःखी आत्मायें जो चिल्ला रही हैं, उन्हीं को किरणें देने की सेवा में एकस्ट्रा मन को लगाना। मन्सा सेवा बहुत श्रेष्ठ सेवा है। दुःखियों का भी फायदा और आपका अपना भी फायदा। डबल फायदा है। जैसे वाचा से सेवा करते हो और सेवा बढ़ती भी जाती है, दिल से करते हो, संख्या भी बढ़ती जाती है, सेन्टर भी बढ़ते जाते हैं, वाचा की सेवा मैजारिटी की ठीक है। सभी की नहीं, मैजारिटी की। ऐसे अभी मन से विशेष आत्माओं को अंचली देने की सेवा भी करते रहो। मन को फ्री नहीं छोड़ो। कोई न कोई सेवा में मन से शक्तियां देने की, मुख से वाणी की सेवा, कर्म में गुणों से सेवा, सम्बन्ध-सम्पर्क में खुशी देने की सेवा, इस भिन्न-भिन्न सेवाओं में मन को बिजी रखो क्योंकि सारे विश्व में रिचेस्ट आत्मायें कौन सी हैं? आप ही हो ना! कितने खजाने मिले हैं? तो हर खजाने से सेवा करो। खजाने को जितना सेवा में लगायेंगे उतने खजाने बढ़ते जायेंगे इसलिए अभी जैसे स्व की सेवा का अटेन्शन देते हो, ऐसे दुःखी आत्माओं की, अपने भक्तों की मन्सा द्वारा किरणें देने की सेवा भी अटेन्शन देकर सारे दिन में करो, बहुत चिल्लाते हैं, आपको सुनने नहीं आता। मैजारिटी हर घर में कोई न कोई दुःख का कारण है। ऐसे दुःखियों को सुख देने वाला कौन? बोलो, कौन है? आप ही तो हो। तो इस मन्सा सेवा को सारे दिन में चेक करो - कितना समय की? जैसे स्व के प्रति देते हो, वैसे मन्सा सेवा के प्रति कितना समय दिया? रहमदिल हो ना। तो दुःखियों पर रहम करो। आपका गीत भी है ना, ओ माँ बाप दुःखियों पर रहम करो। बापदादा को बहुत आवाज सुनने पड़ते हैं। आप लोगों को कम सुनाई देते हैं लेकिन अभी सुनो। कहाँ जायेंगे वह, आपके ही तो भाई बहिन हैं। तो अपना भी फायदा करो, मन को बिजी रखो और दुःखियों का दुःख हरण करो। चिल्लाते हैं, दिल चिल्लाती है। बापदादा तो सुनते हैं, तो बच्चों को याद करते हैं ओ मेरे लाडले बच्चे, सिकीलधे बच्चे अब रहमदिल रूप धारण करो। अपने ब्राह्मणों में भी एक दो के सहयोगी बनो। चाहे कैसा भी संस्कार है, लेकिन आपका काम क्या है? संस्कार से टकर खाना या उनको भी संस्कार के टकर से छुड़ाना। आपका भी टाइल है ना, दुःख हर्ता सुख कर्ता। बाप के साथी हो ना। बाप के साथी क्या संकल्प किया है? इस विश्व को दुःख अशान्ति से बदल सुख शान्ति स्थापन करनी ही है। करनी है ना! हाथ उठाओ। करनी है? कि सिर्फ देखना है, हो रहा है लेकिन अभी बदलना है। चाहे ब्राह्मण आत्मा हो, देखते नहीं रहो, यह कर रहे हैं लेकिन उन्हीं को भी वाणी और मन्सा संकल्प द्वारा परिवर्तन करो, करना नहीं चाहिए! बापदादा सुनता रहता है, बापदादा तक बात दे दी, जब बात दे दी तो खुद बाप के डायरेक्शन पर चलो, जिम्मेवार बापदादा और उनके साथी मुरब्बी बच्चे, निमित्त बने हुए बच्चे

हैं। तो सदा अपने मन को व्यर्थ संकल्पों के बजाए अब दुःखी आत्माओं को, चाहे ब्राह्मण हैं या कोई भी हैं, डिस्टर्ब आत्मा को सहयोग दो। सहयोगी बनो। अच्छा।

सेवा का टर्न , यू.पी. बनारस , पश्चिम नेपाल का है:- अच्छा है। यू.पी. में चारों ओर के भगत बहुत आते हैं। तो यू.पी. वालों को जो भी हो सके भक्तों को सन्देश जरूर दो। सन्देश देना आपका काम है, बाकी भाग्य बनाना, कितना भाग्य बनाते हैं, वह उनके हाथ में है लेकिन आपको उलहना नहीं दें कि हमको आपने हमारा बाप आया और हमारा बाप वर्सा देने आया है, यह सन्देश नहीं दिया! हम भी कुछ तो वर्सा ले लेते। वैसे करते भी हो, बाप के पास समाचार आते हैं, लेकिन फिर भी जहाँ तक हो सकता है वहाँ तक सन्देश देने का पाठ आप लोगों के लिए सहज है। और यू.पी. से ब्रह्मा बाप का, जगत अम्बा का बहुत प्यार रहा है। जितना ब्रह्मा बाबा यू.पी. में आये हैं, इतना बाम्बे में भी आये हैं लेकिन यू.पी. में भी आये हैं। तो जिस जगह ब्रह्मा बाप के पांव पड़े वह स्थान कितना भाग्यवान है। लखनऊ और कानपुर दोनों ही इस भाग्य के अधिकारी बने हैं। बाम्बे भी बना है लेकिन अभी यू.पी. का टर्न है। डायरेक्ट माँ और बाप के शिक्षा की बूंदे यू.पी. में पड़ी हैं। अभी यू.पी. को आगे क्या करना है? वाणी द्वारा मेलों में सेवा तो करते हो लेकिन अभी के समय अनुसार जो बापदादा कहता आया है पहले भी कि वारिस और नामीग्रामी माइक, नामीग्रामी का अर्थ यह है कि उनके कहने का प्रभाव सुनने वालों पर पड़ने वाला हो, ऐसे माइक तैयार करो। हाथ उठाओ टीचर्स। अच्छा।

टीचर्स भी बहुत हैं। तो इतने ही तैयार करो। हर एक सेन्टर चाहे छोटा चाहे बड़ा, सेन्टर की लिस्ट में है उनको जरूर अपना सबूत देना है क्योंकि समय पर कोई भरोसा नहीं है। कब भी क्या भी हो सकता है इसलिए बापदादा सभी जो भी ज़ोन आते हैं, नहीं भी आये हैं, सभी ज़ोन को यही कहते हैं कि अभी आगे बढ़ो। क्लासेज तो चलते रहते हैं, संख्या भी बढ़ती रहती है लेकिन अभी निमित्त बनने वाले बनाओ और बनाने के लिए बापदादा ने देखा है, हर ज़ोन में ऐसी आत्मायें हैं जो निमित्त बन सकती हैं। कर भी रहे हो लेकिन थोड़ी और स्पीड बढ़ाओ। अच्छा।

मिलन तो सबका हुआ। बहुत तैयारी करके आते हैं। हर वर्ग बहुत तैयारी करके आते हैं, बापदादा जानते हैं लेकिन टाइम को भी देखना पड़ता है। तो सभी को अभी तीव्र पुरुषार्थी बनने की एडवांस में बहुत बहुत पदम गुणा मुबारक पहले से दे रहे हैं। इस बारी जो आये हैं उसमें मुरली रेग्युलर जो सुनते हैं, कोई हैं जो मुरली नहीं सुनते, वह हाथ उठाओ। कोई नहीं। अच्छा। वह उठो जो नहीं पढ़ते या सुनते हैं। थोड़े हैं। कोई बात नहीं लेकिन अभी बाकी जो भी समय मिला है उसमें बाप के महावाक्य जरूर सुनना या पढ़ना। परमधाम से बापदादा आता है, सूक्ष्मवतन से ब्रह्मा बाबा आता है, और आके महावाक्य उच्चारण करते हैं इसलिए मुरली कभी भी एक दिन भी मिस नहीं करना। मिस करेंगे तो अपना बापदादा का दिलतख्त छूट जायेगा। इसलिए जो भी मुरली मिस करते हैं वह समझें हम तीन तख्त के मालिक नहीं, दो तख्त के मालिक भी यथाशक्ति बनेंगे इसलिए मुरली, मुरली, मुरली क्योंकि मुरली में रोज़ के डायरेक्शन होते हैं, चार ही सबजेक्ट के डायरेक्शन होते हैं, तो रोज़ के डायरेक्शन लेने हैं ना। तो जो भी मिस करता हो, कारणे-अकारणे वह अपना प्रोग्राम बनावे कि कैसे मुरली सुनें। कोई न कोई सैलवेशन बनायें। आजकल साइंस के साधन आपके लिए निकले हैं। ब्रह्मा बाप में प्रवेशता के 100 साल पहले यह साइंस निकली है, आपके काम में भी आनी है इसलिए उसको यूज़ करो, फायदा उठाओ।

अच्छा सामने बैठे हुए या कहाँ भी सुनने वाले बच्चों को बापदादा की दिल व जान सिक व प्रेम से यादप्यार और नमस्ते।

*** Om Shanti ***

ओम् शान्ति 1-11-20 मधुबन

प्राणप्यारे अव्यक्त बापदादा के अति स्नेही, सदा अपनी चमकीली फरिश्ता ड्रेस द्वारा अव्यक्ति रूहरिहान का अनुभव करने वाले, सभी स्वमानधारी निमित्त टीचर्स बहिनें तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - प्यारे बापदादा की यह मंगल-मिलन मनाने की अलौकिक सीज़न भी बहुत सुखद अनुभूतियां करा रही है। सभी बाबा के बच्चे ऑनलाइन वीडियो द्वारा अच्छी भासना व पालना का अनुभव कर रहे हैं। अभी यह दूसरा टर्न इन्दौर ज़ोन (आरती बहन) का है। थोड़े ही भाई बहिनें शान्तिवन में अपने साधनों से पहुंचे हैं। सभी एकान्त शान्त वातावरण में योग की गहन अनुभूतियां कर रहे हैं।

बापदादा सभी बच्चों को ऊंचे से ऊंचा स्वमान याद दिलाते और कहते हैं, बच्चे सदा स्वमान में रहकर सबको सम्मान देते चलो। यह स्वमान ही देह-अभिमान को मिटाने वाला है। ऐसे मीठे अव्यक्ति महावाक्य सुनते सभी में तीव्र पुरुषार्थ की लहर आ जाती है। मीठे बाबा ने तो हम बच्चों को ड्रामा का ऐसा पक्का पाठ पढ़ाया है, जो स्थिति को अचल-अडोल एकरस बना देता है।

अभी तो त्योहारों की सीज़न है। इस बार चारों ओर कई सेवाकेन्द्रों पर देवियों की बहुत सुन्दर-सुन्दर झांकियां सजाई गई और ऑनलाइन सभी भक्तों को देवियों के दर्शन करवाये गये। यह साइंस भी सेवा का बहुत अच्छा साधन बना हुआ है। कैसी भी परिस्थितियों में बाबा अपनी बेहद की सेवायें तो करा ही रहे हैं। अभी फिर धनतेरस, दीपावली, नया वर्ष और भैया दूज के यादगार पर्व समीप आ रहे हैं। सभी को इनएडवांस इन उमंग-उत्साह भरे यादगार त्योहारों की बहुत-बहुत बधाई हो। इस वर्ष सभी दीपराज बाप के साथ मंगल-मिलन मनाते विशेष योग तपस्या करना जी। बाकी ड्रामा की हर सीन देखते, वाह बाबा वाह! वाह आपकी प्रभू लीला वाह! के गीत गाते, सदा हर्षित रह उड़ती कला में उड़ते चलो। हर सीन में बहुत कुछ कल्याण समाया हुआ है। अच्छा - सभी को याद... ओम् शान्ति।

1-11-20 "अव्यक्त-महावाक्य" ओम् शान्ति वीडियो रिवाइज 15-11-05 मधुबन

“सच्चे दिल से बाप व परिवार के स्नेही बन मेहनत मुक्त बनने का वायदा करो और फायदा लो”

आज बापदादा अपने चारों ओर के श्रेष्ठ स्वराज्य अधिकारी, स्वमानधारी बच्चों को देख रहे हैं। बाप ने बच्चों को अपने से भी ऊंचा स्वमान दिया है। हर एक बच्चे को पांव में गिरने से छुड़ाए सिर का ताज बना दिया। स्वयं को सदा ही प्यारे बच्चों का सेवाधारी कहलाया। इतनी बड़ी अर्थारिटी का स्वमान बच्चों को दिया। तो हर एक अपने को इतना स्वमानधारी समझते हैं? स्वमानधारी का विशेष लक्षण क्या होता है? जितना जो स्वमानधारी होगा उतना ही सर्व को सम्मान देने वाला होगा। जितना स्वमानधारी उतना ही निर्मान, सर्व का स्नेही होगा। स्वमानधारी की निशानी है - बाप का प्यारा साथ में सर्व का प्यारा। हद का प्यारा नहीं, बेहद का प्यारा। जैसे बाप सर्व के प्यारे हैं, चाहे एक मास का बच्चा है, चाहे आदि रत्न भी है लेकिन हर एक मानता है मैं बाबा का, बाबा मेरा। यह निशानी है सर्व के प्यारेपन की, श्रेष्ठ स्वमान की, क्योंकि ऐसे बच्चे फालो फादर करने वाले हैं। देखो, बाप ने हर वर्ग के बच्चों को, छोटे बच्चों से लेके, बुजुर्ग समान बच्चों को स्वमान दिया। यूथ को विनाशकारी से विश्व कल्याणकारी का स्वमान दिया। महान बनाया। प्रवृत्ति वालों को महात्मायें, बड़े-बड़े जगतगुरु उनसे भी ऊंचा, प्रवृत्ति में रहते, पर-वृत्ति वाले महात्माओं का भी सिर झुकाने वाला बनाया। कन्याओं को शिव शक्ति स्वरूप का स्वमान याद दिलाया, बनाया। बुजुर्ग बच्चों को ब्रह्मा बाप की हमजिन्स अनुभवी का स्वमान दिया। ऐसे ही स्वमानधारी बच्चे हर आत्मा को ऐसे स्वमान से देखेंगे। सिर्फ देखेंगे नहीं लेकिन सम्बन्ध-सम्पर्क में आयेंगे, क्योंकि स्वमान देह-अभिमान को मिटाने वाला है। जहाँ स्वमान होगा वहाँ देह का अभिमान नहीं होगा। बहुत सहज साधन है, देह-अभिमान को मिटाने का - सदा स्वमान में रहना। सदा हर एक को स्वमान से देखना। चाहे प्यादा है, 16 हजार की माला में लास्ट नम्बर भी है लेकिन लास्ट नम्बर में भी ड्रामानुसार बाप द्वारा कोई न कोई विशेषता है। स्वमानधारी विशेषता को देख स्वमान देते हैं। उनकी दृष्टि में, वृत्ति में, कृत्ति में, हर एक की विशेषता समाई हुई होती है। जो भी बाप का बना वह विशेष आत्मा है, चाहे नम्बरवार है लेकिन दुनिया के कोटों में कोई है। ऐसे अपने को सभी विशेष आत्मा समझते हो? स्वमान में स्थित रहना है। देह-अभिमान में नहीं, स्वमान।

बाप को हर एक बच्चे से प्यार क्यों है? क्योंकि बाप जानते हैं मेरे को पहचान, मेरे बने हैं ना। चाहे आज इस मेले में भी पहली बार आये हैं, फिर भी बाबा कहा, तो बाप के प्यार के पात्र हैं। बापदादा को चारों ओर के सर्व बच्चे सर्व से प्यारे हैं। ऐसे ही फालो फादर। कोई भी अप्रिय नहीं, सर्व प्रिय हैं। देखो, जो भी बच्चे मेरा बाबा कहते हैं, तो मेरापन किसने लाया? स्नेह ने। जो भी यहाँ बैठे हैं, वह समझते हो कि स्नेह ने बाप का बना लिया। बाप का स्नेह चुम्बक है, स्नेह के चुम्बक से बाप के बन गये। दिल का स्नेह, कहने मात्र स्नेह नहीं। दिल का स्नेह इस ब्राह्मण जीवन का फाउण्डेशन है। मिलने क्यों आते हो? स्नेह ले आया है ना! जो भी सभी बैठे हैं, आये हैं, क्यों आये हो? स्नेह ने खींचा ना। स्नेह भी कितना है? 100 परसेन्ट है वा कम है? जो समझते हैं स्नेह में हम 100 परसेन्ट हैं, वह हाथ उठाओ। स्नेह में 100 परसेन्ट। थोड़ा भी कम नहीं? अच्छा। तो इतना ही स्नेह आपस में ब्राह्मणों में है? इसमें हाथ उठावयें? इसमें परसेन्टेज है। जैसे बाप का सभी से स्नेह है, ऐसे ही बच्चों का भी सर्व से स्नेह, सर्व के स्नेही। दूसरे की कमजोरी को देखो नहीं। अगर कोई संस्कार के वशीभूत है, तो फालो किसको करना है? वशीभूत वाले को? आप वशीकरण मन्त्र देने वाले हो, वशीभूत से छुड़ाने वाला मन्त्र, छुड़ाने वाले हो ना! या देखने वाले हो? कि दिखाई दे देता है? अगर कोई खराब चीज़ दिखाई भी देती है, तो क्या करते हैं? देखते रहते हैं या किनारा कर लेते हैं? क्योंकि बापदादा ने देखा कि जो दिल के स्नेही हैं, बाप के दिल के स्नेही, सर्व के स्नेही अवश्य होंगे। दिल का स्नेह बहुत सहज विधि है सम्पन्न और सम्पूर्ण बनने की। चाहे कोई कितना भी ज्ञानी हो, लेकिन अगर दिल का स्नेह नहीं है तो ब्राह्मण जीवन में रमणीक जीवन नहीं होगी। रूखी जीवन होगी क्योंकि ज्ञान में, स्नेह बिना अगर ज्ञान है तो ज्ञान में प्रश्न उठते हैं क्यों, क्या! लेकिन स्नेह ज्ञान सहित है तो स्नेही सदा स्नेह में लवलीन रहते हैं। स्नेही को याद करने की मेहनत करनी नहीं पड़ती। सिर्फ ज्ञानी है, स्नेह नहीं है तो मेहनत करनी पड़ती है। वह मेहनत का फल खाता, वह मुहब्बत का फल खाता। ज्ञान है बीज लेकिन पानी है स्नेह। अगर बीज को स्नेह का पानी नहीं मिलता तो फल नहीं निकलता है।

तो आज बापदादा सर्व बच्चों के दिल का स्नेह चेक कर रहे थे। चाहे बाप से, चाहे सर्व से। तो आप सभी अपने को क्या समझते हैं? स्नेही हैं? हैं स्नेही? जो समझते हैं दिल के स्नेही हैं, वह हाथ उठाओ। (मैजारिटी सभी ने हाथ उठाया) अच्छा-सर्व के स्नेही। बाप के तो दिल के स्नेही हैं, सर्व के स्नेही हो? सर्व के? हर एक समझता है - यह मेरा भाई बहन है? हर एक समझता है यह मेरा है? समझता है? कि कोई-कोई समझता है? जैसे बाप के स्नेह में सभी हाथ उठाते हैं, हाँ बाप के स्नेही हैं, ऐसे आप हर एक के लिए हाथ उठावेंगे, कि हाँ यह सर्व के स्नेही हैं? यह सर्टीफिकेट मिलेगा? क्योंकि बापदादा ने पहले भी कहा था कि सिर्फ बाप से सर्टीफिकेट नहीं लेना है, ब्राह्मण परिवार से भी लेना है क्योंकि इस समय बाप धर्म और राज्य दोनों साथ-साथ स्थापन कर रहे हैं। राज्य में सिर्फ बाप नहीं होंगे, परिवार भी होगा। बाप के भी प्यारे, परिवार के भी प्यारे।

ज्ञानी बने हो लेकिन साथ में स्नेही बनना भी जरूरी है। स्वमान में रहना और सम्मान देना, यह दोनों जरूरी हैं। बाप ने ब्राह्मण जन्म लेते ही हर एक बच्चे को सम्मान दिया, तब तो ऊंचे बनें। इस एक जन्म में सम्मान देना है और सारा कल्प उसकी प्रालब्ध सम्मान प्राप्त होता है। आधाकल्प राज्य अधिकारी का सम्मान मिलता है, आधाकल्प भक्ति में भक्तों द्वारा सम्मान मिलता है। लेकिन इसका, सारे कल्प का आधार है इस एक जन्म में सम्मान देना, सम्मान लेना।

अच्छा-डबल फारेनर्स भी आये हुए हैं। होशियार हैं डबल फारेनर्स। कोई भी टर्न छोड़ते नहीं हैं। अच्छा है। चांस लेने वाले को चांसलर कहते हैं। तो चांस लेने में होशियार हैं। डबल फारेनर्स को विशेष बापदादा एक बात की विशेष मुबारक देते हैं। कौन सी? जो कहाँ-कहाँ बिखर गये, देश भी बदल गया, धर्म भी कईयों का बदल गया, कल्चर भी बदल गया लेकिन बदलते हुए पहचानने की आंख बहुत तेज निकली, जो भिन्न होते भी पहचानने में होशियार निकले। पहचान लिया, बाप को अपना बना दिया। परिवार को अपना बना लिया। ब्राह्मण कल्चर को अपना बना लिया। तो होशियार निकले ना! और बापदादा सदा यह विशेषता देखते हैं कि बाप से भी प्यार है लेकिन सेवा से भी बहुत प्यार है। सेवा से प्यार होने के कारण बहुत बिजी होते हो ना! डबल सेवा करते हो। डबल भी नहीं, तीन सेवा करते हो, एक लौकिक जॉब, एक ज्ञान की सेवा और साथ में बापदादा ने मैजॉरिटी को देखा है कि सेन्टर में भी कर्मणा सेवा में सहयोगी बनते हैं। तो बापदादा जब देखते हैं तीनों तरफ की सेवा में बच्चे बिजी रहते हैं, तो खुश होते हैं और दिल ही दिल में मुबारक देते रहते हैं। अभी-अभी भी बापदादा देख रहे हैं चारों ओर विदेश में कोई रात में, कोई दिन में मिलन मना रहे हैं।

स्नेह माना लवलीन। याद करना नहीं पड़ता, याद भुलाना मुश्किल होता। अगर मेहनत करनी पड़ती है तो दिल के स्नेह को चेक करो - कहाँ लीकेज तो नहीं है? चाहे लगाव कोई व्यक्ति से, चाहे व्यक्ति की विशेषता से, चाहे कोई साधन से, सैलवेशन से, एकस्ट्रा सैलवेशन, कायदे प्रमाण सैलवेशन ठीक है, लेकिन एकस्ट्रा सैलवेशन से भी प्यार होता है, लगाव होता है। वह सैलवेशन याद आती रहेगी। उसकी निशानी है - कहाँ भी लीकेज होगी तो सदा जीवन में किसी भी कारण से सन्तुष्टता की अनुभूति नहीं होगी। कोई न कोई कारण असन्तुष्टता का अनुभव करायेंगे। और सन्तुष्टता जहाँ होगी उसकी निशानी सदा प्रसन्नता होगी। सदा रूहानी गुलाब के मुआफिक मुस्कराता रहेगा, खिला हुआ रहेगा। मूड आफ नहीं होगी, सदा डबल लाइट।

तो समझा मेहनत से अभी बच जाओ। बापदादा को बच्चों की मेहनत नहीं अच्छी लगती। आधाकल्प मेहनत की है, अभी मौज करो। मुहब्बत में लवलीन हो, अनुभव के मोती ज्ञान सागर के तले में अनुभव करो। सिर्फ डुबकी लगाकर सागर से निकल नहीं आओ, लवलीन रहो।

सभी ने वायदा तो किया है ना! कि साथ रहेंगे, साथ चलेंगे? वायदा किया है? साथ चलेंगे या पीछे-पीछे आयेंगे? जो साथ चलने के लिए तैयार हैं वह हाथ उठाओ। तैयार हैं, सोचकर उठाओ, तैयार हैं अर्थात् बाप समान हैं। कौन साथ चलेगा? समान साथ चलेगा ना! तो चलेंगे? एवररेडी? पहली लाइन एवररेडी? कल चलने के लिए आर्डर करें, चलेंगे? अच्छा प्रवृत्ति वाले चलेंगे? बच्चे नहीं याद आयेंगे? मातायें चलेंगी? मातायें तैयार हैं? कोई भी चीज़ याद नहीं आयेगी? टीचर्स को सेन्टर याद आयेगा, जिज्ञासु याद आयेंगे? नहीं याद आयेंगे? अच्छा। सभी निर्मोही हो गये हो? फिर तो बहुत अच्छी बात है। फिर तो मेहनत नहीं करनी पड़ेगी ना।

आज बापदादा सभी को चाहे सम्मुख बैठे हैं, चाहे दूर बैठे भी बाप के दिल में बैठे हैं, सभी को आज का दिन मेहनत मुक्त बनाने चाहते हैं। बनेंगे? ताली तो बजा दी, बनेंगे? कल से कोई दादियों के पास नहीं आयेगा। मेहनत नहीं करायेंगे? मौज से मिलेंगे। ज़ोन हेड के पास नहीं जायेंगे, कम्पलेन नहीं करेंगे, कम्पलीट। ठीक है? अभी हाथ उठाओ। देखो सोच के हाथ उठाना, ऐसे नहीं उठा लेना। कोई कम्पलेन नहीं, कोई मेरा-मेरा नहीं, कोई मेरा नहीं। मैं भी नहीं, मेरा भी नहीं, खत्म। देखो वायदा तो किया है, अच्छा है मुबारक हो लेकिन क्या है, वायदे का फायदा नहीं उठाते हो। वायदा बहुत जल्दी कर लेते हो लेकिन फायदा उठाने के लिए रोज़ एक तो रियलाइजेशन दूसरा रिवाइज करो, वायदे को रोज़ रिवाइज करो क्या वायदा किया? अमृतवेले मिलने के बाद वायदा और फायदा दोनों के बैलेन्स का चार्ट बनाओ। वायदा क्या किया? और फायदा क्या उठा रहे हैं? रियलाइज़ करो, रिवाइज करो, बैलेन्स हो जायेगा तो ठीक हो जायेगा। बापदादा सभी बच्चों को देख गीत गाते हैं - वाह! बच्चे वाह! अच्छा - अभी क्या करना है?

सेवा का टर्न इन्दौर ज़ोन का है:- अच्छा है हर ज़ोन को चांस मिलता है, विशेष चांस मिलने से वायुमण्डल का फायदा, यज्ञ सेवा के पुण्य का खाता और सेवा से सर्व ब्राह्मणों से सम्बन्ध-सम्पर्क का ईश्वरीय प्यार का नाता बढ़ता है। तो बहुत अच्छा कर रहे हैं और कल से तो जाना भी शुरू हो जायेगा। तो बहुत अच्छा किया, सेवा का बल सदा के लिए भरके जाना। अच्छा है। सेवा का चांस तो लिया अब जो वायदा करके जा रहे हो, उसका फायदा विशेष सेवा के रिटर्न में देते रहना। वायदे का फायदा उठाना। सिर्फ वायदा नहीं, फायदा। अच्छा।

सभी ने मेहनत मुक्त का वायदा तो किया है ना! (सभी ने हाथ उठाया) अच्छा - इनका फोटो निकालो। अभी एक मिनट के लिए अपने दिल से इस वायदे को दृढ़ता का अण्डरलाइन लगाओ। अपने मन में पक्का करो। (ड्रिल) अच्छा।

सर्व चारों ओर के स्वमानधारी बच्चों को, सदा बाप के दिल के स्नेही, सर्व के स्नेही श्रेष्ठ आत्माओं को, सदा मेहनत मुक्त, जीवनमुक्त अनुभव करने वाले तीव्र पुरुषार्थी बच्चों को, सदा वायदा और वायदे का फायदा लेने वाले, बैलेन्स रखने वाले ब्लिसफुल बच्चों को, सदा मौज में रहने वाले, मौज में औरों को भी रहाने वाले, ऐसे संगमयुगी श्रेष्ठ भाग्य के अधिकारी बच्चों को बापदादा का यादप्यार और दिलाराम के दिल की दुआयें स्वीकार हों। यादप्यार और नमस्ते।

*** Om Shanti ***

24-11-20 ओम् शान्ति मधुबन

परमप्यारे अव्यक्त मूर्त मात-पिता बापदादा के अति लाडले, सदा दिल में दिलाराम बाप को समाने वाली लवलीन आत्मायें निमित्त टीचर्स बहिनें तथा हर कदम में पदमों की कमाई जमा करने वाले देश-विदेश के सभी पदमापदम भाग्यवान ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - वर्तमान समय की हलचल के वातावरण में प्यारे अव्यक्त बापदादा बच्चों को सर्व प्राप्तिओं से सम्पन्न बना रहे हैं। आज वीडियो द्वारा जो अव्यक्त महावाक्य हम सभी ने सुने हैं, प्यारे बापदादा ने अपने बच्चों के भाग्य की दिल से महिमा करते हुए सदा 'टेन्शन फ्री' रह एकजैम्पुल बनने का विशेष इशारा दिया है। समय प्रमाण बापदादा चाहते हैं हर एक मेरा आधार मूर्त बच्चा अपनी मन्सा शक्ति द्वारा सर्व दुःखी, अशान्त आत्माओं को खुशी का वरदान दे।

आज बापदादा के इस टर्न में राजस्थान के भाई बहिनें पहुंचे हुए हैं। सभी मधुबन बेहद घर के शान्त, एकान्त वातावरण में विशेष योग तपस्या कर रहे हैं। यह भी ड्रामा की सीन है जो बाबा के बच्चे चाहते हुए भी अपने मधुबन घर में नहीं पहुंच पा रहे हैं। बाकी आप सब अपने-अपने स्थानों पर रहते हुए विशेष योग तपस्या करते, मन्सा सकाश देने की बेहद सेवा तो कर ही रहे हो। दूर बैठे भी यह अव्यक्त पालना सबको शक्तिशाली बना रही है। अच्छा - आप सबका स्वास्थ्य ठीक होगा। सभी को याद... ओम् शान्ति।

--

24-11-20 ओम् शान्ति "अव्यक्त महावाक्य - रिवाइज वीडियो" 31-03-11 मधुबन

" दृढ़ संकल्प द्वारा ' टेन्शन फ्री ' का एकजैम्पुल बन सबके आधारमूर्त बनो , मन्सा शक्ति द्वारा दुःखी आत्माओं को खुशी का वरदान दो "

आज ग्रेट ग्रेट ग्रेण्ड फादर अपने कोटों में कोई, कोई में भी कोई बच्चों के भाग्य की रेखायें देख रहे हैं। हर एक के मस्तक से चमकती हुई, दिव्य चमकते हुए सितारे की चमक देख रहे हैं। नयनों से स्नेह की रेखा देख रहे हैं। मुख से ज्ञान की रेखा देख रहे हैं। दिल में दिलाराम के लवलीन की रेखा देख रहे हैं। हाथों में ज्ञान के खजानों की रेखा देख रहे हैं। पांव में हर कदम में पदम की रेखा देख रहे हैं। हर एक बच्चा इन रेखाओं में नम्बरवार सम्पन्न है। ऐसा भाग्य आपके बिना और किसका भी नहीं है। आपका इतना श्रेष्ठ भाग्य हर बच्चे से चमकता हुआ दिखाई दे रहा है। और यह भाग्य अविनाशी बन जाता है क्यों? क्योंकि देने वाला अविनाशी बाप है। इस संगमयुग पर ही ऐसा श्रेष्ठ भाग्य प्राप्त होता है, जो भविष्य में भी चलता रहता है। यह संगमयुग सर्व प्राप्तिओं का युग है, जो जितना अपना भाग्य जमा करता है उतना अनेक जन्म भाग्य का फल प्राप्त होता रहता है। इस संगमयुग की महिमा आप बच्चे ही जानते हैं। संगमयुग की प्राप्तियां सारे कल्प में श्रेष्ठ से श्रेष्ठ हैं।

बापदादा देख रहे हैं हर एक बच्चा इस संगमयुग की प्राप्तिओं से कितना सम्पन्न है। आप सभी भी सर्व प्राप्तिओं के अनुभव में सदा रहते हो या कभी कभी? अविनाशी बाप है तो प्राप्तियां भी अविनाशी हैं, बापदादा हर बच्चे को किस रूप में देखने चाहते हैं, जानते हो ना! बापदादा यही चाहते हैं कि हर बच्चा स्वराज्य अधिकारी राजा बनें। स्व के ऊपर अर्थात् कर्मेन्द्रियों के ऊपर, मन-बुद्धि-संस्कार के ऊपर राजा बन राज्य करे। भविष्य में तो राज्य अधिकारी बनेंगे लेकिन अभी स्वराज्य अधिकारी राजा बनें। कोई भी कर्मेन्द्रियां अपने कन्ट्रोल में हों क्योंकि बाप द्वारा सर्व शक्तियों का खजाना प्राप्त हुआ है। तो बापदादा हर एक बच्चे को स्वराज्य अधिकारी राजा रूप में देखने चाहते हैं। तो आप सभी स्वराज्य अधिकारी बने हो? मन बुद्धि के ऊपर रूलिंग पावर, कन्ट्रोलिंग पावर आ गई है? अधीनता तो नहीं है? अधिकारी हैं। जब बापदादा को साथ में रखते हैं, अकेले नहीं बनते हैं, बाप को सदा साथी बनाके रखते हैं तो यह मन बुद्धि संस्कार किसी की भी ताकत नहीं जो कन्ट्रोल में नहीं रहे। इसीलिए बापदादा शक्तियों को सदा कहते हैं कि अपने कौन से स्वरूप को याद रखो जो कभी भी बाप का साथ भूल नहीं जाए? वह है हम शिवशक्ति हैं। शिव और शक्ति साथ है। यह स्मृति मायाजीत, प्रकृतिजीत स्वतः बना देती है क्योंकि बापदादा ने सुना दिया है कि वर्तमान समय प्रकृति अपना कार्य करती रहती है क्योंकि प्रकृति को भी मनुष्य आत्मायें तंग करते हैं तो प्रकृति भी तंग करती

है। आजकल देखते हो कि प्रकृति कहाँ न कहाँ अपना कार्य करती रहती है लेकिन आप प्रकृतिजीत बन प्रकृति को भी सतोप्रधान बना रहे हो। लोग तो प्रकृति की हलचल देख डरते हैं कि कल क्या होगा! लेकिन आप जानते हो कि अच्छे ते अच्छा होगा क्योंकि अभी यह संगमयुग सृष्टि चक्र का अमृतवेला चल रहा है। तो अमृतवेले के बाद क्या होता है? सवेरा। अंधकार खत्म हो रोशनी आ जाती, तो आपको खुशी है कि अभी हमारा राज्य सुखमय संसार, जहाँ प्रकृति भी सुखमई है, वह राज्य आया कि आया। खुशी है ना! जिस राज्य में दुःख अशान्ति का नामनिशान नहीं होगा क्योंकि अभी संगम पर आप प्रकृतिजीत बन रहे हो। तो सभी को खुशी है ना किसकी? बोलो, हमारा राज्य आने वाला है। यह खुशी है? जो इस खुशी में रहते हैं वह हाथ उठाओ। बहुत अच्छा। आप तो खुश रहते हो इसकी मुबारक हो लेकिन ऐसी खुशी, अपनी खुशी आपके भाई बहिन जो दुःखी अशान्त हैं उसको अपने बाप द्वारा ली हुई किरणों द्वारा खुशी की किरणें पहुंचाते हो? बापदादा ने कहा था कि ऐसी मन्सा सेवा करने का टाइम हर एक को अपनी दिनचर्या में फिक्स करना है। जैसे और कार्य के लिए टाइम फिक्स किया हुआ है ऐसे अपनी खुशी की खुराक द्वारा दुःखी आत्माओं को मन्सा शक्ति द्वारा थोड़ा बहुत वरदान देकरके उन्हीं को भी खुश करो, तो जिन्होंने अपना टाइम मन्सा सेवा के लिए फिक्स किया है, वह हाथ उठाओ। अच्छा, जिन्होंने भी नहीं किया है, हैं थोड़े लेकिन हर एक को इसका टाइम फिक्स करना है क्योंकि अपने ही भाई बहन हैं ना। तो तरस पड़ता है ना! कि तरस नहीं पड़ता है? पड़ता है ना! और बापदादा सभी को देखने चाहते हैं कि संगम की जो विशेष दो बातें हैं जो अमूल्य हैं एक संकल्प शक्ति और दूसरा संगम का समय क्योंकि संगम के समय में एक जन्म में अनेक जन्म की प्रालब्ध बनानी है। तो आजकल बापदादा ने देखा है कि बहुतों के अशुद्ध संकल्प कम चलते हैं लेकिन व्यर्थ संकल्प आते जाते हैं। तो इस एक जन्म के मूल्य के अनुसार व्यर्थ संकल्प अभी फिनिश होने चाहिए क्योंकि संगमयुग के महत्व के हिसाब से एक सेकण्ड कई कीमती समय का अधिकार दिलाता है इसलिए हर एक इन दोनों बातों के, समय और संकल्प दोनों के मूल्य को जान समय को और संकल्प को सफल करो। जैसे स्थूल खजाने को सफल करते हो, जानते हो कि एक जन्म में सफल करने से अनेक जन्म उनकी प्राप्ति जमा होती है। ऐसे इन दोनों बातों को अटेन्शन दे सफल कर सफलता मूर्त बनो।

बापदादा हर बच्चे को आज विशेष एक वरदान दे रहे हैं, हर एक बच्चा आज से अपने को टेन्शन फ्री बना सकते हो? दृढ़ संकल्प करो कि आज से अटेन्शन, नो टेन्शन। बापदादा बच्चों को जब टेन्शन में देखते हैं ना तो सोचते हैं अभी-अभी इस बच्चे का फोटो निकालके भेजें। तो खुद ही समझ जायेगा कि मैं क्या बन गया! बापदादा मनजीत, जगतजीत बनाने चाहते हैं। टेन्शन किसमें, मन में ही तो आता है ना! तो आप तो राजा हो ना, स्वराज्य अधिकारी हो ना! क्या मन आपका है या मन मालिक है? आप क्या कहते हो? सारा दिन मेरा मन कहते हो ना! मालिक तो नहीं है ना! कौन हिम्मत रखता है, बाप का वरदान सहज मिलेगा लेकिन सिर्फ थोड़ा अटेन्शन रखना पड़ेगा। बाप के वरदान की मदद का अनुभव करके देखना। सभी का चेहरा जब भी देखो तो कैसा दिखाई दे? टेन्शन फ्री, कमल पुष्प समान वा खिला हुआ गुलाब के पुष्प मिसल।

बापदादा ने देखा कि जो पहले काम दिया था, परसेन्टेज लिखने का। सभी स्थानों से कुछ कुछ समाचार आया है। यहाँ भी रिजल्ट निकाली है। अटेन्शन दिया उसकी मुबारक बापदादा दे रहे हैं लेकिन अभी बापदादा यही चाहते हैं कि समय प्रमाण अभी वाणी द्वारा सुनने का समय भी कम मिलेगा इसलिए मन्सा द्वारा और अपने चेहरे और चलन द्वारा सर्विस करो। अभी का अभ्यास आगे आने वाले समय में कार्य में आयेगा। तो आज से टेन्शन फ्री का संकल्प कर सकते हो? कर सकते हो, हाथ उठाओ। टेन्शन फ्री। अच्छा, सभी का फोटो निकालो। बहुत अच्छा। तो जो आत्मायें सरकमस्टांश के प्रमाण बहुत टेन्शन में रहती हैं, आजकल दुनिया में टेन्शन बहुत बढ़ रहा है, तो आपका टेन्शन फ्री का अनुभव और टेन्शन फ्री की चलन और चेहरा उन्हीं के आगे एक आधारमूर्त बनेगा। अगर आज दुनिया में चक्र लगाओ या समाचार सुनो तो क्या दिखाई देता है? टैप्री अपने को खुश करने के साधन बनाते रहते हैं। तो टेन्शन वालों को टेन्शन फ्री का एकजैम्पुल दिखाओ तो उनको भी सहारा दिखाई दे। तो संकल्प किया, अपने मन में संकल्प किया कि टेन्शन फ्री रहेंगे? किया? दृढ़ किया या साधारण किया? जहाँ दृढ़ता होती है वहाँ सफलता हुई पड़ी है। करेंगे नहीं, करना ही है। पसन्द है? इसमें हाथ उठाओ।

बापदादा ने एक बात देखी है कि हाथ उठाके बहुत खुश कर देते हैं। हाथ उठाके खुश तो किया लेकिन अभी क्या करेंगे? दृढ़ संकल्प, साधारण संकल्प उसमें रात दिन का फर्क है। करेंगे और करना ही है। तो कितना हिम्मत और उमंग है कि ब्राह्मण परिवार में टेन्शन का नामनिशान नहीं हो। हो सकता है? हर एक अपने से पूछे, हो सकता है? यह खुशखबरी बापदादा सुनने चाहते हैं।

बापदादा ने देखा कि चाहना सब रखते हैं, करेंगे लेकिन जब समस्या आती है तो समस्या अपना बना देती है। फिर बहुत मीठी बातें करते हैं, यह हो जाता है ना, यह तो होगा ना! यह तो चलता है ना! बापदादा को बहुत मीठी मीठी बातें सुनाते हैं। सबका कारण राजा बन जाओ, बस। स्वराज्य अधिकारी बन जाओ। तो आज बापदादा सभी बच्चों को चाहे सामने बैठे हैं, चाहे दूर बैठे दिल में बैठे हैं। आप तो आंखों के सामने हैं, लेकिन बापदादा जो दूर बैठे हैं उनको दिल में देख रहे हैं।

सेवा का टर्न राजस्थान ज़ोन का है:- राजस्थान की धरनी ब्रह्मा बाप को बहुत पसन्द आई, जो राजस्थान में ही मधुबन बनाया है। राजस्थान की सेवा बापदादा ने देखा कि हर स्थान में अभी वृद्धि अच्छी हो रही है। नई नई आत्माओं को बाप का सन्देश देने के प्रोग्रामस भी अच्छे हो रहे हैं। अभी बापदादा यही देखने चाहते हैं कि स्व और सेवा दोनों का बैलेन्स करने वाले, हर एक सेन्टर से ज्यादा में ज्यादा आगे आने चाहिए। सिर्फ सेवा नहीं, स्व और सेवा क्योंकि अब स्व परिवर्तन का समय इतना ज्यादा नहीं है, इसीलिए पहले स्व साथ में सेवा। हर एक सेवाकेन्द्र निर्विघ्न, सब साथी निर्विघ्न, सिर्फ टीचर नहीं लेकिन सारा क्लास निर्विघ्न और स्व परिवर्तन का अटेंशन रखने वाले हो। तो यह वृद्धि करो। एक एक की बातों को सुनो और उनको उमंग-उत्साह के पंख लगाओ, जो बापदादा को निर्विघ्न सेन्टर का समाचार दे सको। बाकी बापदादा ने देखा राजस्थान भी आगे बढ़ रहा है, बढ़ता रहेगा। बापदादा हर एक बच्चे को आगे बढ़ने की मुबारक दे रहे हैं। अच्छा।

डबल विदेशी भाई बहिनें:- फॉरेनर्स को टाइल दिया है डबल फॉरेनर्स। फॉरेनर्स नहीं डबल फॉरेनर्स। तो प्रैक्टिकल में देखा जाता है कि जैसे टाइल दिया है ना डबल फॉरेनर्स, ऐसे ही मैजारिटी को डबल नशा रहता है, क्या डबल नशा रहता है? कि हम डबल उमंग उत्साह में रहने वाले हैं और बापदादा देखते हैं उमंग-उत्साह अच्छा रहता है। भारतवासियों को भी उमंग आता है और पुरुषार्थ में भी देखा गया तो अभी फॉरेन वालों के पास पेपर्स तो आते हैं लेकिन एक विशेषता है कि वह सच्ची दिल से बोल देते हैं। अन्दर नहीं रखते हैं और उसका समाधान सच्ची दिल से करते रहते हैं। यह बापदादा को खुशी है कि साफ दिल तो हज़ूर हाज़िर हो जाता है। अच्छी रिजल्ट देख बापदादा मुबारक भी दे रहे हैं और वरदान भी दे रहे हैं कि सदा आगे बढ़ते रहेंगे। टीचर्स भी अच्छी मेहनत कर रही हैं। बापदादा को खुशी होती है कि सबसे ज्यादा मधुबन का फायदा फारेन वाले उठा रहे हैं। तो बापदादा देखते हैं कि फॉरेन के छोटे छोटे स्थानों पर भी आवाज बुलन्द करने की सेवा करना आरम्भ कर दिया है। तो सेवा की मुबारक हो, स्व परिवर्तन की मुबारक हो। उड़ते चलो और उड़ते चलो। अच्छा।

चारों ओर के देश और विदेश के बच्चों को बापदादा पुरुषार्थ में सहज आगे बढ़ने और बढ़ाने की खास मुबारक दे रहे हैं। अभी जो समय आने वाला है, उसके लिए बापदादा ने डायरेक्शन दे दिये हैं कि तीव्र पुरुषार्थी बन सेकण्ड में बिन्दु लगाने, फुलस्टॉप लगाने का अभ्यास अति आवश्यक है। इस बात को हल्का नहीं करो। अचानक कुछ न कुछ होना ही है इसलिए बाप की शुभ आशा है कि हर एक बच्चा साथ है, साथ चलेंगे, साथ राज्य करेंगे ब्रह्मा बाप के साथ, शिवबाबा साक्षी हो जायेगा। साथी बनने वाले हो तो बापदादा समान बनना ही है। अच्छा।

*** Om Shanti ***

प्राणप्यारे अव्यक्त बापदादा के अति स्नेही, सदा सर्व शक्तियों के खजाने से सम्पन्न, तीव्र पुरुषार्थ की रेस करने वाले, ब्रह्मा बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बन विजयी माला में पिरोने वाली निमित्त टीचर्स बहिनें तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - आप सभी दूर बैठे भी प्यारे अव्यक्त बापदादा की दिव्य पालना का अनुभव कर रहे होंगे! वर्तमान समय चारों ओर बाबा के बच्चों में पुरुषार्थ की बहुत अच्छी लहर चल रही है। बापदादा बच्चों के तीव्र पुरुषार्थ की रेस देखकर खुश होते, सदा सफलतामूर्त बन का वरदान देते हैं। बाबा कहे बच्चे, अब अपनी स्व की श्रेष्ठ स्थिति द्वारा हर परिस्थिति को पार करते हुए विजयी माला के मणके बन जाओ। कोई भी सीन देखते सेकेण्ड में फुलस्टाप लगाने का अभ्यास करो। व्यर्थ का जरा भी नाम निशान न रहे। बोलो, यही अटेन्शन रख सदा सम्पन्नता की समीपता का अनुभव कर रहे हो ना!

देखो, आज गुजरात के भाई बहिनें अपने प्यारे मधुबन/शान्तिवन घर में पहुंचे हुए हैं। सभी में बहुत अच्छा उमंग-उत्साह है, सबको ज्ञान योग की अच्छी पालना मिल रही है। साथ-साथ अव्यक्त बापदादा भी बच्चों का श्रृंगार सर्व खजानों से कर रहे हैं। आप सभी वीडियो द्वारा भी उसी अव्यक्ति पालना और भासना का अनुभव करते होंगे। दुनिया की हालातें कैसी भी हों, बाबा के बच्चे तो सदा सर्वशक्तिवान बाप के साथी बन बेगमपुर की बादशाही का अनुभव करते हैं। अच्छा - सभी को याद ... ओम् शान्ति।

5-12-20

ओम् शान्ति

“अव्यक्त बापदादा”

रिवाइज-वीडियो 15-11-11

मधुबन

“अभी बातों को न देख तीव्र पुरुषार्थ कर ब्रह्मा बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनो, निर्विघ्न और एवररेडी रह **108** की माला तैयार करो”

आज सर्वशक्तिवान बाप अपने मास्टर सर्वशक्तिवान बच्चों को सर्व शक्तियों का खजाना देने आये हैं। सर्वशक्तियों का खजाना कितना सहज प्राप्त होता है। एक सेकण्ड में जाना मेरा बाबा, बाबा ने कहा मेरे बच्चे, इतने में ही खजानों के मालिक बन गये। तो हर एक बच्चे के पास सर्व खजाने सदा साथ हैं ना! नशा है जो बाप का खजाना वह मेरा खजाना। अभी चेक करो बाप ने तो हर बच्चे को सर्व खजाने दिये हैं, एक भी कम नहीं लेकिन वह सर्व खजाने हर एक के पास सदा साथ हैं वा कोई कोई खजाना है और कोई खजाना कम है? बापदादा ने तो दिये लेकिन हर एक के पास सर्व खजाने सदा ही हैं और सर्व खजाने समय पर कार्य में लाते रहते हो? मालिक होके आर्डर करो तो समय पर खजाना अनुभव में आता है? बापदादा ने चारों ओर के बच्चों के सेवा का उमंग देखा भी, सुना भी। चैलेन्ज कर रहे हैं, अब परिवर्तन हुआ कि हुआ। चैलेन्ज बहुत अच्छी कर रहे हैं। बापदादा बच्चों के उमंग उत्साह को देख-देख खुश होते हैं और गीत क्या गाते? वाह बच्चे वाह! साथ-साथ बापदादा ने देखा चैलेन्ज तो बहुत अच्छी कर रहे हैं उमंग उत्साह से, लेकिन साथ में बच्चों की स्वयं में सर्व धारणाओं का सफलता का स्वरूप भी देखा। आप सब भी अपने सम्पन्न और सफलता का स्वरूप जानते हैं क्योंकि सारे निमित्त बने हुए बच्चे सदा सम्पन्न और सफलतामूर्त बन गये हैं कि बनना है? क्योंकि सुखमय संसार का आधार स्वरूप आप बच्चे हो। तो बापदादा ने सर्व बच्चों की रिजल्ट देखी। जो आप आधारमूर्त हो, सिर्फ थोड़े से बच्चे नहीं, सर्व बच्चों का चैलेन्ज है कि हम सुखमय संसार लाने के निमित्त हैं।

तो बापदादा सभी बच्चों से पूछते हैं कि सुखमय संसार लाने के निमित्त बने हुए बच्चे सम्पूर्ण सम्पन्न आधारमूर्त बन गये हैं? जो बापदादा

की बच्चों में आशा है हर बच्चा सफलतामूर्त हो, क्योंकि आप लोगों ने बाप के साथी बन संकल्प किया है और बड़े खुशी से चैलेन्ज की है, परिवर्तन हुआ कि हुआ। तो अपने से पूछो विश्व परिवर्तन के निमित्त बच्चे स्व सम्पन्न और सम्पूर्ण कहाँ तक बने हैं? क्योंकि राज्य स्थापन होना है तो पहले राज्य के निमित्त बनी हुई आत्मार्थे निमित्त बनेंगी उसके बाद दूसरे निमित्त बन सकते हैं। तो बापदादा ने देखा कि अब सम्पूर्ण बनने में कुछ मार्जिन रही हुई है। सेवा तो की लेकिन सेवा की रिजल्ट में आपके साथी कितने बने? हिसाब निकालो कि जो सुनते हैं वह समीप कितने आते हैं? बापदादा बच्चों की हिम्मत पर खुश है लेकिन अभी सर्विस की रिजल्ट में और तीव्रता लानी है। हर समय आत्माओं को इतना समीप सम्बन्ध में लाओ, खुश बहुत होते हैं अभी ब्रह्माकुमारियों के कर्तव्य को जानने में बहुत नजदीक आये हैं लेकिन बापदादा ने पहले भी कहा वर्षा आत्माओं को बाप द्वारा मिलना है, तो बाप को जानें, समय को जानें, स्वमान को जानें तब वर्ष के अधिकारी बनें। अभी बाप आया है, बाप वर्षा दे रहा है, यह बुद्धि में आये तब वर्षा लेके राज्य अधिकारी बनें।

चारों ओर यह आवाज फैले जो गीत गाते हो हमारा बाबा आ गया। अब बापदादा यह रिजल्ट देखने चाहते हैं। परिवर्तन हुआ है, सर्विस का लाभ हुआ है, मेहनत का फल मिला है लेकिन अभी बाप तक नहीं पहुंचे हैं, इसका कोई प्लैन बनाओ। बाप की प्रत्यक्षता कैसे हो? राजधानी में राज्य करने वाले भी निर्विघ्न बने हैं? अब परिवर्तन का बटन ड्रामा दबाये, एवरेडी? एवरेडी हैं? बटन दबायें? क्या समझते हैं, बटन दबायें? एवरेडी हैं? क्योंकि सब तैयार चाहिए, राज्य अधिकारी भी, रॉयल फैमिली भी, रॉयल प्रजा भी और साधारण प्रजा तो कोई बड़ी बात नहीं। तो बापदादा आज बच्चों से रिजल्ट पूछते हैं। क्या समझते हो? बापदादा को बटन दबाने में तो देरी नहीं लगेगी। तो पहली लाइन क्या समझती है? शक्तियां क्या समझती हैं? पाण्डव क्या समझते हैं? जवाब दो। हाँ पाण्डव जवाब दो। दबायें बटन? एवरेडी हैं? (बाबा आप मालिक हैं, आपको संकल्प आता है कि दबायें तो दबा दीजिये) बापदादा बच्चों से पूछते हैं क्यों? क्योंकि बाप को तो राज्य में आना नहीं है। ब्रह्मा बाप को आना है। (यहाँ बापदादा से मिलते रहें, यह बहुत अच्छा लगता है) यह बात तो अच्छी है लेकिन बाप समान बनके बाप के साथ जीवन का अनुभव करें, यह भी चाहिए ना। वह है? तैयार हैं? सिर्फ आप नहीं, राजधानी है। आप राज्य किस पर करेंगे? राजधानी तो चाहिए ना! (सभी साथी हैं) सब तैयार हैं? (बिल्कुल तैयार हैं) सम्पन्न बनने में तैयार हैं? अच्छा सभी सोच रहे हैं, कोई बात नहीं।

बापदादा जानते हैं कि अभी तक रेडी हैं एवरेडी बनना पड़े। जो बापदादा ने दो बातें कही थी कि सेकण्ड में फुलस्टाप लगाने वाले बच्चे चाहिए। व्यर्थ संकल्पों का नाम निशान न रहे। जिसको भी सन्देश देते हो वह सन्देश सुन परिवर्तन करने के उमंग उत्साह में आ जाए। अब बापदादा यह रिजल्ट चाहते हैं। इसके लिए बापदादा बच्चों को राय देते हैं, आज्ञा भी करते हैं, कि सेवा करते हो लेकिन जिनकी भी सेवा करते हो, एक ही समय पर तीन रूपों और तीन रीति से सेवा करो। तीन रूप नॉलेजफुल, पावरफुल और लवफुल, इन तीनों रूपों से सेवा करो और तीनों रीति से सेवा करो, वह तीन रीति है मन्सा-वाचा-कर्मणा एक ही समय, सिर्फ वाणी से सेवा नहीं लेकिन वाणी के साथ मन्सा सेवा भी साथ-साथ हो। पावरफुल माइन्ड हो। तो अभी आवश्यकता एक ही समय मन्सा पावरफुल हो, जिससे आत्माओं की भी मन्सा परिवर्तन हो जाए। वाणी द्वारा सारी नॉलेज स्पष्ट हो जाए और कर्मणा द्वारा, कर्म द्वारा सेवा से वह आत्मार्थे अनुभव करें कि सचमुच हम अपने परिवार में पहुंच गये हैं। परिवार की फीलिंग आने से नजदीक के साथी बन जायें। तो बापदादा अभी एक ही समय तीन रूप की सेवा इकट्ठी चाहते हैं। हो सकता है? हो सकता है? हाथ उठाओ, हो सकता है? अभी बापदादा ने रिजल्ट में देखा वाणी द्वारा नॉलेजफुल बनते हैं लेकिन परिवार के साथी बनें, इसमें अभी टाइम लगता है। तो बापदादा ने देखा कि समय की चैलेन्ज के साथ अभी सेवा में ऐसी सेवा करो जो एक ही समय तीनों सेवा द्वारा प्राप्ति का अनुभव करें।

तो सभी मिलने के लिए उमंग-उत्साह से पहुंच गये हैं, तो बापदादा बच्चों का उमंग देख खुश है। अभी अटेन्शन देना है, सम्पन्न और सम्पूर्ण बनने में क्योंकि कम से कम 108 की माला तैयार कर सको, कर सकते हो? 108 की माला तैयार है? तैयार है? क्योंकि राजधानी में राज्य अधिकारी तो वही बनेंगे ना। तो 108 रत्नों की लिस्ट अभी निकाल सकते हो? हाँ जी नहीं कहते हैं? 108 राज्य अधिकारी, फिर 16 हजार 108 राज्य अधिकारी के साथी। फिर उसके बाद है नम्बरवारा। तो बापदादा अभी समय प्रमाण, समय को

समीप लाने वाले बच्चों से यही चाहते हैं कि 108 की माला एवरेडी हो, बाप समान हो। तो पहली लाइन 108 नाम निकाल सकती है? हाँ या ना करो ना!

तो बापदादा का कहने का यही सार है कि अभी हर एक को अपना तीव्र पुरुषार्थ कर और दृढ़ संकल्प करना है कि मुझे बाप समान बनना ही है क्योंकि बापदादा ने सुना दिया है कि अचानक परिवर्तन होना है। उसके पहले कम से कम जो सेवा के निमित्त बने हुए हैं, ज़ोन हेडस साथ में सेन्टर इन्चार्ज, साथ में उनके नजदीक के साथी पाण्डव, वह सेन्टर हेड नहीं बनते लेकिन कोई न कोई विशेष कार्य के निमित्त बने हुए जिनको सब विशेष आत्मा की नज़र से देखते हैं, उन पाण्डवों को भी अभी तीव्र पुरुषार्थ कर स्व परिवर्तन की झलक बाहर स्टेज पर लानी पड़ेगी, इसके लिए एवरेडी हैं? जो समझते हैं कि यह कार्य तो करना ही है, अपने को बाप समान, ब्रह्मा बाप समान फालो फादर करना ही है, करना है तो हाथ उठाओ। हाथ तो इतने उठाते हैं खुश कर देते हैं। अच्छा करते हैं। लेकिन हाथ के साथ दृढ़ संकल्प भी करो। दृढ़ता की शक्ति बहुत सहयोग देती है।

तो बापदादा खुश है, हाथ उठाने में होशियार सभी हैं लेकिन अभी दृढ़ता को प्रैक्टिकल में लायेंगे। होशियार हैं ना बच्चे, दृढ़ता करते भी हैं लेकिन फिर दृढ़ता भिन्न-भिन्न रूप में बदल जाती है, यह हो गया, यह हो गया। यह नहीं होता तो वह नहीं होता। इस बहाने में बहुत होशियार हैं। तो अभी बापदादा क्या चाहते हैं? अभी हरेक को बाप समान बनना है, मन्सा वाचा कर्मणा, सम्बन्ध सम्पर्क में आपको जो भी देखे, जो भी मिले वह यही कहे वाह परिवर्तन वाह! बापदादा को भी अच्छा लगता है जो बच्चे निमित्त बने हुए हैं उनको देखकरके भी खुशी होती है और मिलन में भी बहुत खुशी होती है।

तो आज क्या संकल्प किया? बनना ही है। ब्रह्मा बाप समान बनना ही है। बनना है नहीं, बनना ही है। कोई भी बातें आयें, बात के बजाए बाप को आगे रखो। तो सभी दूर बैठे हुए बच्चे, नजदीक सामने बैठे हुए बच्चे दोनों को बापदादा देख-देख हर्षित हो रहे हैं। सभी बच्चे प्लैन बहुत अच्छा बनाते हैं, अमृतवेले सब बहुत मीठी मीठी बातें करते हैं। मैजारिटी इतनी मीठी बातें करते हैं जो बाप भी बातें सुन कुर्बान हो जाते हैं। लेकिन पता है फिर क्या होता? जब कर्म के क्षेत्र में आते हैं, सम्बन्ध में आते हैं, सेवा में आते हैं, तो जो बातें आती हैं उसमें थोड़ा थोड़ा बदल जाते हैं। अमृतवेले का जो उमंग उत्साह है वह कर्म करते, सम्बन्ध में आते थोड़ा थोड़ा बदल जाता है।

अभी बापदादा एक कार्य देते हैं, करने के लिए तैयार हो ना! कांध हिलाओ। हाथ उठाओ। बापदादा का संकल्प है कि एक मास के लिए अपने को दृढ़ संकल्प के आधार से बाप समान स्थिति में स्थित कर सकते हो? एक मास, कर सकते हैं कि ज्यादा है? जो समझते हैं एक मास दृढ़ता से, दृढ़ता को साथी बनाना बाप को सदा सामने रखना, ब्रह्मा बाप को नयनों में समाये रखना और ब्रह्मा बाप ने क्या किया, मन्सा वाचा कर्मणा वही करना है। चाहे कोई ने प्रैक्टिकल में देखा या नहीं देखा लेकिन नॉलेज तो है ना! कोई भी कर्म करने के पहले यह चेक करना कि ब्रह्मा बाप का यह संकल्प रहा, यह बोल रहा, यह कर्म रहा, यह संबंध रहा, यह सम्पर्क रहा? पहले सोचो पीछे करो। हो सकता है? इसमें हाथ उठाओ। हो सकता है तो लम्बा हाथ उठाओ। मातायें यहाँ एक्सरसाइज़ करती हो ना तो हाथ लम्बा उठाओ। आगे वाले भी उठायेंगे ना? सब मधुबन वाले इसमें नम्बरवन आना। आगे आगे मधुबन वाले बैठे हैं ना। मधुबन में सिर्फ शान्तिवन नहीं, जो भी हैं एक मास निर्विघ्न, हर सेन्टर भी निर्विघ्न, गुजरात की टीचर्स हाथ उठाओ। गुजरात की टीचर्स समझती हैं हो सकता है, इसमें लम्बा हाथ उठाओ। ऐसे ऐसे नहीं करो लम्बा उठाओ। हो सकता है? अच्छा।

बापदादा खुश होते हैं कि बच्चों को बाप से और मधुबन से दिल का प्यार है। बहुत अच्छा है, अभी गुजरात कमाल करके दिखाना। इस एक मास की रिजल्ट में नम्बरवन आके दिखाना। वैसे नम्बरवन सबको आना है। मधुबन वाले नम्बरवन आयेंगे ना, हाथ उठाओ। कुछ भी हो जाए, क्या भी परिस्थिति हो जाए, परिस्थिति आयेगी, माया सुन रही है ना, तो माया अपना रूप तो दिखायेगी लेकिन माया का काम है आना और आपका काम है विजय पाना। यह नहीं कहना, यह हो गया, वह हो गया, यह नहीं करना। आयेगा, होगा, यह तो

बापदादा पहले ही सुना देता है क्योंकि माया सुन रही है, वह बहुत चतुर है लेकिन आप, माया कितनी भी चतुर हो आप तो सर्वशक्तिवान के साथी हो, माया क्या करेगी। तो सभी नम्बरवन लाना। कोई टू नम्बर नहीं बनना, वन नम्बर। अच्छा।

सेवा का टर्म गुजरात का हैः- तो गुजरात वाले जैसे समीप हैं ना, सबसे समीप कौन है? गुजरात ही समीप है। तो यही पुरुषार्थ का लक्ष्य रखना कि हमें राज्य के अधिकारी, परिवार के नजदीक आना ही है। पुरुषार्थ क्या है? बाप को फालो करो। और दृढ़ता को नहीं भूलना। जहाँ दृढ़ता है वहाँ सफलता है ही है। तो गुजरात तो बापदादा को भी प्यारा लगता है। एक विशेषता के कारण बापदादा को प्यारा लगता है, कभी भी किसी समय भी बुलाओ, आवश्यकता हो तो गुजरात हाज़िर हो जाता है। नजदीक का फायदा उठाते हैं। ऐसे ही सदा बाप को फालो करने वाले नजदीक रहना। जो बाप ने किया वह करते रहना। फालो फादर। अच्छा।

डबल विदेशी भाई बहिनें आये हैंः- बहुत अच्छा है, विदेश में अभी बापदादा ने देखा है कि जो बापदादा ने कहा कि आसपास कोई छोटे स्थान भी नहीं रहने चाहिए, तो बापदादा ने रिजल्ट में देखा कि अभी छोटे छोटे स्थानों में भी आसपास वृद्धि हो रही है इसलिए बापदादा सेवा की मुबारक दे रहे हैं और निर्विघ्न बनने की जो आपस में रूहरिहान करते हैं वह भी अच्छी है, अभी सिर्फ जयन्ती बच्ची को काम है कि हर मास हर सेन्टर की रिजल्ट पूछती रहे, जो मधुबन से रिफ्रेशमेंट ली वह कायम है या कोई पेपर है? भले किसको साथी बना दे। करते रहते हैं। एक एक सेन्टर का करना, ऐसे नहीं जहाँ कुछ होता हो, वह नहीं, लेकिन जहाँ नहीं होता है उन्हीं से भी क्योंकि दूर रहते हैं ना। बापदादा ने देखा अटेन्शन है लेकिन और भी थोड़ा बढ़ा देना। अभी समय नाजुक आ रहा है इसलिए अटेन्शन थोड़ा ज्यादा चाहिए। अच्छा। फारेन वालों को बापदादा दिल से मुबारक और पुरुषार्थ में चढ़ती कला की मुबारक दे रहे हैं। अच्छा।

बापदादा अभी सभी बच्चों को एक ही श्रेष्ठ संकल्प सुनाने चाहते हैं कि अभी स्वयं भी निर्विघ्न रहो और अपने साथियों को, सम्बन्ध में आने वालों को भी निर्विघ्न बनाओ। समय को समीप लाओ। दुःख और अशान्ति बापदादा बच्चों का देख नहीं सकता। अभी अपना राज्य जल्दी से जल्दी धरनी पर लाओ। बापदादा को हर बच्चा प्यारा है, लास्ट नम्बर बच्चा जो है वह भी प्यारा है क्योंकि कमजोर है ना। तो कमजोर पर और ही रहम ज्यादा आता है। आप सभी भी कैसी भी स्थिति वाला, स्वभाव वाला हो लेकिन हमारा है, जैसे बाप हमारा है, वैसे परिवार हमारा है, तो उसके स्वभाव संस्कार न देख उनको और ही सहयोग दो, सद्भावना दो, शुभ भावना दो। अच्छा सामने वाले बच्चों को या दूर बैठे देखने वाले बच्चों को बापदादा एक एक बच्चे को अपने सामने देख दृष्टि भी दे रहे हैं और मुबारक भी दे रहे हैं। अच्छा।

ओम शान्ति

प्राणप्यारे अव्यक्त बापदादा के अति स्नेही, सदा अपने स्वमान में स्थित रह अनुभव की अथॉरिटी बनने वाले स्वराज्य अधिकारी सो विश्व राज्य अधिकारी सभी निमित्त बनी हुई टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - मीठा प्यारा बाबा समय प्रमाण अपने बच्चों को सर्व शक्तियों से सम्पन्न बनाए सम्पन्न और सम्पूर्ण बनने की प्रेरणा दे रहे हैं। अभी तो नया वर्ष समीप आ रहा है, जरूर अभी से ही सभी बाबा के बच्चे ज्वालामुखी योग पर अटेन्शन देंगे। शक्तिशाली योग ही संस्कारों के साथ इस पुराने संसार का परिवर्तन करेगा। बाबा चाहते हैं, अब व्यर्थ का नाम-निशान भी समाप्त हो। हर स्थान लाइट हाउस बनें। हर एक बच्चा मास्टर सर्वशक्तिवान के स्वमान में रह, समय पर शक्तियों को यूज कर विजयी भव का वरदानी बनें।

तो जरूर आप सब नये वर्ष के लिए नये उमंग-उत्साह के तीव्र पुरुषार्थ का प्लैन बना रहे होंगे। यह टर्न विशेष पंजाब ज़ोन का है। सभी बहुत अच्छी ज्ञान योग की शक्तिशाली तपस्या कर रहे हैं। यहाँ का एकान्त, शान्त, पवित्र वातावरण सभी को विशेष सर्व शक्तियों से सम्पन्न बना देता है।

नये वर्ष के लिए मधुबन से जो विशेष ब्रह्मा बाप के 18 कदम का होमवर्क भेजा गया है, वह आप सबने ईमेल से अवश्य प्राप्त किया होगा। आने वाली 21वीं सदी के इस 21 वें वर्ष में सभी स्थानों पर पूरा ही वर्ष विशेष तपस्या के कार्यक्रम चलते रहें। इसके लिए हर एक अन्तर्मुखी, अव्यक्त और अलौकिक स्थिति में रहने का विशेष अटेन्शन रख तीव्र पुरुषार्थ करना जी। अच्छा - सभी को याद... ओम् शान्ति।

19-12-20

ओम् शान्ति

रिवाइज-वीडियो 02-02-12

मधुबन

“अब स्मृति स्वरूप अनुभव की अथॉरिटी बनो, ज्वालामुखी योग द्वारा सबको लाइट माइट की किरणों का सहयोग दो”

आज बापदादा अपने सामने या चारों तरफ के अपने छोटे से संसार को देख हर्षित हो रहे हैं क्योंकि यह संसार है छोटा लेकिन अति प्यारा है क्योंकि इस संसार की एक-एक आत्मा श्रेष्ठ आत्मा है। कोटों में कोई आत्मायें हैं। बाप के वर्से के अधिकारी आत्मायें हैं। बापदादा हर बच्चे को देख खुश होते हैं कि यह एक-एक बच्चा राजा बच्चा है। बापदादा ने हर एक बच्चे को स्वराज्य अधिकारी और विश्व राज्य अधिकारी बनाया है। इस समय सभी स्वराज्य अधिकारी हैं अर्थात् मन-बुद्धि, संस्कार, कर्मेन्द्रियों के राजा हैं। कर्मेन्द्रियों के वश नहीं हैं। मन के भी मालिक हैं। तो ऐसे ही आप हर एक बच्चा अपने को मन के मालिक, संस्कारों के भी मालिक समझते हो? ऐसे तो नहीं कभी आप मन के मालिक होते वा कभी मन आपका मालिक होता! क्योंकि कहते ही हो मेरा मन, मैं मन नहीं कहते हो। तो मेरे के आप मालिक हो। चेक करो कभी मन तो मालिक नहीं बन जाता? क्योंकि इस समय बापदादा ने हर एक को स्वराज्य अधिकारी की सीट पर बिठाया है। अब के स्वराज्यधारी हो और भविष्य का राज्य तो आपका है ही। डबल राज्य अधिकारी हो। बापदादा देखते हैं हर बच्चा स्वराज्य अधिकारी के साथ स्वमानधारी भी है। तो मैं स्वमानधारी आत्मा हूँ, इस स्मृति में बैठो तो देखो कितने स्वमानों की लिस्ट आपके सामने आती है। अनेक स्वमान की माला सामने आ जाती है ना!

बापदादा ने बच्चों के स्वमानों की माला हर बच्चे को डाली है। स्वमान सुनते ही आपके सामने भी अपने स्वमान स्मृति में आ गये! याद करो, अनादि स्वरूप में आपका स्वमान कितना बड़ा है! चले गये अनादि स्वरूप में? हर एक का स्वमान है – एक तो बाप के साथ-साथ चमकती हुई आत्मा है, बाप के साथ के कारण विशेष चमकती हुई दिखाई दे रही है। देख रहे हो? जैसे आकाश में भी यहाँ कोई-कोई सितारा विशेष चमकता है, ऐसे बाप के साथ-साथ होने कारण चमकती हुई आत्मा हो। याद आया अपना अनादि स्वरूप? सेकण्ड में अपने अनादि स्वरूप में स्थित हो सकते हो? अभी एक सेकण्ड में उस अनादि स्वरूप में एक सेकण्ड के लिए स्थित हो जाओ। कितना नशा चढ़ता है! आगे बढ़ो, इस सृष्टि चक्र के आदि में आ गये! यह झिल करो सतयुग आदि में अपना स्वरूप देखो, कितना श्रेष्ठ सुख स्वरूप है। कितना सर्व प्राप्ति स्वरूप है। दुःख का नामनिशान नहीं है। प्रकृति कितनी सुन्दर सतोगुणी है। अनुभव करो अपने देवता स्वरूप का। देख रहे हो अपना स्वरूप? कोई भी राजा हो, महात्मा हो, नेता हो ऐसा सर्व प्राप्ति स्वरूप कोई देखा! तो एक सेकण्ड के लिए अपने देवता स्वरूप में स्थित हो जाओ। अपने स्वमान में मजा आता है ना! हम सो देवता ... बापदादा यह झिल करा रहा है। फिर नीचे आओ कौन सा युग आ गया? द्वापर में भी आपका स्वमान पूज्य का है। पूज्य स्वरूप है। अपने पूज्य स्वरूप को देख रहे हो? कितने सभी भावना से कायदे प्रमाण पूजा करते हैं। ऐसे कायदे प्रमाण पूजा और किसी की भी नहीं होती। चाहे धर्म पितायें आये, चाहे गुरु बने, नेतायें बने, अभिनेतायें बने लेकिन ऐसी कायदे प्रमाण पूजा किसकी नहीं होती। तो अपना स्वमान देखा, अनुभव किया? अब आओ संगम में, सब चक्र लगा रहे हो? पीछे वाले चक्र लगा रहे हो! हाथ उठाओ। देखो अपना स्वमान क्योंकि स्वराज्य अधिकारी हो ना! तो संगम पर स्वयं भगवान, आपकी जीवन में स्वयं मालिक आप बच्चों में पवित्रता की विशेषता भरता है। जो पवित्रता आपके सर्व अविनाशी सुखों की खान है। और बनाने वाला कौन? स्वयं भगवान। वह तो अभी भी प्रत्यक्ष प्रमाण आपको पवित्रता की जायदाद बाप से प्राप्त हो गई है। अब चेक करो - पवित्रता सर्व प्राप्तियों का आधार है, पवित्रता से आप सभी मास्टर सर्वशक्तिमान बन गये। तो चेक करो सर्वशक्तियां प्राप्त हैं? कोई-कोई बच्चे कहते हैं बाप ने तो सर्व शक्तियां दी लेकिन कोई-कोई समय जिस शक्ति की आवश्यकता होती है वह थोड़ा टाइम के बाद आती है। बात पूरी हो जाती है फिर आती है। इसका कारण क्या? वरदान में बाप ने दी फिर भी समय पर नहीं आती है, उसका कारण क्या? अपने मास्टर सर्वशक्तिमान के स्मृति की सीट पर नहीं होते हो, कोई भी किसका आर्डर मानते हैं तो सीट वाले का आर्डर मानते हैं। तो जब भी आप कोई भी शक्ति का आर्डर करते हो, पहले यह देखो स्मृति की सीट पर हैं? स्वमान के सीट पर हैं? स्मृति की सीट पर स्थित हो जाओ तो सर्व शक्तियां आपके पास समय पर बंधी हुई हैं आने के लिए क्योंकि सर्वशक्तिमान बाप ने आपको मास्टर सर्वशक्तिमान बनाया है। तो इतने पावरफुल स्वमानधारी बन चल रहे हो ना? अपने स्वमान देखे? संगम के बाद कहाँ जायेंगे? रिटर्न जरनी करेंगे ना! इसलिए बापदादा यही चाहते हैं कि हर एक सारे दिन में यह एक्सरसाइज़ करते रहें। समय निकालो बार-बार यह स्वमान की माला पहनने से, अनुभव करने से जो बापदादा ने स्वराज्य अधिकारी बनाया है, वह हो नहीं सकता कि स्वमान आपके आर्डर पर नहीं चले। सिर्फ सीट पर सेट रहो।

बापदादा ने देखा सभी अटेन्शन रखते हैं लेकिन नियमित रूप से अपनी दिनचर्या सेट करो। बीच-बीच में यह अपने स्वमान के स्मृति स्वरूप में स्थित रहो। जैसे ट्रैफिक कंट्रोल करते हो ऐसे यह स्वमान की स्मृति आदिकाल से रिटर्न जरनी तक की, बीच-बीच में टाइम फिक्स करो। यह चलते फिरते भी कर सकते हो क्योंकि मन को सीट पर बिठाना है। बापदादा ने देखा, पहले भी कहा है योग सब लगाते हो लेकिन अब आवश्यकता किसकी है? समय

की हालतों को देख पहले भी सुनाया अब ज्वालामुखी योग की आवश्यकता है, जिससे डबल काम होगा। एक तो अपने पुराने संस्कार का संस्कार हो जायेगा, अभी संस्कारों को मारते हो लेकिन जलाते नहीं हो। मारने के बाद फिर भी कभी-कभी वह जाग जाते हैं। जैसे रावण को सिर्फ मारा नहीं, जलाया। ऐसे आप भी अपने पुराने संस्कारों को जो बीच-बीच में तीव्र पुरुषार्थ में कमी कर देते हैं, उसके लिए ज्वालामुखी योग की आवश्यकता है। एक स्वयं के लिए और दूसरा ज्वालामुखी योग द्वारा औरों को भी लाइट रूप होने के कारण, माइट रूप होने के कारण उन्हों को भी अपनी किरणों द्वारा सहयोग दे सकते हो। तो अभी सभी ने योग को ज्वालामुखी योग में परिवर्तन किया? समय अनुसार अभी आत्माओं को आपके सहयोग की आवश्यकता है। बाकी बापदादा तो अमृतवेले हर बच्चे को स्नेह देते हैं।

बापदादा देखते हैं लक्ष्य बहुत अच्छा रखते हैं, हिम्मत भी रखते हैं लेकिन सारा दिन उसी अटेन्शन में रहें, जैसे अमृतवेले रहता है, वह कम हो जाता है। कारण क्या होता है? यह जो कर्म में लगते हो, कर्मयोगी बन कर्म करना, इसमें अन्तर पड़ जाता है। आप सिर्फ योग लगाने वाले नहीं हो, योगी जीवन वाले हो। तो जीवन सदा रहती है, कभी-कभी नहीं। तो बापदादा अभी क्या चाहते हैं? प्यार में तो बहुत करके पास हैं, प्यार की सबजेक्ट में बाप ने देखा मैजारिटी बाप के साथ मेरा बाबा, मेरा बाबा कह प्यार का अनुभव करते हैं। प्यार में तो मैजारिटी पास हैं, अब किसमें पास होना है? बाप समान बनने में। सभी क्या चाहते हैं? बाप समान बनना है कि बाप बाप रहेगा आप बच्चे हैं, तो बाप समान तो बनना पड़ेगा। प्यार माना क्या? प्यार वाला जो कहे वह करना ही है। तो सभी बाप के प्यारे हो, बाप का प्यार आपसे है? इसमें हाथ उठाओ। प्यार है अच्छा, प्यार है? तो अभी बापदादा यही चाहते हैं कि जैसे प्यार है, ऐसे यह लक्ष्य रखो कि हमें बाप समान बनना ही है, इसमें हाथ उठाओ। तो निश्चय रखते हैं, हाथ तो बहुत अच्छा उठाते हैं। बापदादा देख रहे हैं।

बापदादा चाहता है एक-एक बच्चा ऐसा खुशानुमा, खुशानसीब दिखाई दे, चेहरे से चलन से क्योंकि समय प्रमाण अभी आपका चेहरा बहुत सेवा करेगा। आवश्यकता पड़ेगी। इसके लिए बापदादा चाहता है कि अभी से लक्ष्य रखो जैसे अभी सबको उमंग है सेवा करने का। ऐसे उमंग हो चेहरे से सेवा करने का क्योंकि दिनप्रतिदिन समय नाजुक आना ही है। तो ऐसे समय पर आपका चेहरा आत्माओं को चियरफुल बना दे।

बापदादा ने आज अमृतवेले चक्र लगाया, तो क्या देखा? बैठते सभी अपने रूचि से भी हैं लेकिन सबसे बड़ी अर्थॉरिटी है अनुभव की। तो देखा बैठते हैं लेकिन अनुभव की अर्थॉरिटी बनकर बैठें, स्मृति में बैठते हैं लेकिन स्मृति स्वरूप अनुभव हो। अनुभव की अर्थॉरिटी का आनंद वह थोड़ा समय होता है। सोचते हैं मैं बापदादा के तख्तानशीन हूँ लेकिन स्वरूप के स्मृति स्वरूप अनुभवी मूर्त, अनुभव में खो जायें, उसे अभी और भी आगे बढ़ाना होगा क्योंकि अनुभव की अर्थॉरिटी सबसे बड़े ते बड़ी है। स्मृति स्वरूप रहना इसको कहा जाता है अनुभव। तो अनुभव में खो जाना जो स्वरूप की स्मृति रखते हैं, उस स्वरूप की अनुभूति में रहना इसकी और आवश्यकता है क्योंकि अनुभव कभी भी भूलता नहीं है।

बापदादा ने देखा मुरली से प्यार मैजारिटी का है लेकिन जैसे जगत अम्बा ने प्रत्यक्ष जीवन में दिखाया कि जो बाप ने कहा वह करना ही है, लक्ष्य रखा और पुरुषार्थ के तरफ अटेन्शन भी दिया। आपकी दीदी दादियां जो एडवांस पार्टी में भी गई हैं उन्होंने भी अटेन्शन दिया, अभी आप लोगों का इन्तजार कर रहे हैं। पूछती हैं वह कि समाप्ति का गेट कब खोलेंगे? एक दो तो नहीं खोलेगा ना! तो अभी पुरुषार्थ करके गेट खुलने के समय को समीप लाओ। सम्पन्न बनना अर्थात् समीप लाना।

अच्छा। सभी चारों ओर के बच्चों को बापदादा दिल का स्नेह दे रहे हैं। साथ-साथ जो बापदादा ने कार्य दिया है, उसकी भी स्मृति दिला रहे हैं, क्यों? बहुत करके यह व्यर्थ संकल्प पुरुषार्थ को तीव्र के बजाए साधारण कर देते हैं इसलिए चारों ओर के बच्चों को बापदादा यादप्यार के साथ यह भी स्मृति दिला रहे हैं कि अब संगम का समय कितना श्रेष्ठ सुहावना है, इस संगम के समय ही सर्व खजाने बाप द्वारा प्राप्त होते हैं, संगम का एक-एक सेकण्ड महान है इसलिए संगम के समय का मूल्य सदा अपने बुद्धि में रखो। संगम का एक सेकण्ड प्राप्ति कितना कराता है। आपसे कोई पूछे आपको क्या मिला है! तो क्या जवाब देंगे? अप्राप्त नहीं कोई वस्तु हम ब्राह्मणों के दिल में। पाना था वो पा लिया। अब उसको कार्य में लगाते हुए तीव्र पुरुषार्थी बन समय को समीप लाओ। अच्छा। बापदादा देखते हैं सभी को उमंग भी आता है और यह उमंग सदा आगे बढ़ाते रहो। अच्छा।

सेवा का टर्न पंजाब ज़ोन का है:-

यह चांस जो मिलता है इसमें भी शक्ति भर जाती है। बापदादा को खुशी होती है, एक ही ज़ोन आलराउण्ड सेवा के निमित्त बनता है। चांस भी मिलता है और भाग्य भी बनता है। अभी तक जो भी ज़ोन सेवा करते हैं, बापदादा ने देखा बहुत करके सन्तुष्ट करके ही जाते हैं। रिपोर्ट ठीक है ना! अच्छा है। बापदादा खुश है। अच्छा।

डबल विदेशी सभी मुख्य भाई बहिनें आये हैं:-

डबल विदेशियों को टाइटल दिया है मधुबन का श्रृंगार हैं। मधुबन में रौनक कर देते हैं और फर्क भी अच्छा लाया है। बापदादा पुरुषार्थ और परिवर्तन दोनों ही देख करके खुश है। पहले व्हाई व्हाई करते थे, अभी वाह! वाह! करते हैं। चेंज अच्छी लाई है। अभी कोई बात में मुश्किल नहीं लगता। कोई भी बात, नियम, बापदादा का जो मुरली में डायरेक्शन जाता है वह करने में एवररेडी हैं और सहयोग भी अच्छा है। स्नेही हैं लेकिन सहयोगी भी अच्छे हैं।

अभी जो बापदादा चाहते हैं ज्वालामुखी योग हो, इसमें विदेशी नम्बरवन लो क्योंकि विदेशियों के संस्कार हैं जो लक्ष्य रखते हैं ना वह पूरा करते हैं। दो बातों में नम्बर लो - एक व्यर्थ समाप्ति और दूसरा सर्विस में निर्विघ्न। प्यार तो सारे परिवार का भी है। सिर्फ बापदादा का नहीं है लेकिन सारे परिवार का भी डबल विदेशियों से प्यार है। अभी दोनों बातों में विदेश नम्बरवन जाके दिखाये।

अच्छा है - एक-एक रत्न को बापदादा विशेष दिल का प्यार और साथ में प्यार के साथ में मन के उमंग-उत्साह की लहर भी दे रहे हैं। अच्छा। सभी ने अपने लिए यादप्यार लिया कि सिर्फ वर्ग वाले या डबल विदेशियों ने लिया। सबको बापदादा देखता है, नज़र दौड़ाता है तो नज़र से यादप्यार देते हैं। अच्छा।

31-12-20

ओम् शान्ति

“दिनचर्या”

मधुबन

प्राणप्यारे अव्यक्त बापदादा के अति लाडले, सदा सन्तुष्टता की शक्ति से माया और प्रकृति की हलचल को परिवर्तन करने वाली निमित्त टीचर्स बहिनें तथा सर्व बाबा के नूरे रत्न, सदा उमंग-उत्साह के पंखों से उड़ने वाले देश विदेश के सभी ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें, ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद के साथ नये वर्ष, नये युग की बहुत-बहुत हार्दिक शुभ कामनायें।

यह नया वर्ष, नया उमंग-नया उत्साह लेकर आया है, अभी यह वर्ष जो बीता है, सभी ब्रह्मा वत्सों ने इसे यादगार रूप बनाया है। भले यह वर्ष कोरोनाकाल का रहा, भाग दौड़ वाली वाचा सेवार्यें कम हुईं, लेकिन सभी ने बहुत अच्छी मन्सा सेवार्यें की हैं। हर एक को अपनी ऊंचे से ऊंची स्व-स्थिति बनाने का गोल्डन चांस मिला है। सभी ने अपने संकल्प, श्वास और समय को सफल किया है। हर एक को बहुत कुछ सीखने, अनुभव करने, एकाग्रता का अभ्यास बढ़ाने के लिए एकान्तवास का समय मिला। साइन्स के साधनों द्वारा ऑन लाइन क्लासेज वा सेवाओं के भिन्न-भिन्न कार्यक्रम भी बहुत अच्छे सफल रहे हैं। अनेक नई-नई आत्माओं ने इस माध्यम से भी बाबा को पहचाना और ज्ञान योग के साप्ताहिक कोर्स किये। यह भी सेवा का नया दौर देखने और अनुभव करने को मिला। बाबा कहते बच्चे, ड्रामा की हर सीन में कुछ न कुछ कल्याण समाया हुआ है। बाबा के बच्चे तो हर सीन देखते नथिंग न्यु की स्मृति से सदा अचल अडोल रहते हैं।

अभी 21 वीं सदी का यह 2021 वर्ष विशेष हम सब तपस्या वर्ष के रूप में मनायेंगे। यह तपस्या ही आत्मा को बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनायेगी। जनवरी मास तो हम सबके प्यारे ब्रह्मा बाबा का स्मृति मास है, इसमें तो हम सभी विशेष ब्रह्मा बाप समान बनने के लिए उनके एक एक कदम पर कदम रख अपनी श्रेष्ठ स्थिति बनायेंगे ही। इसके लिए जनवरी मास के पत्र पुष्प में पूरे मास का होमवर्क आप सबके पास ईमेल से भेजा गया है। सभी बहुत अच्छी तरह अन्तर्मुखी बन, मन और मुख का मौन रख, अपनी अव्यक्त अलौकिक स्थिति बनाना जी।

बाकी बाबा के मिलन की यह सीजन भी अति न्यारी प्यारी है, अभी दिल्ली/आगरा ज़ोन से कुछेक भाई बहिनें सम्मुख पहुंचे हैं। अन्य सभी देश विदेश के लाखों भाई बहिनें ऑनलाइन ही अव्यक्त मिलन की अनुभूतियां करते, अनेक वरदानों से अपनी झोली भर रहे हैं। बापदादा के वरदानी महावाक्य हर एक बच्चे में नया उमंग, नया उत्साह भर देते हैं। अभी तो सबको सम्पूर्ण बनने की रेस के साथ-साथ प्यारे बापदादा को विश्व के कोने-कोने में प्रत्यक्ष करना ही है। अच्छा - सभी को नये वर्ष की बहुत-बहुत दिल से बधाईयां।
ओम् शान्ति।

31-12-20

ओम् शान्ति

“अव्यक्त महावाक्य” रिवाइज वीडियो 31-12-12 मधुबन

इस नये वर्ष में हर एक सन्तुष्टमणि बन सन्तुष्टता की शक्ति द्वारा समस्या प्रूफ, समाधान स्वरूप बनो

आज बापदादा अपने चारों ओर सन्तुष्ट मणियों को देख रहे हैं। हर एक की लाइट बहुत अच्छी चमक रही है क्योंकि सन्तुष्टता की शक्ति बहुत श्रेष्ठ है। जहाँ सन्तुष्टता है वहाँ और शक्तियां भी आ जाती हैं। सन्तुष्टता की शक्ति किसी भी प्रकार की समस्या को सहज समाप्त कर सकती है। जहाँ सन्तुष्टता है वहाँ कोई अप्राप्त शक्ति नहीं, सन्तुष्टता की शक्ति कैसा भी वायुमण्डल हो, कैसा भी सरकमस्टांश हो उनको सहज परिवर्तन कर सकती है। सन्तुष्टता माया और प्रकृति की हलचल को परिवर्तन कर देती है। तो हर एक अपने को देखे कि हम सन्तुष्टमणि बने हैं? कोई भी मनुष्यात्मा की परिस्थिति को परिवर्तन कर वायुमण्डल परिवर्तन कर सकते हैं?

बापदादा भी आज विशेष अपने सन्तुष्टमणि आत्माओं को देख बहुत खुश हो रहे हैं। बापदादा ने देखा यहाँ सेवा में, साथियों में सन्तुष्टता की शक्ति वायुमण्डल को परिवर्तन कर लेती है। तो अपने को ऐसे सन्तुष्टमणि अनुभव करते हो? जो समझते हैं सन्तुष्टता की शक्ति है और समय पर कार्य में लगाते सफलता का अनुभव भी होता है, वह हाथ उठाओ। अच्छा। लम्बा हाथ उठाओ। हाथ तो बहुत अच्छे उठाते हो। बापदादा भी सभी के हाथों को देख खुश है। लेकिन यह चेक करो कि कोई भी साथियों में हलचल होती है, उस समय यह शक्ति परिवर्तन करती है? उसकी रिजल्ट पहले अपने-अपने स्थानों को शक्तिशाली बनाने में सक्सेस हैं?

बापदादा ने देखा कई स्थानों में अभी भी सहनशक्ति से स्थानों को सदा निर्विघ्न बनाने की आवश्यकता है! बापदादा ने कार्य दिया था कि हर एक स्थान अर्थात् सेवाकेन्द्र, ज़ोन निर्विघ्न की रिपोर्ट देवे। याद है? है याद! उसी हिसाब से समय की आवश्यकता अनुसार अभी हर स्थान निर्विघ्न होना आवश्यक है। चाहे सेवास्थान है, चाहे अपने प्रवृत्ति में हैं, हर स्थान निर्विघ्न सन्तुष्टता की शक्ति से सम्पन्न हो। समय की रफ्तार तो देख रहे हो। तो बापदादा ने देखा सन्तुष्टता की शक्ति चाहे स्वयं में, चाहे संगठन में अभी अटेन्शन देने की आवश्यकता है।

ब्रह्मा बाप चारों ओर चक्कर लगाते हैं। सबसे सहज साधन सम्पूर्ण बनने का जानते हो कौन सा है? फॉलो फादर। आदि से लेके अन्त तक ब्रह्मा बाप ने सन्तुष्टता की शक्ति से हर परिस्थिति पर विजय प्राप्त की। तो बापदादा आज सभी को विशेष इशारा दे रहे हैं, हर एक सन्तुष्टमणि बन सन्तुष्टता की शक्ति को विशेष कार्य में लगाते जाओ।

अब नया वर्ष आ रहा है, इसमें हर एक को यह चेक करना है कि सन्तुष्टता की शक्ति से स्वयं भी सन्तुष्ट, साथी भी सन्तुष्ट रहे? जो बापदादा चाहते हैं वैसे ही सन्तुष्ट रहे? कोई भी समस्या सन्तुष्टता से समाप्त हुई? क्योंकि दुनिया में दिनप्रतिदिन असन्तुष्टता बढ़नी ही है, उसके लिए अपने को देखें कि मैं सारा दिन सन्तुष्टमणि रही या रहा? इसका सहज साधन है फॉलो ब्रह्मा फादर क्योंकि आजकल दुनिया में असन्तुष्टता बढ़नी ही है। बाकी बापदादा ने सभी बच्चों को नये वर्ष के लिए विशेष अमृतवेले सहज वरदान के रूप में वरदान देने का प्लैन बनाया है। सब पूछते हैं ना नये वर्ष में क्या होगा? तो बापदादा का विशेष दृढ़ संकल्प वालों को पुरुषार्थ में सहयोग प्राप्त होगा, तो इस नये वर्ष की गिफ्ट से सहज हो जायेगा। अमृतवेले का यह वरदान पसन्द है? पसन्द है! करते तो हो लेकिन बापदादा की तरफ से विशेष सहयोग, स्नेह, शक्ति प्राप्त होगी। ठीक है! ठीक है? क्योंकि बापदादा ने देखा सबको लगन अच्छी है। कुछ करना है, यह लगन अच्छी है लेकिन जो बीच में कोई न कोई सरकमस्टांश आते हैं उसके लिए इस वर्ष में सन्तुष्टता की शक्ति विशेष कार्य में लगाना। चेक करना तो आगे स्वतः ही बढ़ते जायेंगे। अच्छा।

सभी जगह-जगह से आये हैं। चारों ओर भी मधुबन को लगन से याद करते रहते हैं। तो आप क्या बनेंगे? सन्तुष्टमणि। पसन्द है! सन्तुष्टमणि बनना पसन्द है, तो हाथ हिलाओ। अगर हर एक सन्तुष्ट रहेगा तो चारों ओर क्या होगा! वाह वाह! का गीत बजेगा। तो आप सभी कौन हो? कौन हो? सभी सन्तुष्टमणि हो? सन्तुष्टमणि हैं कि थोड़ा-थोड़ा हैं? कहां, हम नहीं बनेंगे तो कौन बनेगा! बापदादा चक्र लगाये तो क्या देखे? हर स्थान पर सन्तुष्टमणियों की लाइट चमक रही है क्योंकि बापदादा को चारों ओर चक्र लगाने में देरी नहीं लगती है। तो चारों ओर सन्तुष्टमणियों की लाइट कितनी चमक रही है, यह रिजल्ट इस वर्ष देखेंगे।

इस वर्ष अपने में समस्या प्रूफ, समाधान स्वरूप की विशेष रिजल्ट देखनी है। चारों ओर के बच्चे मैजारीटी मधुबन में मन से पहुंचे हुए हैं। बापदादा देख रहे हैं, चारों ओर के बच्चे कितने लगन से मन द्वारा मधुबन में पहुंचे हैं। आप साकार में पहुंचे हैं, चारों ओर के बच्चों को बापदादा भी विशेष यादप्यार दे रहे हैं। और विशेष सन्तुष्टता की शक्ति का वरदान चारों ओर के बच्चों को दे रहे हैं। सन्तुष्ट रहना, सन्तुष्ट करना और सन्तुष्टता की शक्ति से विश्व में भी सन्तुष्टता का वायब्रेशन फैलाना। अच्छा। सभी खुश हैं? हैं खुश तो दो-दो हाथ उठाओ। बापदादा भी बच्चों को मधुबन में देख खुश है। कुछ भी होवे ना, कोई भी ऐसी प्रॉब्लम छोटी-मोटी आवे ना तो आप मधुबन में मन से पहुंच जाना। तन से नहीं मन से। बापदादा बच्चों के मन में एकस्ट्रा खुशी की खुराक भर देंगे। अच्छा है, मधुबन में आना अर्थात् पुरुषार्थ में आगे कदम बढ़ाना। अभी भी चेक करना मधुबन में आये तो कितना अपने में आगे बढ़ने में सहयोग लिया? मधुबन में सहज सारा दिन क्या याद रहता है? बाबा, बाबा, बाबा...। सुनते हैं तो भी बाबा की बातें, चलते हैं तो मधुबन का पावन स्थान, खाते हैं तो ब्रह्मा भोजन, पावरफुल क्योंकि यहाँ विशेष ड्युटी वालों को याद दिलाया जाता है इसलिए मधुबन में आना अर्थात् अपने में ज्ञान, योग, धारणा और सेवा में कदम को आगे बढ़ाना। तो सभी ने मधुबन का यह सब फायदा उठाया है? उठाया है! फायदा उठाया है? क्योंकि यहाँ तो कोई जिम्मेवारी है ही नहीं। अपने को आगे बढ़ाने की जिम्मेवारी है? अच्छा।

सेवा का टर्न, दिल्ली आगरा का है:- दिल्ली वाले उठो। दिल्ली वाले लाइट माइट का रूप बनके आये हैं। अच्छा हॉल में रौनक हो गई है। अच्छा। देहली वालों को तो राजधानी तैयार करनी है क्योंकि सभी को राज्य तो करना है ना, तख्त पर भले नहीं बैठें, लेकिन होंगे तो राज्य अधिकारी। अच्छा है, दिल्ली वालों को सर्विस का उमंग तो अच्छा है। अभी दिल्ली को नम्बरवन निर्विघ्न ज़ोन, यह रिजल्ट देनी है। उमंग तो अच्छा है लेकिन अभी प्रूफ देना है। दिल्ली वाले करेंगे ना! हाथ उठाओ क्योंकि अभी तक बापदादा को किसी भी ज़ोन से रिजल्ट नहीं आई है। तो इसमें भी नम्बरवन लेगी ना दिल्ली। हाँ टीचर्स हाथ उठाओ। तो लेंगे? थोड़ा ढीला-ढाला उठाया। भाईयों ने उठाया! अच्छा। भिन्न-भिन्न स्थान पर बैठे हैं। अच्छा है, बापदादा ने देखा सेवा का उमंग सभी ज़ोन में है और इस वर्ष में चारों ओर सभी ने यथा शक्ति प्रोग्राम भी अच्छे किये हैं। सेवा का उमंग-उत्साह चारों ओर है और यह सेवा का उमंग बढ़ाते जायेंगे तो क्या होगा? भारत महान बन जायेगा। अच्छा। दिल्ली वालों को मुबारक हो।

डबल विदेशी:- हाथ उठाओ। बहुत अच्छा। बापदादा ने देखा कि मधुबन का फायदा फॉरेन वालों ने बहुत अच्छा उठाया है। चाहे रिट्रीट की, चाहे कोई भी प्रोग्राम किये लेकिन संगठन में जो एक दो को सहयोग और हिम्मत मिली उसकी रिजल्ट अच्छी है इसीलिए बापदादा डबल फॉरेनर्स को 100 बार फायदा उठाने की मुबारक दे रहे हैं। और डबल फॉरेनर्स को बापदादा ने क्या टाइटल दिया! डबल पुरुषार्थी। डबल फॉरेनर नहीं लेकिन डबल पुरुषार्थी हैं। जब भी कोई डबल कहे ना तो कहो डबल फॉरेनर्स ही नहीं, डबल पुरुषार्थी भी हैं। और अपने को चेक करना। बापदादा जानते हैं अटेन्शन है और विशेष अटेन्शन दिलाया भी जाता है इसीलिए बापदादा को अच्छा लगता है, चाहे देरी से आये हैं, लेकिन पुरुषार्थ में पीछे नहीं हैं। आगे जा रहे हैं और आगे जाते रहेंगे। यह भी बापदादा देख रहे हैं। बापदादा खुश है इसकी ताली बजाओ।

अभी बापदादा हर एक के पुरुषार्थ में प्रोग्रेस यह चाहते हैं, चारों ओर सब तरफ नम्बरवन हो, ऐसा अभी एक दो के सहयोगी बन ऐसी रिजल्ट निकालो। जो भी ज़ोन देखो नम्बरवन हो। यह हो सकता है? हो सकता है? दादियां सुनाओ, हो सकता है? हाँ बोलो, हो सकता है? (हम नहीं करेंगे तो कौन करेगा, हम ही तो करेंगे) हाथ उठाओ, डबल पुरुषार्थी बनेंगे! जहाँ भी जो सुन रहे हैं, देख रहे हैं सब यह संकल्प करो - करना ही है और जो बहादुर होंगे वह तो कहेंगे बाबा बड़ी बात क्या है, हुआ ही पड़ा है क्योंकि आपका वायब्रेशन दुनिया तक जाये। आप लोग अगर पुरुषार्थ में

आगे जायेंगे तो उसका वायब्रेशन दुनिया के दुःखी लोगों तक पहुंचेगा। आजकल तो कितना दुःख बढ़ रहा है! कारण ही ऐसे बनते हैं जो दुःख ही दुःख फैल जाता है। अच्छा -

सभी को याद है, अगले वर्ष क्या करना है? तो ऐसा पुरुषार्थ करके आगे बढ़ो और आगे बढ़ाओ। अच्छा।

बापदादा ने सभी बच्चों को नये वर्ष की बधाईयां दी:

चारों ओर के बच्चों को नये वर्ष की मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो। इस नये वर्ष में कुछ न कुछ नवीनता अपने में लानी है। जो अभी तक परिवर्तन नहीं किया हो, मुश्किल लगता हो वह इस नये वर्ष में करके समाचार लिखना। अपने को निर्विघ्न बनाना और दूसरों को भी निर्विघ्न बनाने में सहयोगी बनना। सब सन्तुष्टमणियां, चमकती रहे, ऐसे बापदादा देखने चाहते हैं। अच्छा!

चारों ओर के बच्चों को बहुत-बहुत-बहुत यादप्यार और परिवर्तन मनाने की मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो। ओम् शान्ति।

ओम् शान्ति 18-1-21 "स्मृति दिवस-दिनचर्या" मधुबन

प्राणप्यारे अव्यक्त बापदादा के अति स्नेही, सदा परमात्म स्नेह में समाये हुए, स्मृति सो समर्थी स्वरूप सभी निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सभी ब्रह्मा वत्स, ब्रह्मा बाप के कदम पर कदम रख सम्पन्न और सम्पूर्ण बनने के तीव्र पुरुषार्थी, ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - इस अव्यक्ति मास में चारों ओर बाबा के सभी बच्चे अपने प्यारे ब्रह्मा बाबा के समान कर्मयोगी सो कर्मातीत स्थिति बनाने के लिए मन और मुख का मौन रख बहुत अच्छी तपस्या कर रहे हैं। सभी का लक्ष्य है, समय की तीव्रता के साथ-साथ हमें सम्पन्न और सम्पूर्ण बनना ही है। प्यारे बापदादा भी समय प्रमाण हम सबको अनेक शिक्षाओं से सजाते, संवारते रहते हैं। 18 जनवरी का यह स्मृति दिन भी विशेष मधुबन घर की याद दिलाता है। आप सबने भी दूर बैठे अपने दिव्य बुद्धि के विमान द्वारा मधुबन के चारों धामों की यात्रा की होगी। इस बार बापदादा मिलन में भोपाल ज़ोन के भाई बहिनें थोड़ी संख्या में पहुंचे हैं। बाकी सब ऑन लाइन मिलन मना रहे हैं।

इस समय हम सबका प्यारा मधुबन घर हर एक को विशेष अव्यक्त वतन की अनुभूति करा रहा है। ठण्डी-ठण्डी हवाओं के बीच, सफेद पोशधारी फरिश्ते प्यारे बापदादा की यादों को दिल में समाये हुए चारों धामों की यात्रा कर रहे हैं। इस बार शान्तिवन के भाईयों ने ही सुन्दर खुशबूदार फूल मालाओं से चारों धामों को सजाया है। बहुत शान्त, एकान्त वातावरण है। हर वर्ष की भांति प्रातः मुरली क्लास में सभी ने बापदादा के मधुर शिक्षाओं भरे साकार व अव्यक्त महावाक्य सुनें, शशी बहन ने प्यारे बापदादा को भोग स्वीकार कराया। तत्पश्चात सभी स्नेह के सागर में समाये हुए शान्ति स्तम्भ पर पहुंचे और भावनाओं से भरपूर गीत सुनते मीठे बाबा से मीठी रूहरिहान करते रहे। उसके बाद सभी नम्बरवार चारों धामों की परिक्रमा करते फल और दूध का नाश्ता करके अपने-अपने स्थानों पर विशेष तपस्या करने पहुंच गये। शाम के समय शान्तिवन के डायमण्ड हॉल में सभी ने प्यारे बापदादा से ऑनलाइन मंगल मिलन मनाया। ऐसे अनुभव हो रहा था जैसे बापदादा डायरेक्ट वतन से बच्चों को स्नेह का रेसपाण्ड देते हुए सबको शक्ति सम्पन्न बना रहे हैं। बापदादा के यह अव्यक्ति महावाक्य आप सबने भी लाइव सुने होंगे। कितनी गहरी सुन्दर प्रेरणायें, नष्टोमोहा बनने की विधियां बापदादा ने सुनाई हैं, इन्हें हम सबको अपने जीवन में उतारना है। अच्छा। सभी को याद... ओम् शान्ति।

18-1-21 ओम शान्ति "अव्यक्त-बापादादा" रिवाइज-वीडियो 18-01-10 मधुबन

"ब्रह्मा बाप समान नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप बनने के लिए, मन का टाइमटेबल बनाकर कर्म करते कर्मयोगी अशरीरी बनने का अभ्यास करो"

आज चारों ओर के बच्चों में विशेष स्नेह समाया हुआ है। आज के दिन को कहते ही हैं स्मृति दिवस। बापदादा ने अमृतवेले से चारों ओर देखा, चाहे देश में, चाहे विदेश में सभी बच्चों के दिल में बाप के स्नेह की तस्वीर दिखाई दी। और बाप के दिल में भी हर एक बच्चे के स्नेह की तस्वीर समाई हुई थी। आज के दिन को विशेष स्नेह का, स्मृति का दिवस कहते हो। बापदादा ने अमृतवेले से भी पहले बच्चों के तरफ से अनेक स्नेह के मोतियों की मालायें देखी। हर एक बच्चे के दिल में ऑटोमेटिक यह गीत बज रहा है - "मेरा बाबा, ब्रह्मा बाबा, मीठा बाबा" और बापदादा के दिल में यह गीत बज रहा है "मीठे बच्चे, प्यारे बच्चे।" आज हर एक के अन्दर और शक्तियों के सिवाए स्नेह की शक्ति ज्यादा समाई हुई है। यह परमात्म स्नेह, ईश्वरीय स्नेह सिर्फ संगमयुग पर ही अनुभव होता है। यह परमात्म स्नेह अनुभवी ही जाने, जो हर एक बच्चे को सहजयोगी बना देता है। बापदादा ने देखा सर्व बच्चों में स्नेह का अनुभव बहुत-बहुत समाया हुआ है। आप सबके जन्म का आधार स्नेह है। ऐसा कोई भी बच्चा नहीं दिखाई देता, और शक्तियां कम भी हों लेकिन बाप का स्नेह या निमित्त बनी हुई विशेष आत्माओं के स्नेह का अनुभव मैजारिटी सभी के दिल में, चेहरे में दिखाई देता है। अभी आप सबको आज विशेष यहाँ तक किसने पहुंचाया? किस विमान में आये? ट्रेन में आये या विमान में आये? सबकी सूरत में स्नेह समाया हुआ है तो स्नेह के प्लेन से पहुंच गये ना। कुछ भी करना पड़ा लेकिन स्नेह के प्लेन में सभी पहुंच गये हो।

आज के दिन को स्मृति दिवस कहा जाता है लेकिन स्मृति दिवस के साथ-साथ समर्थी दिवस भी कहा जाता है। आज के दिन को ताजपोशी का दिन भी कहा जाता है क्योंकि आज के दिन बापदादा ने विशेष ब्रह्मा बाप ने निमित्त बने हुए महावीर बच्चों को विश्व सेवा का ताज पहनाया। ब्रह्मा बाप खुद अननोन हुए और बच्चों को विश्व सेवा के स्मृति का तिलक दिया। बच्चों को करनहार बनाया और स्वयं करावनहार बनें। अपने समान फरिश्ते रूप का वरदान देकर लाइट का ताज पहनाया और बापदादा ने जो ताज, तिलक का वरदान दिया, उसी प्रमाण बच्चों का कर्तव्य देख खुश है। बच्चों ने सेवा का वरदान कार्य में लाया, यह देख बापदादा खुश है। अभी तक जो पार्ट बजाया है और आगे भी बजाना है, उसकी पदमगुणा ब्रह्मा बाप विशेष मुबारक दे रहे हैं। वाह बच्चे वाह! विदेश में भी चक्र लगाया तो क्या देखा? हर बच्चा स्नेह में समाया हुआ है, तो बाप द्वारा समर्थियाँ मिली हैं क्योंकि यह दिन विशेष स्नेह से समर्थियों का वरदान प्राप्त करने का दिन है। बापदादा ने देखा कोई-कोई बच्चे बहुत अच्छे याद की लगन में, सेवा में लगे हुए हैं। अमृतवेला बहुत अच्छी रीति से अनुभव करते हैं। अशरीरीपन का भी अनुभव करते हैं लेकिन जब कर्मयोगी बनने का समय आता है तो दोनों काम योगी का भी और कर्म का भी, दो काम इकट्ठा करने में फर्क पड़ जाता है। पुरुषार्थ करते हैं कि कर्म और योग का बैलेन्स हो लेकिन जैसे अमृतवेले शक्तिशाली अवस्था का अनुभव करते हैं, वैसे कर्म में फर्क पड़ जाता है, मेहनत करनी पड़ती है और बापदादा ने सभी बच्चों को कह दिया है कि विश्व का विनाश अचानक होना है, अगर सारा दिन अटेन्शन के बजाए, किसी भी धारणा की कमी होने के कारण कर्मयोगी की स्टेज में फर्क आता है। तो विश्व के विनाश की डेट तो बापदादा अनाउन्स नहीं करेंगे लेकिन अपना जीवन काल समाप्त कब होना है, यह मालूम है? कोई को मालूम है कि मेरा मृत्यु फलानी डेट पर होना है, है मालूम? वह हाथ उठाओ। अचानक कुछ भी हो सकता है, कोई प्रकृति का कारण बनता है तो कितने का मृत्यु साथ में हो जाता है। तो विश्व के डेट के संकल्प से अलबेला नहीं बनना। आपकी जगदम्बा का स्लोगन था - तो कभी भी कब नहीं कहो, अब। कल कुछ भी हो जाए लेकिन मुझे एवरेडी रहना ही है। तो इतनी तैयारी सबके अटेन्शन में है? अपना कर्मों का हिसाब चुकू किया है? चार ही सबजेक्ट ज्ञान, योग, सेवा और धारणा, चार ही तरफ, चारों में ऐसी तैयारी है? पूरा बेहद के वैराग्य का अनुभव चेक किया है? अपनी दिल में यह चेक किया है कि एवरेडी हैं? नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप क्योंकि ब्रह्मा बाप ने भी स्वयं को पुरुषार्थ करके ऐसा बनाया जो अनुभवी बच्चों ने देखा, कोई भी तरफ यह वातावरण नहीं था, कोई हिसाब किताब का, अचानक अशरीरी बनने का अभ्यास अशरीरी बनाकर उड़ गये। कोई ने समझा कि ब्रह्मा बाप जाने वाले हैं? लेकिन नष्टोमोहा, बच्चों के हाथ में हाथ होते कहाँ आकर्षण रही? फरिश्ता बन गये। बच्चों को फरिश्ते बनाने का तिलक दे गये। इसका कारण बहुत समय अशरीरीपन का अभ्यास रहा। कई अनुभवी बच्चे जो साथ रहे हैं उन्होंने अनुभव किया, कर्म करते करते ऐसे अशरीरी बन जाते। तो यह जो कर्मयोग में अन्तर पड़ जाता है, इसका कारण कर्म करते यह स्मृति में इमर्ज नहीं होता, मैं आत्मा हूँ, यह तो सब जानते ही हैं लेकिन मैं आत्मा, कौन सी आत्मा हूँ? मैं करावनहार आत्मा हूँ और यह कर्मेन्द्रियां करनहार हैं, यह करावनहार का स्वमान कर्म करते स्मृति स्वरूप में रहे, चाहे कर्मेन्द्रियों से कर्म कराना है लेकिन मैं करावनहार हूँ, मालिक हूँ, इस सीट पर अगर सेट है तो कोई भी कर्मेन्द्रिय आर्डर में रहेगी। बिना सीट पर सेट होते कोई किसका नहीं मानता। तो करावनहार आत्मा हूँ, यह कर्मेन्द्रियां करनहार हैं, करावनहार नहीं हैं। जैसे ब्रह्मा बाप का अनुभव सुना कि ब्रह्मा बाप ने शुरू में यह अभ्यास किया जो रोज़ दिन की समाप्ति के समय इन कर्मेन्द्रियों की राज दरबार लगाते थे। पुराने बच्चों ने वह डायरी देखी होगी तो रोज़ दरबार लगाते थे और करावनहार मालिक बन हर कर्मेन्द्रियों का समाचार लेते थे, देते थे। इतना अटेन्शन शुरू में ही ब्रह्मा बाप ने भी दिया तो आपको भी करावनहार मालिक समझ कर्मेन्द्रियों से कर्म करवाना है क्योंकि आत्मा राजा है यह कर्मेन्द्रियां साथी हैं। तो यह चेक करना चाहिए कि आज के दिन विशेष मन-बुद्धि संस्कार, स्वभाव कहो संस्कार कहो इन्हों का क्या हाल रहा? और फौरन चेक करने से कर्मेन्द्रियों को अटेन्शन रहता है कि हमारा राजा हमारा हालचाल लेगा, तो आत्मा राजा करनहार कर्मेन्द्रियों से करावनहार बन चेक करो। नहीं तो देखा गया है कई बच्चे कहते हैं कि हम कर्मेन्द्रियों को आर्डर करते हैं लेकिन फिर हो जाता है। पुरुषार्थ करते हैं लेकिन कोई-कोई संस्कार या स्वभाव आर्डर में नहीं रहते। उसका कारण इस अपने स्वमान की सीट पर सेट नहीं रहते। बिना सीट पर बैठने के आर्डर कितना भी करो तो आर्डर मानने वाले मानते नहीं हैं। तो कर्म करते अपने करावनहार मालिकपन की सीट पर सेट रहो। कई बच्चे यह भी बापदादा से रूहरिहान करते कि बाबा आपने हमें सर्व शक्तिवान बनाया, शक्तिवान भी नहीं सर्वशक्तिवान का वरदान हर एक बच्चे को ब्राह्मण जन्म लेते हुए दिया है, याद है अपने जन्म का वरदान! हर एक बच्चे को बाप ने मास्टर सर्वशक्तिवान भव का वरदान दिया है। किसने वरदान दिया? आलमाइटी अथॉरिटी ने। लेकिन कम्पलेन करते हैं कि जिस समय जो शक्ति चाहिए वह आती नहीं है। आर्डर नहीं मानती है। वह क्यों? जब आलमाइटी अथॉरिटी का वरदान है, उससे बड़ा कोई नहीं। तो वरदान के स्थिति में स्थित रहकरके अगर आर्डर करो तो हो नहीं सकता कि आप आर्डर करो और शक्ति नहीं मानें। एक तो आत्मा मालिक है, सर्वशक्तिवान का वरदान मिला हुआ है, उस स्वरूप में स्थित होके मालिक हूँ, वरदान है, दोनों स्वरूप की स्मृति के स्थिति में रहके आर्डर करो। शक्ति आपका नहीं मानें असम्भव क्योंकि वरदान और बाप के प्रापटी का अधिकार है। संगमयुग पर आप सबको सर्वशक्तिवान का टाइटिल मिला है सिर्फ उस स्थिति में स्थित नहीं रहते, सदा नहीं रहते। कभी-कभी आ जाता है। यह कभी शब्द अपने ब्राह्मण डिक्शनरी से निकाल दो। अभी अभी हाज़िर। आप कहते हो ना कि बाबा आपको हम याद करते हैं तो आप हाज़िर हो जाते हैं। है अनुभव? हाथ उठाओ। अनुभव है? अभी देखो, हाथ तो उठा रहे हो। बाप हाज़िर हो जाता,

हज़ूर हाज़िर हो जाता, तो यह शक्ति क्या है? यह शक्तियां भी आपको बाप के प्रापर्टी में मिली हैं। तो मालिक बनके आर्डर करो। मालिक बनके आर्डर नहीं करते हो, शक्ति खो जाती है ना तो उसी स्थिति में रहते हुए आर्डर करते हो, तो मालिक ही नहीं है आर्डर क्यों मानें!

तो बापदादा अभी क्या चाहते हैं? पता है ना! बाप अभी यही चाहते हैं कि मेरा एक-एक बच्चा कर्म करते हुए भी राजा बच्चा बन, स्वराज्य अधिकारी बन स्वराज्य की सीट को नहीं छोड़े। तो राजा सारा दिन राजा ही होता है ना! कि कभी राजा होता है, कभी नहीं। तख्त पर बैठना या नहीं बैठना वह अलग बात है लेकिन घर में भी रहते मैं राजा हूँ, यह तो नहीं भूलता। तो कर्मयोगी और अमृतवेले के यथार्थ योग शक्तिशाली स्थिति उसमें फर्क नहीं पड़ना चाहिए। डबल काम है लेकिन आप कौन हो? आप तो विश्व के परिवर्तक हो, विश्व कल्याणकारी हो। इसलिए बाप यही चाहते कि चलते-फिरते राजापन नहीं भूलो, सीट को नहीं छोड़ो। बिना सीट के कोई आर्डर नहीं मानता। आजकल देखो सीट के पीछे कितना कुछ करते हैं? अपना हक लेने के लिए कितना प्रयत्न करते। अपना हक कोई छोड़ने नहीं चाहता। तो आप अपना परमात्म हक मैं कौन! हर समय जो काम करते हो तो काम करते भी अपने मन का टाइमटेबल बनाके रखो। यह काम करते हुए मन का स्वमान क्या रहेगा? आज के दिन कौन सा लक्ष्य रखूंगा? हर काम के टाइम जो भी अपने स्वमान की लिस्ट है, भले भिन्न-भिन्न टाइमटेबल बनाओ जैसे स्थूल कर्म का टाइमटेबल फिक्स करते हो वैसे मन का टाइमटेबल फिक्स करो। मालूम तो है इस समय यह काम करना है, उसके साथ स्वमान कौन सा रखना है? मालिकपन का अधिकार किस स्वमान के रूप में रखना है, यह मन का टाइमटेबल बनाओ। टाइमटेबल बनाने आता है ना! माताओं को आता है? मातायें अपना आपेही प्रोग्राम बनाओ। अच्छा खाना बनाना है, उस समय कौन सा स्वमान अपनी बुद्धि में इमर्ज रखना है। बहुत माला है स्वमान की। इतनी बड़ी माला है जो स्वमान गिनती करते जाओ और माला में समा जाओ। तो अभी बहुतकाल का अभ्यास चाहिए। कोई-कोई बच्चे कहते हैं, अभी तक तो विनाश का कुछ दिखाई नहीं देता है। अभी तो डेट फिक्स नहीं है, कर लेंगे, हो जायेगा, यह अलबेलापन है। सन्देश देने में भी विश्व कल्याणकारी हैं, तो कई बच्चे समझते हैं अभी समय पड़ा है, आगे चलके सन्देश दे देंगे, लेकिन नहीं। जिनको पीछे सन्देश देंगे वह भी आपको उलहना देंगे, क्या उलहना देंगे? आपने पहले क्यों नहीं बताया तो हम भी कुछ कर लेते थे, अभी आपने लास्ट में बताया। तो हम तो सिर्फ पहचान कर अहो प्रभू तेरी लीला अपार है, यही कह सकेंगे। पद तो पा नहीं सकेंगे। क्यों? बहुत समय का भी सहयोग चाहिए। आप सभी वारिस बैठे हो ना! जो अपने को समझते हैं हम वारिस हैं, वह हाथ उठाओ, वारिस हैं? अच्छा, वारिस हैं तो आपको फुल वर्सा पाना है या थोड़ा? सभी कहेंगे फुल वर्सा पाना है। तो फुल वर्सा है 21 जन्म पूरे, आदि से अन्त तक रॉयल प्रजा नहीं, रॉयल फैमिली में आना। राज्य फैमिली में आना। तख्त पर तो एक ही बैठेंगे ना, युगल बैठेंगे। लेकिन वहाँ की सभा जब भी लगती है तो रॉयल फैमिली के विशेष निमित्त आत्मायें वह ताजधारी बनके बैठते हैं। बिना ताज नहीं बैठते हैं। और हर कार्य में सलाह, राय देने वाले, ऐसे नहीं कि सिर्फ वह राज्य करेगा, साथ में राय से ही करते हैं इसलिए अगर सम्पूर्ण वर्सा लेना है तो पहले जन्म से लेके अन्त तक 21 जन्म पूरे, आधे भी नहीं, बीच में तो जाना नहीं है, अकाले मृत्यु तो होना नहीं है। तो पूरा वर्सा लेना है कि थोड़े में खुश होना है? आपकी मातेश्वरी जगत अम्बा सदा यह लक्ष्य रखती थी बापदादा ने जो श्रीमत दी चाहे मन्सा, चाहे वाचा, चाहे कर्मणा, जो भी श्रीमत दी वह हमें करना ही है। ऐसे पूरा वर्सा लेने वाले यही लक्ष्य बुद्धि में रखो कि अचानक, एवररेडी और बहुत समय, तीनों ही शब्द साथ में याद रखो इसलिए बापदादा का सभी आशाओं के दीपक बच्चों प्रति यही वरदान है कि सदा यह तीनों ही शब्द याद रखकर सभी आशाओं के दीपक बनने का प्रत्यक्ष सबूत दिखाओ।

बापदादा ने देखा बच्चों ने भिन्न-भिन्न प्रकार के कोर्स बनाये हैं। अच्छा है, बापदादा मुबारक देते हैं लेकिन अब समय प्रमाण कोर्स के बजाए फोर्स का कोर्स कराओ। ऐसा फोर्स का कोर्स कराओ जो वह आत्मायें बाप के सिर्फ स्नेही-सहयोगी नहीं बनें लेकिन हर श्रीमत को पालन करने वाली, सर्व फोर्स भरने वाली आत्मा बनें, समीप का रत्न बनें। यह हो सकता है? अभी फोर्स का कोर्स कराओ क्योंकि बापदादा देख रहे हैं कि अभी प्रकृति हलचल में आ गई है इसलिए कोई न कोई कारण से प्रकृति की हलचल अपना प्रभाव दिखा रही है और दिखाती रहेगी। जो ख्याल ख्वाब में बातें नहीं हैं वह प्रैक्टिकल देखते चलेंगे। तो प्रकृति को भी सतोप्रधान बनाना है। अभी तो अपने-अपने प्रभाव डाल रही है, इसलिए समय प्रति समय नई-नई बातें होती रहती हैं। लेकिन आप सब तो वारिस हो ना! सिर्फ स्नेही सहयोगी नहीं वारिस, फुल अधिकारी। है? वारिस हैं ना! वारिस है! डबल फारेनर्स भी वारिस हैं ना! वारिस है? फुल वर्सा लेने वाले। अधूरा नहीं। पाण्डव फुल वर्सा लेने वाले हो?

तो बापदादा की आशा का दीपक हूँ, यही याद रखो। स्मृति दिवस पर हर एक बच्चा चाहे आये हैं, चाहे अभी नहीं आये हैं, चाहे दूर बैठे दिल में समाये हुए हैं, हर एक को बापदादा की यह आज्ञा, बनना और मानना है कि मुझे कभी शब्द नहीं कहना है। अभी-अभी, कल भी किसने देखा, आज। जो करना है वह करना ही है, सोचना नहीं।

सोचेंगे, करेंगे, हो जायेगा, यह बाप को भी दिलासा देते हैं। बाबा आप ख्याल नहीं करो हम समय पर ठीक हो जायेंगे। लेकिन बापदादा यही चाहते कि अभी-अभी कोई भी पेपर आ जाए तो हर एक बच्चा फुल पास हो जाए। हो सकता है? हो सकता है? फुल पास होना है? अच्छा।

सेवा का टर्न भोपाल ज़ोन का है:- बापदादा को हर एक ज़ोन की सेवा का उमंग-उत्साह देख खुशी होती है और चांस भी सभी अच्छी तरह से लेते रहते हैं क्योंकि जानते हो कि सेवा का मेवा मिलता है। लेकिन बापदादा अभी फास्ट आगे बढ़ने की चाहना रखते हैं, इसके लिए निर्विघ्न ज़ोन, हर ज़ोन में जितने भी सेवाकेन्द्र हैं, उपसेवाकेन्द्र हैं लेकिन हर एरिया में निर्विघ्न सेवाकेन्द्र हो। हर एक में तीव्र पुरुषार्थ की लहर हो। अच्छा।

डबल विदेशियों से:- अभी बापदादा ने जो इशारा दिया, पुरुषार्थ को तीव्र करो। पुरुषार्थ नहीं, पुरुषार्थ का समय गया, अभी तीव्र पुरुषार्थ का समय है। और कभी-कभी पर नहीं ठहरो अभी। अभी करना है, अभी बनना है। तो होना ही है। अच्छा।

चारों ओर के तीव्र पुरुषार्थी सदा उमंग-उत्साह से कदम आगे बढ़ाने वाले, जो सच्ची दिल से करते हैं उनके मस्तक पर विजय का तिलक बापदादा देख रहे हैं, सभी को निश्चय है, नशा है तो हम विजयी हैं, विजयी थे और विजयी रहेंगे, इसलिए हर एक के मस्तक में बापदादा विजय का तिलक देख रहे हैं। चारों ओर के स्नेही भी हैं, आज अमृतवेले से बहुत-बहुत स्नेह की मालायें बापदादा के पास आईं और बापदादा आप सभी बच्चों को रिटर्न में सदा विजयी बनने की माला डाल रहे हैं। तो चारों ओर के बच्चे देख भी रहे हैं क्योंकि साइंस ने यह सब साधन आपके लिए भी बनाये हैं, जो कहाँ भी बैठे देख सकते हो, सुन सकते हो, तो बापदादा देख रहे हैं, जगह-जगह पर कैसे देख भी रहे हैं और सुन भी रहे हैं, तो चारों ओर के बच्चों को बापदादा स्मृति दिवस की यादप्यार दे रहे हैं। बापदादा के दिल में हर बच्चा समाया हुआ है और हर बच्चे की दिल में बाप समाया है, बाप की दिल में बच्चा समाया है, तो मुबारक हो, मुबारक हो और मुबारक के साथ नमस्ते भी।

***** Om Shanti *****

30-1-21 ओम् शान्ति मधुबन

प्राणप्यारे अव्यक्तमूर्त मात-पिता बापदादा के अति स्नेही, सदा अपनी सम्पूर्ण पवित्रता की धारणा द्वारा महानता का अनुभव करने वाले, मन्सा सकाश द्वारा सुख शान्ति की अंचली देने वाले, विश्व सेवा के निमित्त बनी हुई निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - आप सभी विशेष अन्तर्मुखी, एकान्तवासी बन अव्यक्त पालना का अनुभव कर रहे होंगे! इस अव्यक्ति मास में सभी ने बहुत अच्छी तपस्या की है। आगे भी पूरा वर्ष सभी को ऐसी ही शक्तिशाली तपस्या करनी है। यह तपस्या ही स्व-परिवर्तन और विश्व परिवर्तन का आधार बनेगी।

अभी तो मीठा बाबा भी हम बच्चों को इशारा दे रहे हैं कि बच्चे वर्तमान समय विश्व में चारों ओर हलचल का वायुमण्डल है, ऐसे वायुमण्डल के बीच आप बच्चे अपनी अचल अडोल एकरस स्थिति में रह मन्सा सकाश द्वारा शान्ति और शक्ति के प्रकम्पन्न फैलाने की सेवा करो। हलचल के समाचारों को सुनते क्यों, क्या के प्रश्नों में जाने के बजाए, नथिंगन्यु की स्मृति से फुलस्टाप लगाना। मन-वचन-कर्म की सम्पूर्णता पवित्रता को धारण कर शुभ भावना, शुभ कामना सम्पन्न बनना है। अब बेहद की वैराग्य वृत्ति को धारण कर, बेहद की भावनायें रख स्व-परिवर्तन और विश्व परिवर्तन के महान कार्य को सम्पन्न करना है। बोलो, ऐसा ही लक्ष्य रख सभी तीव्र पुरुषार्थ की उड़ान भरते अपनी ऊंची स्थिति में स्थित हो ना!

देखो, बापदादा कैसे अव्यक्त वतन से हम बच्चों को सर्व शक्तियों से सम्पन्न बनाने के लिए अपनी सूक्ष्म सकाश द्वारा कितनी वन्दरफुल पालना कर रहे हैं। बाबा के बेहद घर में जो भी बच्चे आते हैं सभी हर प्रकार से भरपूर हो खूब उमंग-उत्साह भरकर जाते हैं। यह ऑनलाइन मिलन भी हर एक को सम्मुख की अनुभूति करा रहा है। अभी इन्दौर ज़ोन (कमला बहन) का ग्रुप शान्तिवन में बहुत अच्छी अनुभूतियां कर रहा है। साथ-साथ तीनों ही स्थानों पर ग्रुप वाइज़ योग तपस्या भट्टी के कार्यक्रम भी चल रहे हैं।

अच्छा - सभी को बहुत-बहुत याद.... ओम् शान्ति

30-1-21 ओम् शान्ति "अव्यक्त-बापदादा" रिवाइज 30-11-08 मधुबन

" फुलस्टाप लगाकर , सम्पूर्ण पवित्रता की धारणा कर , मन्सा सकाश द्वारा सुख-शान्ति की अंचली देने की सेवा करो "

आज बापदादा चारों ओर के महान बच्चों को देख रहे हैं। क्या महानता की? जो दुनिया असम्भव कहती है उसको सहज सम्भव कर दिखाया, वह है पवित्रता का व्रत। आप सभी ने पवित्रता का व्रत धारण किया है ना! बापदादा से परिवर्तन के दृढ़ संकल्प का व्रत लिया है। व्रत करना अर्थात् वृत्ति का परिवर्तन करना। क्या वृत्ति परिवर्तन की? संकल्प किया हम सब भाई-भाई हैं, इस वृत्ति परिवर्तन के लिए भक्ति में भी कितनी बातों में व्रत लेते हैं लेकिन आप सबने बाप से दृढ़ संकल्प किया क्योंकि ब्राह्मण जीवन का फाउण्डेशन है पवित्रता और पवित्रता द्वारा ही परमात्म प्यार और सर्व परमात्म प्राप्तियां हो रही हैं। महात्मा जिसको कठिन समझते हैं, असम्भव समझते हैं और आप पवित्रता को स्वधर्म समझते हो। बापदादा देख रहे हैं कई अच्छे अच्छे बच्चे हैं जिन्होंने संकल्प किया और दृढ़ संकल्प द्वारा प्रैक्टिकल में परिवर्तन दिखा रहे हैं। ऐसे चारों ओर के महान बच्चों को बापदादा बहुत-बहुत दिल से दुआयें दे रहे हैं।

आप सभी भी मन-वचन-कर्म, वृत्ति दृष्टि द्वारा पवित्रता का अनुभव कर रहे हो ना! पवित्रता की वृत्ति अर्थात् हर एक आत्मा प्रति शुभ भावना, शुभ कामना। दृष्टि द्वारा हर एक आत्मा को आत्मिक स्वरूप में देखना, स्वयं को भी सहज सदा आत्मिक स्थिति में अनुभव करना। ब्राह्मण जीवन का महत्व मन-वचन-कर्म की पवित्रता है। पवित्रता नहीं तो ब्राह्मण जीवन का जो गायन है - सदा पवित्रता के बल से स्वयं भी स्वयं को दुआ देते हैं, क्या दुआ देते? पवित्रता द्वारा सदा स्वयं को भी खुश अनुभव करते और दूसरों को भी खुशी देते। पवित्र आत्मा को तीन विशेष वरदान मिलते हैं - एक स्वयं स्वयं को वरदान देता, जो सहज बाप का प्यारा बन जाता। 2-वरदाता बाप का नियरेस्ट और डियरेस्ट बच्चा बन जाता इसलिए बाप की दुआयें स्वतः प्राप्त होती हैं और

सदा प्राप्त होती हैं। तीसरा - जो भी ब्राह्मण परिवार के विशेष निमित्त बने हुए हैं, उन्हीं द्वारा भी दुआयें मिलती रहती। तीनों की दुआओं से सदा उड़ता रहता और उड़ता रहता। तो आप सभी भी अपने से पूछो, अपने को चेक करो तो पवित्रता का बल और पवित्रता का फल सदा अनुभव करते हो? सदा रूहानी नशा, दिल में फलक रहती है? कभी-कभी कोई-कोई बच्चे जब अमृतवेले मिलन मनाते हैं, रूहरिहान करते हैं तो मालूम है क्या कहते हैं? पवित्रता द्वारा जो अतीन्द्रिय सुख का फल मिलता है वह सदा नहीं रहता। कभी रहता है, कभी नहीं रहता क्योंकि पवित्रता का फल ही अतीन्द्रिय सुख है। तो अपने से पूछो मैं कौन हूँ? सदा अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति में रहते वा कभी-कभी? अपने को कहलाते क्या हो? सभी अपना नाम लिखते तो क्या लिखते हो? बी.के. फलाना.., बी.के. फलानी और अपने को मास्टर सर्वशक्तिवान कहते हो। सब मास्टर सर्वशक्तिवान हैं ना! जो समझते हैं हम मास्टर सर्वशक्तिवान हैं, सदा, कभी-कभी नहीं, वह हाथ उठाओ। सदा? देखना, सोचना, सदा हैं? डबल फारेनर्स नहीं हाथ उठा रहे हैं, थोड़े उठा रहे हैं। टीचर्स उठाओ, हैं सदा? ऐसे ही नहीं उठाओ, जो सदा हैं, वह सदा वाले उठाओ। बहुत थोड़े हैं। पाण्डव उठाओ, पीछे वाले, बहुत थोड़े हैं। सारी सभा नहीं हाथ उठाती। अच्छा मास्टर सर्वशक्तिवान हैं तो उस समय शक्तियां कहाँ चली जाती? मास्टर हैं, इसका अर्थ ही है, मास्टर तो बाप से भी ऊंचा होता है। तो चेक करो - अवश्य प्युरिटी के फाउण्डेशन में कुछ कमजोर हो। क्या कमजोरी है? मन में अर्थात् संकल्प में कमजोरी है, बोल में कमजोरी है या कर्म में कमजोरी है, या स्वप्न में भी कमजोरी है क्योंकि पवित्र आत्मा का मन-वचन-कर्म, सम्बन्ध-सम्पर्क, स्वप्न स्वतः शक्तिशाली होता है। जब व्रत ले लिया, वृत्ति को बदलने का, तो कभी कभी क्यों? समय को देख रहे हो, समय की पुकार, भक्तों की पुकार, आत्माओं की पुकार सुन रहे हो और अचानक का पाठ तो सबको पक्का है। तो फाउण्डेशन की कमजोरी अर्थात् पवित्रता की कमजोरी। अगर बोल में भी शुभ भावना, शुभ कामना नहीं, पवित्रता के विपरीत है तो भी सम्पूर्ण पवित्रता का जो सुख है अतीन्द्रिय सुख, उसका अनुभव नहीं हो सकता क्योंकि ब्राह्मण जीवन का लक्ष्य ही है असम्भव को सम्भव करना। उसमें जितना और उतना शब्द नहीं आता। जितना चाहिए उतना नहीं है। तो कल अमृतवेले विशेष हर एक अपने को चेक करना, दूसरे को नहीं सोचना, दूसरे को नहीं देखना, लेकिन अपने को चेक करना कि कितनी परसेन्टेज में पवित्रता का व्रत निभा रहे हैं? चार बातें चेक करना - एक वृत्ति, दूसरा - सम्बन्ध-सम्पर्क में शुभ भावना, शुभ कामना, यह तो है ही ऐसा, नहीं। लेकिन उस आत्मा प्रति भी शुभ भावना। जब आप सबने अपने को विश्व परिवर्तक माना है, हैं सभी? अपने को समझते हैं कि हम विश्व परिवर्तक हैं? हाथ उठाओ। इसमें तो बहुत अच्छे हाथ उठाये हैं, मुबारक हो। लेकिन बापदादा आप सभी से एक प्रश्न पूछते हैं? प्रश्न पूछें? जब आप विश्व परिवर्तक हो तो विश्व परिवर्तन में यह प्रकृति, 5 तत्व भी आ जाते हैं, उन्हीं को परिवर्तन कर सकते और अपने को या साथियों को, परिवार को परिवर्तन नहीं कर सकते? विश्व परिवर्तक अर्थात् आत्माओं को, प्रकृति को, सबको परिवर्तन करना। तो अपना वायदा याद करो, सभी ने बाप से वायदा कई बार किया है लेकिन बापदादा यही देख रहे हैं कि समय बहुत फास्ट आ रहा है, सबकी पुकार बहुत बढ़ रही है, तो पुकार सुनने वाले और परिवर्तन करने वाले उपकारी आत्मायें कौन हैं? आप ही हो ना!

बापदादा ने पहले भी सुनाया है, पर उपकारी वा विश्व उपकारी बनने के लिए तीन शब्द को खत्म करना पड़ेगा - जानते तो हो। जानने में तो होशियार हो, बापदादा जानता है सभी होशियार हैं। एक पहला शब्द है परचिंतन, दूसरा है परदर्शन और तीसरा है परमत, इन तीनों ही पर शब्द को खत्म कर, पर उपकारी बनेंगे। यह तीन शब्द ही विघ्न रूप बनते हैं। याद हैं ना! नई बात नहीं है। तो कल चेक करना अमृतवेले, बापदादा भी चक्कर लगाता है, देखेंगे क्या कर रहे हो? क्योंकि अभी आवश्यकता है - समय प्रमाण, पुकार प्रमाण हर एक दुःखी आत्मा को मन्सा सकाश द्वारा सुख शान्ति की अंचली देने का। कारण क्या है? बापदादा कभी-कभी बच्चों को अचानक देखते हैं, क्या कर रहे हैं? क्योंकि बच्चों से प्यार तो है ना, और बच्चों के साथ जाना है, अकेला नहीं जाना है। साथ चलेंगे ना! साथ चलेंगे? यह आगे वाले नहीं उठा रहे हैं? नहीं चलेंगे? चलना है ना! बापदादा भी बच्चों के कारण इन्तजार कर रहे हैं, एडवांस पार्टी आपकी दादियां, आपके विशेष पाण्डव, आप सबका भी इन्तजार कर रहे हैं, उन्हीं ने भी दिल में पक्का वायदा किया है कि हम सब साथ में चलेंगे। थोड़े नहीं, सबके सब साथ चलेंगे। तो कल अमृतवेले अपने को चेक करना कि किस बात की कमी है? क्या मन्सा की, वाणी की वा कर्मणा में आने की। बापदादा ने एक बारी सभी सेन्टर्स का चक्कर लगाया। बतायें क्या देखा? कमी किस बात की है? तो यही दिखाई दिया कि एक सेकण्ड में परिवर्तन कर फुलस्टाप लगाना, इसकी कमी है। जब तक फुलस्टाप लगाओ तब तक पता नहीं क्या क्या हो जाता है। बापदादा ने सुनाया है कि एक लास्ट टाइम की लास्ट एक घड़ी होगी जिसमें फुलस्टाप लगाना पड़ेगा। लेकिन देखा क्या? लगाना फुलस्टाप है लेकिन लग जाता है क्रामा, दूसरों की बातें याद करते, यह क्यों होता, यह क्या होता, इसमें आश्चर्य की मात्रा लग जाती। तो फुलस्टाप नहीं लगता लेकिन क्रामा, आश्चर्य की निशानी और क्यू, क्वेश्चन की क्यू लग जाती है। तो इसको चेक करना। अगर फुलस्टाप लगाने की आदत नहीं होगी तो अन्त मते सो गति श्रेष्ठ नहीं होगी। ऊंची नहीं होगी। इसलिए बापदादा होमवर्क दे रहे हैं कि खास कल अमृतवेले चेक करना और चेंज करना पड़ेगा। एक सप्ताह सेकण्ड में फुलस्टाप लगाने का बार-बार अभ्यास करो। अभी फास्ट तीव्र पुरुषार्थ करो। अभी ढीला-ढाला पुरुषार्थ सफलता नहीं दिला सकेगा।

प्युरिटी को पर्सनेलिटी, रीयल्टी, रॉयल्टी कहा जाता है। तो अपनी रॉयल्टी को याद करो। अनादि रूप में भी आप आत्मायें बाप के साथ अपने देश में विशेष आत्मायें हो। जैसे आकाश में विशेष सितारे चमकते हैं ऐसे आप अनादि रूप में विशेष सितारा चमकते हो। तो अपने अनादि काल की रॉयल्टी याद करो। फिर सतयुग में जब आते हैं तो देवता रूप की रॉयल्टी याद करो। सभी के सिर पर रॉयल्टी की लाइट का ताज है। अनादि, आदि कितनी रॉयल्टी है। फिर द्वापर में आओ तो भी आपके चित्रों जैसी रॉयल्टी और किसकी नहीं है। नेताओं के, अभिनेताओं के, धर्म आत्माओं के चित्र बनते हैं लेकिन आपके चित्रों की पूजा और आपके चित्रों की विशेषता कितनी रॉयल है। चित्र को देखकर ही सब खुश हो जाते हैं। चित्रों द्वारा भी कितनी दुआयें लेते हैं। तो यह सब रॉयल्टी पवित्रता की है। पवित्रता ब्राह्मण जीवन का जन्म सिद्ध अधिकार है। पवित्रता की कमी समाप्त होना चाहिए। ऐसे नहीं हो जायेगा, उस समय वैराग्य आ जायेगा तो हो जायेगा, बातें बहुत अच्छी-अच्छी सुनाते हैं। बाबा आप फिर नहीं करो हो जायेगा। पवित्रता सिर्फ ब्रह्मचर्य नहीं, व्यर्थ संकल्प भी अपवित्रता है। व्यर्थ बोल, व्यर्थ बोल रोब के, जिसको कहते हैं क्रोध का अंश रोब, वह भी समाप्त हो जाए। संस्कार ऐसे बनाओ जो दूर से ही आपको देख पवित्रता के वायब्रेशन लें क्योंकि आप जैसी पवित्रता, जो रिजल्ट में आत्मा भी पवित्र, शरीर भी पवित्र, डबल पवित्रता प्राप्त है।

जब भी कोई भी बच्चा पहले आता है तो बाप का वरदान कौन सा मिलता है? याद है? पवित्र भव, योगी भव। तो दोनों बातें - एक पवित्रता और दूसरा फुलस्टाप, योगी। पसन्द है? बापदादा अमृतवेले चक्र लगायेंगे, सेन्ट्रों के भी चक्र लगायेंगे। बापदादा तो एक सेकण्ड में चारों ओर का चक्र लगा सकता। सभी उल्लहना देते हैं बाबा अव्यक्त क्यों हुआ? तो बापदादा भी उल्लहना देता है कि साकार में होते बाप समान कब तक बनेंगे। तो आज थोड़ा सा विशेष अटेन्शन खिंचवा रहे हैं। प्यार भी कर रहे हैं, सिर्फ अटेन्शन नहीं खिंचवा रहे हैं, प्यार भी है क्योंकि बाप यही चाहते हैं कि मेरा एक बच्चा भी रह नहीं जाए। हर कर्म की श्रीमत चेक करना, अमृतवेले से लेके रात तक जो भी हर कर्म की श्रीमत मिली है वह चेक करना। मंजूर है ना! साथ चलना है ना! चलना है तो हाथ उठाओ। चलना है? अच्छा, टीचर्स? पीछे वाले, कुर्सी वाले, पाण्डव हाथ उठाओ। तो समान बनेंगे तब तो हाथ में हाथ देकर चलेंगे ना! करना ही है, बनना ही है, यह टढ़ संकल्प करो। अच्छा!

सेवा का टर्न इन्दौर ज़ोन (कमला बहन) का है:- अच्छा है, यह चांस जो मिलता है वह अच्छा लगता है? स्पेशल है। ठीक है। संख्या तो बहुत है, एक निर्विघ्न बनो और दूसरा सेवा में शान्ति का झण्डा लहराओ। सबको दिखाई दे झण्डा कि हाँ अशान्ति के स्थान में शान्ति का झण्डा लहर रहा है। ठीक है। अच्छा।

डबल फारेनर्स: - अभी डबल विदेशी नहीं, अभी डबल तीव्र पुरुषार्थी। ठीक है ना। डबल है? डबल पुरुषार्थी हैं? अच्छा है। डबल पुरुषार्थी अच्छा पुरुषार्थ करके बढ़ रहे हैं लेकिन बाबा चार्ट देखेगा। जो कहा है ना समाचार देना, बापदादा वह चार्ट सम्पूर्ण पवित्रता का देखेंगे। लक्ष्य सबका बहुत अच्छा है लेकिन बीच में अलबेलेपन की माया बहुत आती है। अभी उसकी विदाई करना। अलबेलेपन की विदाई और फुलस्टाप का आह्वान। ठीक है ना, करेंगे ना। अलबेलापन नहीं दिखाना। बापदादा ने अलबेलेपन के बहुत खेल देख लिये हैं। अभी सेकण्ड में फुलस्टाप का खेल दिखाना। हिसाब में भी देखो तो सबसे सहज फुलस्टाप है। पेन्सिल रखो फुलस्टाप आ गया। अच्छा। डबल विदेशी सदा टर्न लेते रहते हैं, यह बहुत अच्छा है, लेते रहना। अच्छा।

चारों ओर के महान पवित्र आत्माओं को बापदादा का विशेष दिल की दुआयें, दिल का प्यार और दिल में समाने की मुबारक हो। बापदादा जानते हैं कि जब भी पधरामनी होती है तो ईमेल या पत्र भिन्न-भिन्न साधनों से चारों ओर के बच्चे यादप्यार भेजते हैं और बापदादा को सुनाने के पहले कोई देवे, उसके पहले ही सबके यादप्यार पहुंच जाते हैं क्योंकि ऐसे जो सिक्कीलधे याद करने वाले बच्चे हैं उनका कनेक्शन बहुत फास्ट पहुंचता है, आप लोग तीन चार दिन के बाद सम्मुख मिलते हो लेकिन उन्हीं का यादप्यार जो सच्चे पात्र आत्मायें हैं उनका उसी घड़ी बापदादा के पास यादप्यार पहुंच जाता है। तो जिन्होंने भी दिल में भी याद किया, साधन नहीं मिला, उन्हीं का भी यादप्यार पहुंचा है, और बापदादा हर एक बच्चे को पदम पदम पदम गुणा यादप्यार का रेसपान्ड दे रहे हैं। बाकी चारों ओर अभी दो शब्द की लात-तात लगाओ - एक फुलस्टाप और दूसरा सम्पूर्ण पवित्रता सारे ब्राह्मण परिवार में फैलानी है। जो कमजोर हैं उनको भी सहयोग देके बनाओ। यह बड़ा पुण्य है। छोड़ नहीं दो, यह तो है ही ऐसा, यह तो बदलना ही नहीं है, यह श्राप नहीं दे दो, पुण्य का काम करो। बदलके दिखायेंगे, बदलना ही है। उनकी उम्मीदें बढ़ाओ, गिरे हुए को गिराओ नहीं, सहारा दो, शक्ति दो। तो चारों ओर के खुशानसीब खुशमिजाज, खुशी बांटने वाले बच्चों को बहुत-बहुत यादप्यार और नमस्ते।

*** Om Shanti ***

13-02-21 ओम् शान्ति "दिनचर्या" मधुबन

प्राणप्यारे अव्यक्त बापदादा के अति स्नेही, सर्व अविनाशी खजानों से सम्पन्न, अपनी चलन और चेहरे द्वारा परमात्म प्रत्यक्षता के निमित्त बनी हुई सभी टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सभी तीव्र पुरुषार्थी, अथक सेवाधारी भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - संगमयुग पर मीठा बाबा अपने बच्चों को अनुभवों की अर्थो रिटी बनाने के लिए सर्व खजानों से सम्पन्न बना रहे हैं। यही समय है स्वयं को हर खजाने से भरपूर करने का। बाबा कहे बच्चे, एक तो अपने पुरुषार्थ से अच्छे से अच्छी प्रालब्ध बना लो। दूसरा, सदा सन्तुष्ट रह सबको सन्तुष्ट करके दुआओं का खाता जमा कर लो। तीसरा, गुप्त दान करके पुण्य की पूंजी जमा कर लो। इसके लिए आज बाबा ने बच्चों को बहुत अच्छी-अच्छी विधियां बताई हैं। आप सभी बाबा के इन महावाक्यों को सुनते ऐसा ही अनुभव करते होंगे जैसे अभी के समय प्रमाण बापदादा वतन से अपनी दिव्य पालना देकर बच्चों को सम्पन्न और समान बना रहे हैं। मधुबन में आने वाले सभी भाई बहिनें ऐसा ही अनुभव करते जैसे सम्मुख में बापदादा हम बच्चों को नज़र से निहाल कर, वरदानों से झोली भर रहे हैं।

यह ग्रुप महाराष्ट्र के भाई बहिनों का है। बाकी देश विदेश में दूर बैठे भी सभी सम्मुख का अनुभव करते, खूब रिफ्रेश हो रहे हैं। मीठे बाबा ने यह समय विशेष अपनी स्व-स्थिति एकरस अचल अडोल बनाने के लिए, अन्तर्मुखी बन तपस्या करने के लिए दिया है। यह पूरा 2021 का वर्ष हम सबको विशेष तपस्या करनी है। इस बार मधुबन में भी नये जिज्ञासुओं के लिए कोई कार्यक्रम नहीं रखे गये हैं। बाबा के बच्चे मधुबन के तीनों स्थानों पर विशेष स्व-उन्नति निमित्त योग तपस्या करने आते रहेंगे। सेवाकेन्द्रों पर भी ऐसी ही तपस्या की लहर चलती रहे तो सब प्रकार के विघ्न स्वतः समाप्त हो जायेंगे और अनेक आत्माओं को सुख-शान्ति की सकाश मिलती रहेगी। अच्छा - सभी को बहुत-बहुत याद.. ओम् शान्ति।

13-02-21 ओम् शान्ति "अव्यक्त-बापदादा" वीडियो-रिवाइज 24-03-09 मधुबन

"बापदादा द्वारा मिले हुए खजानों को स्वयं में समाकर कार्य में लगाओ, अनुभव की अर्थो रिटी बनो"

आज चारों ओर के सर्व खजाने जमा करने वाले सम्पन्न बच्चों को देख रहे हैं। साथ-साथ हर एक बच्चे ने कहाँ तक सर्व खजाने जमा किये हैं, उसकी रिजल्ट देख रहे थे। खजाने तो बापदादा द्वारा बहुत अविनाशी प्राप्त हुए हैं। सबसे पहले बड़े ते बड़ा खजाना है ज्ञान धन, जिससे मुक्ति और जीवनमुक्ति की प्राप्ति हुई है। पुरानी देह और पुरानी दुनिया से मुक्त जीवनमुक्त स्थिति और मुक्तिधाम में जाने की, सभी बच्चों को प्राप्त है। साथ में एक ज्ञान का खजाना नहीं लेकिन योग का भी खजाना है जिससे सर्व शक्तियों की प्राप्ति होती है। साथ-साथ धारणा करने का खजाना, जिससे सर्व गुणों की प्राप्ति होती है। साथ-साथ सेवा का खजाना जिससे दुआओं का खजाना, खुशी का खजाना प्राप्त होता है। साथ-साथ सबसे बड़े ते बड़ा खजाना वर्तमान संगमयुग का है, समय का है क्योंकि सारे कल्प में यह संगम का समय अमूल्य खजाना है। इस संगम के समय का एक एक संकल्प वा एक-एक घड़ी बहुत अमूल्य है क्योंकि संगम समय पर ही बापदादा और बच्चों का मधुर मिलन होता है और कोई भी युग में परमात्म बाप और परमात्म बच्चों का मिलन नहीं होता। साथ-साथ संगम समय ही है जिसमें बापदादा द्वारा सर्व खजाने प्राप्त होते हैं। खजाना जमा होने का समय संगमयुग ही है और कोई भी युग में जमा का खाता, जमा करने की बैंक ही नहीं है। सिर्फ एक संगमयुग है जिसमें जितना खजाने जमा करने चाहो उतना कर सकते हो और इस संगम समय का जो महत्व है वह यही है कि एक जन्म में अनेक जन्मों के लिए खजाना जमा कर सकते हैं इसलिए यह छोटे से युग का बहुत महत्व है और खजाने भी बापदादा द्वारा सभी बच्चों को प्राप्त होते हैं। बाप सभी को देते हैं लेकिन खजाने को जमा करने में हर एक बच्चा अपने पुरुषार्थ अनुसार करता है। बाप देने वाला भी एक है और एक जैसा सबको देता है, एक ही समय पर देता है लेकिन धारण करने में क्या देखा कि बाप ने एक जैसा दिया लेकिन धारण करने में हर एक का अपना-अपना पुरुषार्थ रहा क्योंकि खजाने को धारण करने के लिए एक तो अपने पुरुषार्थ से प्रालब्ध बना सकते हैं, दूसरा सदा स्वयं सन्तुष्ट रहना और सर्व को सन्तुष्ट करना, सन्तुष्टता की विशेषता से खजाना जमा कर सकते हो और तीसरा सेवा से क्योंकि सेवा से सर्व आत्माओं को खुशी की प्राप्ति होती है तो खुशी का खजाना प्राप्त कर सकते हो। अपना पुरुषार्थ और सर्व को सन्तुष्ट करने का पुरुषार्थ और तीसरा सेवा का पुरुषार्थ। इन तीनों प्रकार से खजाने जमा कर सकते हो। खजाने जमा करने में विशेष सम्बन्ध-सम्पर्क में आने में एक

तो निमित्त भाव, निर्माण भाव, निःस्वार्थ भाव, हर आत्मा प्रति शुभ भावना और शुभ कामना रखने की आवश्यकता है। अगर सेवा में वा सम्बन्ध-सम्पर्क में यह सब है तो पुण्य का खाता और दुआओं का खाता बहुत सहज जमा कर सकते हैं।

तो बापदादा सबके पोतामेल देख रहे थे तो क्या देखा? चारों ओर के बच्चों में नम्बरवार देखा। बाप एक है, एक ही समय पर देते हैं लेकिन जमा करने में दो प्रकार के बच्चे देखे - एक बच्चे तो जमा हुआ खजाना खाया, जमा भी किया और खाके खत्म कर देते हैं। दूसरे खाया, जमा किया और जमा करने में अटेन्शन देके बढ़ाया भी। खजाने बढ़ाने का साधन क्या है? बढ़ाने का साधन है जो खजाने मिले वह समय पर जो परिस्थिति आती है उस परिस्थिति अनुसार कार्य में लगाना। जो कार्य में लगाते हैं स्थिति द्वारा परिस्थिति को बदल सकते हैं उसका जमा होता है। जो कार्य में नहीं लगाते तो जमा नहीं होता है। तो हर एक अपने आपसे पूछो कि समय पर अपने प्रति वा दूसरों के प्रति कार्य में लगाते हो! जितना कार्य में लगायेंगे उतना बढ़ता जायेगा क्योंकि कार्य में लगाने से अनुभव होता जाता है। तो अनुभव की अर्थारिटी एड होती जाती है। तो चेक करो अपने आपसे पूछो कि यह सारे खजाने जमा हैं? और बढ़ाने का साधन समय पर कार्य में लगाते हैं? अनुभव की अर्थारिटी बढ़ती जाती है? क्योंकि अर्थारिटीज़ में सबसे ज्यादा अनुभव की अर्थारिटी सबसे ज्यादा गई जाती है। तो हर एक को अपना खाता बढ़ाना है। चेक करना है क्योंकि अभी समय है चेक करके अभी भी खजाने बढ़ा सकते हो। अभी चांस है फिर चांस भी खत्म हो जायेगा। चाहेंगे खजाना बढ़ायें लेकिन बढ़ा नहीं सकेंगे।

बापदादा ने देखा खजाना मिलता है, खुशी-खुशी से अपने में समाने का प्रयत्न भी करते हैं लेकिन खजाना जब मिलता है, मुरली द्वारा ही खजाने मिलते हैं तो दो प्रकार के बच्चे हैं - एक सुनने वाले और दूसरे हैं समाने वाले। कई बच्चे सुनके बहुत खुश होते हैं लेकिन सुनना और समाना, दोनों में बहुत फर्क है। समाने वाले अनुभवी बनते जाते हैं क्योंकि समायी हुआ समय पर कार्य में लगाते, खजाने को बढ़ाते रहते हैं। सुनने वाले वर्णन करते हैं, बहुत अच्छा सुनाया, बाबा ने बहुत अच्छी बात बोली, लेकिन समाने के बिना समय पर काम में नहीं ला सकते हैं। तो आप सभी चेक करो समाने वाले हैं! थोड़ा भी अगर कम होगा, भरपूर नहीं होगा तो हलचल होगी। लेकिन समायी हुआ फुल होगा तो हलचल नहीं होगी। इसलिए आज बापदादा ने सबके खजाने चेक किया। सुनाया ना - कि दो प्रकार के बच्चे हैं, अभी अपने आपको चेक करो मैं कौन? खजाने को बढ़ाना अर्थात् समय पर कार्य में लगाना। जितना कार्य में लगाते जाते उतना खजाना बढ़ता जाता है क्योंकि जो भी खजाना है, खजाने का मालिक खजाने को कार्य में लाता है, खजाना अपने को कार्य में नहीं लाता। तो आप सभी को सर्व खजाने बाप ने वर्से में दिया है। तो बाप के खजाने को अपना खजाना बनाना यह हर एक को अपना अटेन्शन देना है क्योंकि जितना खजाना भरपूर होगा उतना ही भरपूर अवस्था में अचल अडोल होंगे।

बापदादा यही चाहता है कि एक-एक बच्चा सम्पन्न हो, कम नहीं हो क्योंकि यह चांस बाप द्वारा अविनाशी खाता जमा होना, यह सिर्फ अभी हो सकता है। इसीलिए कहा हुआ भी है अभी नहीं तो कभी नहीं। यह संगम समय के लिए ही गायन है। भविष्य में तो जो जमा किया है उसका फल प्राप्त करेंगे लेकिन प्राप्ति का समय सिर्फ अब है। तो हर एक को अपना खाता देखना है। जिसका जितना भण्डारा भरपूर है उसके नयनों से, चलन से, चेहरे से मालूम होता है, उसकी चलन और चेहरा ऐसे लगेगा जैसे खिला हुआ गुलाब का पुष्प। बापदादा हर एक के चलन और चेहरे से देखता रहता कि कितना हर्षित, कितना खुशमिजाज़ रहता है! नयनों से रुहानियत, चेहरे से मुस्कराहट और कर्म से हर एक गुण सभी को अनुभव होता है! तो हर एक अपने आपको चेक करे।

बापदादा की हर एक बच्चे में यही शुभ भावना है कि हर एक बच्चा अनेक आत्माओं को ऐसा खजानों से सम्पन्न बनावे। आज विश्व की आत्मायें सभी यही चाहती हैं कि कुछ न कुछ आध्यात्मिक शक्ति मिल जाए। और आध्यात्मिक शक्ति के दाता आप ब्राह्मण आत्मायें ही हैं क्योंकि होलीएस्ट, हाइएस्ट और रिचेस्ट आप आत्मायें ही हैं। होलीएस्ट भी सब आत्माओं से ज्यादा आप हो। आप आत्माओं की पूजा जैसे विधिपूर्वक होती है, वैसे और किसकी भी नहीं होती। अभी लास्ट जन्म में भी आप आत्माओं की पूजा और कोई भी धर्मपिता वा महान आत्मायें जो निमित्त बनी हैं उन्हीं की नहीं है। विधिपूर्वक पूजा भले यादगार बनाते हैं लेकिन विधिपूर्वक पूजा नहीं होती। और आप जैसा खजाना रिचेस्ट इन दी वर्ल्ड, आप ब्राह्मण आत्माओं का एक जन्म का खजाना गैरन्टी है 21 जन्म चलना ही है क्योंकि बाप द्वारा, बाप का वर्सा मिला है। तो जैसे बाप अविनाशी है, वैसे ही बाप द्वारा मिला हुआ खजाना भी अविनाशी हो जाता है। इसलिए रिचेस्ट इन दी वर्ल्ड, होलीएस्ट इन दी वर्ल्ड।

तो सभी अपने को ऐसे विशेष सेवाधारी समझते हो ना! आज के समय अनुसार विश्व की आत्माओं को आवश्यकता किस चीज़ की है, जानते हो ना! आज विश्व को खुशी, शक्ति और स्नेह की आवश्यकता है। आत्मिक स्नेह चाहते हैं लेकिन आप ब्राह्मण आत्मायें अभी समय अनुसार दाता बनो। मन्सा से शक्तियां दो, वाचा से ज्ञान दो और कर्मणा से गुणदान दो। ब्रह्मा बाप ने अन्त में तीन शब्द सभी बच्चों को सौगात में दिये, याद है ना - इन तीन शब्दों को अगर सेवा में लगाओ तो बहुत आत्माओं को

सन्तुष्ट कर सकते हो। वह तीन शब्द हैं - निराकारी, निरहंकारी और निर्विकारी। तो मन्सा द्वारा निराकारी, वाचा द्वारा निरहंकारी और कर्मणा द्वारा निर्विकारी। यह तीनों शब्द सेवा में लगाओ। अभी विश्व को आपके शक्ति द्वारा थोड़ा सा दिल का आनंद, सुख की प्राप्ति हो, सब निराश हैं और आप विश्व के लिए आशाओं के सितारे हो और बापदादा सभी बच्चों को बाप के आशाओं के सितारे देखते हैं। सिर्फ उम्मीदों के सितारे नहीं लेकिन आशाओं पूर्ण करने वाले आशाओं के सितारे हो।

बापदादा के पास बच्चों का स्नेह सदा पहुंचता है और सबसे सहज पुरुषार्थ कौन सा है? भिन्न भिन्न पुरुषार्थ है लेकिन सबसे सहज पुरुषार्थ स्नेह है। स्नेह में मेहनत भी मुहब्बत के रूप में बदल जाती है। तो बाप के स्नेही बनना अर्थात् सहज पुरुषार्थ करना। स्नेह में आप सभी अपने को स्नेही समझते हैं, कभी-कभी नहीं, सदा स्नेही। जो अपने को सदा स्नेह के सागर में समाये हुए समझते हैं, सदा स्नेह के सागर में समाया हुआ। डुबकी लगाने वाले नहीं, समाये हुए। जो अपने को ऐसा स्नेह के सागर में समाया हुआ समझते हैं वह हाथ उठाओ। सदा? सदा शब्द को अण्डरलाइन करो। हाथ उठाओ, सदा, सदा? हाथ तो अच्छा उठाया है। बापदादा हाथ को देखके खुश होते हैं क्योंकि हिम्मत रखते हैं। अगर कुछ कम भी होगा तो याद तो आयेगा कि हाथ उठाया है क्योंकि बापदादा का एक-एक बच्चे से अति स्नेह है। क्यों? क्योंकि बापदादा जानते हैं कि यह एक-एक आत्मा अनेक बार स्नेही बनी है, अभी भी बनी है और हर कल्प यही आत्मायें स्नेही बनेंगी। नशा है, खुशी है कि हम ही हर कल्प के अधिकारी आत्मायें हैं? बापदादा ऐसे अधिकारी आत्माओं को देख दिल की दुआयें दे रहे हैं। सदा अथक बन उड़ते चलो। कभी भी अगर कोई परिस्थिति आती है तो स्व-स्थिति को नीचे ऊपर नहीं करो। स्व-स्थिति के आगे परिस्थिति कुछ नहीं कर सकती।

तो अभी बापदादा यही चाहते हैं कि फरिश्ता रूप अपना इमर्ज करो। चलते फिरते फरिश्ता ट्रेस वाले अनुभव कराओ। बापदादा ने ड्रिल सुनाई ना। वस्त्र बदली करने की आदत तो है ना! तो जैसे शरीर की ट्रेस बदली करते हो, ऐसे ही आत्मा का स्वरूप फरिश्ता, बार-बार अनुभव करो। फरिश्ता की ट्रेस पसन्द है ना! जैसे ब्रह्मा बाप अव्यक्त फरिश्ता रूप में वतन में बैठे हैं ऐसे बाप समान आप सब भी चलते फिरते फरिश्ते रूप में अनुभव करो क्योंकि फरिश्ता रूप होगा तभी देवता बनेंगे। जैसे बाप के तीन रूप याद रहते हैं ना। बाप, शिक्षक और सतगुरु, ऐसे अपने भी तीन रूप याद करो - ब्राह्मण सो फरिश्ता और फरिश्ता सो देवता। यह तीन रूप पक्के हैं ना! कभी ब्राह्मण की ट्रेस पहनो, कभी फरिश्ते की, कभी देवता की। इस तीनों रूप में स्वतः ही त्रिकालदर्शी की सीट में बैठ साक्षी होके हर कार्य करते रहेंगे। तो सभी से बापदादा यही चाहते हैं कि सदा बाप के साथ रहो, अकेले नहीं बनो। साथ रहेंगे तब साथ चलेंगे। अगर अभी कभी-कभी रहेंगे तो साथ कैसे चलेंगे! स्नेही, स्नेही को कभी भूल नहीं सकता। सारे दिन में यह अभ्यास करते रहो। अभी-अभी ब्राह्मण, अभी अभी फरिश्ता, अभी अभी देवता। अच्छा।

चारों ओर के सर्व बच्चों को जो सदा खजाने से सम्पन्न हैं, सदा अपनी चलन और चेहरे से सेवाधारी हैं क्योंकि आप सबका वायदा है कि हम विश्व परिवर्तक बन विश्व का परिवर्तन करेंगे, तो चलते फिरते भी सेवाधारी सेवा में तत्पर रहते हैं। ऐसे विश्व सेवाधारी विश्व परिवर्तक हर एक को बाप के खजानों से भरपूर करने वाले बापदादा के चारों ओर के बच्चों को बापदादा का यादप्यार और दिल से दुआयें और नमस्ते। अच्छा।

सेवा का टर्न महाराष्ट्र, ज़ोन का है:- (सभी ने नो प्रॉबलम का ताज पहना हुआ है) अच्छा किया है सभी ने अपने ऊपर ताज लगा दिया है। जैसे नो प्रॉबलम का ताज लगाया है तो सभी के तरफ से बापदादा यही दुआ दे रहे हैं कि “सदा नो प्रॉबलम भव”। ऐसे ही हर एक मन-वाणी-कर्म संगठन में सदा नो प्रॉबलम रहने वाले। प्रॉबलम सेकण्ड में परिवर्तन हो जाए। प्रॉबलम के रूप में आये और सम्पन्न स्वरूप में बदल जाये। अच्छा है, सीन देख रहे हो कितनी अच्छी है। संकल्प और श्वास में नो प्रॉबलम। तो सभी के तरफ से जो ताजधारी बने हैं उन्हों को बधाई दो, ताली बजाओ। सभी बड़ी क्रीन में देखो, देखो कितना अच्छा लगता है। बापदादा एक-एक बच्चे को जिन्होंने संकल्प किया है नो प्रॉबलम अर्थात् बाप समान सदा रहेंगे, इसीलिए बापदादा पदमगुणा बधाईयां दे रहे हैं। अच्छा।

डबल विदेशी:- अच्छा, विदेश वाले बापदादा को एक बात में अच्छे लगते हैं, कौन सी बात में मैजारिटी, मिक्स तो होते ही हैं लेकिन मैजारिटी अपने दिल में कोई भी बात अगर नियम के विरुद्ध होती है तो स्पष्ट बोलने में स्पष्ट कह देते हैं। ज्यादा टाइम दिल में नहीं रखते हैं, दिल से निकल ही जाता है। इसलिए जो भी बात है वह ज्यादा समय दिल में नहीं रखना। कोई भी कमजोरी को अगर ज्यादा समय दिल में रखते हैं तो फिर संस्कार बन जाते हैं, नेचर बन जाती है, इसलिए यह संस्कार अच्छा है, जो भी कमजोरी आवे वह जल्दी सुनाके परिवर्तन कर लो। और करने में कोई-कोई बहुत अच्छे बच्चे हैं जो अपना हाल स्पष्ट सुना देते हैं। तो यह बहुत अच्छी बात है। मिक्स तो होता है लेकिन मैजारिटी। बाकी तो उन्नति हो रही है और उन्नति होती रहेगी। बापदादा खुश है। अच्छा।

*** Om Shanti ***

“परमात्म प्यार की पात्र आत्मायें दुःखियों को सुख की अंचली दो, व्यर्थ को समाप्त कर समर्थ बनो और समय को समीप लाओ”

आज बापदादा अपने चारों ओर के परमात्म प्यारे बच्चों को देख रहे हैं। ऐसे परमात्म प्यारे कोटो में कोई बच्चे हैं क्योंकि इस समय ही परमात्म प्यार का अनुभव कर सकते, सारे कल्प में आत्माओं का प्यार, महात्माओं का, धर्मात्माओं का प्यार अनुभव किया लेकिन परमात्म प्यार सिर्फ अब संगमयुग पर होता है, जो आप सभी बच्चे अनुभव कर रहे हैं। कोई आपसे पूछे परमात्मा कहाँ है? तो क्या जवाब देंगे? मेरे साथ है। मेरे साथ ही रहते हैं। मेरे दिल में ही रहते हैं। ऐसा अनुभव कर रहे हो ना! आप ही जानते हो और आपको ही इस प्यार का अनुभव है कि हमारे दिल में बाप रहते और बाप के दिल में हम रहते। जानते हो कि यह परमात्म प्यार का नशा हमें ही अनुभव करने का भाग्य प्राप्त हुआ है। जब किसी से भी प्यार हो जाता है तो उसकी निशानी क्या होती है? उसकी निशानी है उसके ऊपर कुर्बान होना। तो परमपिता परमात्मा आप बच्चों से क्या चाहते हैं, वह तो आप सब जानते हो। बाप की हर एक बच्चे के प्रति यही चाहना है कि मेरा एक एक बच्चा बाप समान बने। जैसे बाप वैसे बच्चों की भी श्रेष्ठ स्थिति बने। वह श्रेष्ठ स्थिति क्या है? सम्पूर्ण पवित्रता की स्थिति। ऐसी पवित्रता जो स्वप्न में भी अपवित्रता आ नहीं सके। ऐसी सम्पूर्ण पवित्र स्थिति बना रहे हो? जिस सम्पूर्ण पवित्रता में अपवित्रता का नामनिशान नहीं।

वर्तमान समय समीप आने के कारण बापदादा अभी यही इशारा दे रहे हैं कि समय की समीपता अनुसार व्यर्थ संकल्प यह भी अपवित्रता की निशानी है। सारे दिन में यह भी चेक करो कि कोई भी व्यर्थ संकल्प अभिमान का वा अपमान का अपने तरफ खींचता तो नहीं है? क्योंकि चलते चलते अगर बाप की दी हुई विशेषताओं को अपनी विशेषता समझ अभिमान में आते हैं तो यह भी व्यर्थ संकल्प हुआ और मेरेपन के अशुभ संकल्प में कम नहीं हूँ, मैं भी सब जानता हूँ, यह मेरा संकल्प ही यथार्थ है, ऊंचा है, यह मेरेपन का अभिमान का संकल्प यह भी सूक्ष्म अपवित्रता का अंश है। तो अपने को चेक करो किसी भी प्रकार का अपवित्रता के व्यर्थ संकल्प का कोई अंश तो नहीं रह गया है? क्योंकि अभी पवित्र दुनिया की स्थापना का समय समीप लाने वाले आप परमात्म प्यारे बच्चे निमित्त हो। तो जो निमित्त आत्मायें हैं उन्हीं का वायब्रेशन चारों ओर फैलता है। तो चेक करो किसी भी प्रकार का व्यर्थ संकल्प भी अपने तरफ खींचता तो नहीं है? क्योंकि अभी पवित्र दुनिया, पवित्र राज्य समीप आ रहा है। दुःख और अशान्ति चारों ओर भिन्न-भिन्न स्वरूप में बढ़ रही है। उसके लिए पवित्रता का वायब्रेशन आवश्यक है। दुःख अशान्ति का कारण अपवित्रता है। तो अपवित्र आत्माओं को और भक्त आत्माओं को अभी डबल सेवा चाहिए। वाणी की सेवा तो बापदादा ने देखा कि चारों ओर धूमधाम से चल रही है, अपना उलहना भी निकाल रहे हो। लेकिन अभी आत्माओं को एकस्ट्रा सकाश चाहिए। वह है मन्सा सेवा द्वारा सकाश देना, हिम्मत देना, उमंग-उत्साह देना। तो इस समय डबल सेवा की आवश्यकता है। इसके लिए बापदादा ने कहा कि हर एक बच्चा अपने को पूर्वज समझो। आप इस कल्प वृक्ष का फाउण्डेशन पूर्वज और पूज्य आप आत्मायें हो। बापदादा तो दुःखी बच्चों का आवाज सुनते रहते हैं। आप बच्चों के पास उन्हीं के पुकार का आवाज पहुंचना चाहिए। जितना सम्पूर्ण पवित्र आत्मा बनेंगे। बन रहे हैं, बने भी हैं लेकिन साथ-साथ अभी मन्सा सेवा को बढ़ाना है।

आज विश्व में सुख-शान्ति, सन्तोष आत्माओं में कम हो रहा है। तो आप परमात्म प्यार के पात्र आत्माओं को अभी प्यार की, सन्तुष्टता की, खुशी की अंचली देने की आवश्यकता है। दुःखियों को सुख की अंचली देनी है। एक तो मन्सा सेवा द्वारा सकाश दो और दूसरा अपने चेहरे और चलन द्वारा बाप को प्रत्यक्ष करो। अभी जो सेवा कर रहे हो और की है बापदादा खुश है कि सेवा में चारों ओर उमंग-उत्साह है लेकिन अभी एक सेवा रही हुई है। अभी तक यह आवाज तो हुआ है कि ब्रह्माकुमारियां मनुष्य आत्मा को अच्छा बना देती हैं, यह जो अशुद्ध व्यवहार है, अशुद्ध व्यवहार से मुक्त कर देती हैं, जो गवर्मेन्ट चाहती है यूथ ग्रुप के लिए, वह सेवा बहुत अच्छी करते। लेकिन अभी बाप आया है, परमात्मा आ गया है, परमात्म ज्ञान यह दे रही है, मेरा बाप वर्सा देने आ गया है, अभी बाप की तरफ नजर जाने से उन्हीं को भी परमात्म प्यार, परमात्मा की आकर्षण आकर्षित करेगी। अच्छा-अच्छा तो हो गया है लेकिन परमात्मा बाप की प्रत्यक्षता आकर्षित कर अच्छा बनायेगी। तो अभी बाप के तरफ पहचान, जिसको याद करते हैं वह ज्ञान, वह वर्सा मिल रहा है तो अभी मन्सा द्वारा बाप के समीप लाओ। अपने चेहरे और चलन द्वारा, आपके नयनों में बाप प्रत्यक्ष हो। तो अभी यह आपस में प्लैन बनाओ।

बापदादा ने देखा जो प्लैन बापदादा ने समय प्रति समय दिया है वह बच्चों ने बड़े विधि पूर्वक, उमंग-उत्साह से किया है, कर रहे हैं, इसकी बापदादा सभी बच्चों को पदम पदम गुणा मुबारक दे रहे हैं। अभी एडीशन करो कि भगवान वर्सा दे रहा है। अभी वर्सा नहीं लिया तो कब लेंगे! बाप को रहम आता है बच्चों का दुःख, अशान्ति का वायुमण्डल देख करके। और बाप और आप जानते हो कि यह तो अति में जाना ही है। बिना अति के अन्त नहीं होता है। ऐसे समय पर आत्माओं को यह अनुभव कराओ, सिर्फ सुनाओ नहीं, अनुभव कराओ कि भगवान वर्सा दे रहा है। आप सभी भी यही पूछते हो ना कि यह बाप की प्रत्यक्षता कब और कैसे होगी! तो ब्रह्माकुमारियों तक पहुंचे हैं लेकिन ब्रह्माकुमारियों को सिखाने वाला कौन! ब्रह्माकुमारियों का, ब्रह्माकुमारों का दाता कौन! अभी समय को समीप लाना है, समाप्ति करनी है। समाप्ति को समीप लाने वाले कौन हैं? हर एक बच्चा समझता है ना कि मैं ही निमित्त हूँ। बाप ने यह जिम्मेवारी अपने साथ बच्चों को दी है। सन शोज फादर। कोई-कोई जब बाप को जानते, तो देखो आप सबने बाप को जाना तो क्या किया? पहचान लिया, जान लिया, तो बच्चा बन वर्से के अधिकारी बन गये। अभी वर्सा लेने वाली आत्माओं की क्यू लगनी चाहिए। और क्यू रूकी हुई क्यों है? क्योंकि कोई कोई बच्चे अभी व्यर्थ संकल्पों की क्यू में लगे हुए हैं। क्यों, क्या, कैसे, अभी इस समाप्ति में समय देते हैं लेकिन व्यर्थ समाप्त नहीं हुआ है। व्यर्थ समर्थ बनने में रूकावट डालता है।

तो आज बापदादा व्यर्थ संकल्पों की समाप्ति करने के लिए सभी चारों ओर के बच्चों को हिम्मत दे रहे हैं कि अभी से व्यर्थ को समाप्त कर सदा समर्थ बन समर्थ बनाओ। सिर्फ सन्देश नहीं दो समर्थ बनाओ, समर्थ बनो, समर्थ बनाओ। व्यर्थ का समाप्ति दिवस मनाओ। हो सकता है? जो समझते हैं कि व्यर्थ संकल्प अपने को भी नुकसान पहुंचाते हैं, समय बरबाद करते हैं, चेहरे पर सदा खुशनुमा, खुशकिस्मत का अनुभव कम कराते है। इसलिए अभी समाप्ति का समय समीप लाना है, किसको? आपको ना! जो समझते हैं कि अभी समाप्ति के समय को समीप लाना है, उसके लिए व्यर्थ को समाप्त करना ही है, करना है नहीं, करना ही है, स्वप्न में भी नहीं आवे, संकल्प तो छोड़ो लेकिन स्वप्न में भी नहीं आये, ऐसे हिम्मत वाले बच्चे जो अपने को समझते हैं वह हाथ उठाओ। मन का हाथ उठा रहे हो ना! बांहों का हाथ तो बहुत इजी है लेकिन मन का हाथ उठा रहे हो? जो मन का हाथ उठा रहे हैं वह हाथ उठाओ, मन का हाथ। अच्छा। आज के वी.आई.पी उठो। जो आज विशेष वी.आई.पी आये हैं वह उठो। यहाँ बैठे हैं ना! अच्छा। बापदादा आये हुए वी.आई.पी, वी.आई.पी का अर्थ है जो स्नेही है, सहयोगी है और कर्तव्य जो चल रहा है, उनसे प्यार है, बहिनों से प्यार है, भाईयों से प्यार है, उसको कहते हैं वी.आई.पी अर्थात् स्नेही सहयोगी। अभी क्या बनना पड़ेगा? वी.आई.पी तो हैं और बापदादा खुश है। अभी क्या बनेंगे? एक छोटी सी बात है, बताऊं? बतायें? बापदादा कहते हैं स्नेह बहुत अच्छा है, याद भी करते हैं, बाबा शब्द भी मन से निकलता है। बाकी एडीशन चाहिए एक, वह एडीशन क्या है? सहज योगी की लिस्ट में भी आओ। एक कदम तो उठाया है लेकिन आगे बढ़ने के लिए क्या किया जाता है? एक कदम उठाओ, उससे आगे बढ़ेंगे तो दूसरा कदम भी उठाना पड़ेगा। तो बापदादा की यही आश है स्नेही बच्चों के प्रति, सहयोगी बच्चों के प्रति। तो साथ-साथ सहजयोगी भी बनो। सहजयोगी बन सकते हैं? बन सकते हैं, मुश्किल कुछ नहीं होगा। छोड़ना नहीं पड़ेगा कुछ। और ही योग की शक्ति मदद देगी। आपके कार्य में वृद्धि होगी। तो बापदादा को स्नेही सहयोगी बच्चे याद आते हैं। क्यों याद आते हैं? क्योंकि आप एक एकजैम्पुल हो। क्योंकि एक बात के लिए लोग घबराते हैं, तो शायद घरबार छोड़ना पड़ेगा। लेकिन आप सब घर में रहते स्नेह और सहयोग में चलते तो आपको देख करके उन्हीं में उमंग-उत्साह आयेगा। आपकी सेवा हो जायेगी। अनेकों के तकदीर का ताला खोल सकते हो। पसन्द है? पसन्द है तो हाथ उठाओ। अच्छा। अभी बापदादा एक वरदान देते हैं। आपने हिम्मत रखी तो हिम्मत का फल बहुत मीठा होता है, तो बापदादा यह वरदान दे रहा है कि आप सभी आने वाली नई दुनिया में 21 जन्म सदा खुश रहेंगे। मेहनत नहीं करेंगे। दुनिया की उलझनों में नहीं पड़ेंगे। जो जीवन में चाहिए, तन मन धन सब मिल जायेगा। तन तन्दुरूस्त, मन खुश, धन अथाह यह आपको 21 जन्म की गैरन्टी है। बापदादा को मंजूर है, आप सिर्फ एक बात करो। रोज़ आश्रम में आ नहीं सकते हो तो फोन करो। यह कान का फोन है ना, वह करो। आपके कनेक्शन वाली टीचर जो भी है उससे अपना टाइम फिक्स करो, तो इस समय हम फोन करेंगे और उसमें रोज़ का जो महावाक्य जिसको मुरली कहते हैं, वह वरदान और शुरू का जो होता है आरम्भ, वह सुनो। क्यों? बापदादा क्यों कहते हैं? अगर करना है, तो हाथ उठाओ। अच्छा, आजकल के जमाने के हिसाब से बातें बहुत बदलती जाती हैं। गवर्नमेंट के कायदे भी बदलने हैं, मनुष्यों की वृत्ति भी बदलनी है। इसके लिए हर एक के जीवन में बातें तो आनी ही हैं, व्यर्थ बातें, तो व्यर्थ को समाप्त करने के लिए समर्थ संकल्प चाहिए। वेस्ट को खत्म करने के लिए बेस्ट संकल्प चाहिए। वह रोज़ सुनने का है वरदान। वरदान जो है वह श्रेष्ठ संकल्प है। जब व्यर्थ आवे तो श्रेष्ठ संकल्प मन को चाहिए। मन खाली नहीं रह सकता है। मन को कुछ न कुछ संकल्प चाहिए। तो व्यर्थ वेस्ट को बेस्ट करने के लिए आपको यह वरदान और स्लोगन और आदि के शब्द यह मन को चेंज करने के लिए चाहिए। यह कर सकते हो? कर सकते हो? कोई करते भी होंगे। क्योंकि बाप को यही आप अनुभवी बन औरों को अनुभवी बनाने में बहुत सेवा कर सकते हैं। अभी समय फास्ट जा रहा है। तो फास्ट समय में आपकी सेवा भी फास्ट होगी। तो बापदादा को आप सब आये, यह खुशी है, बच्चों को देखा चाहे कभी कभी आने वाले हैं लेकिन हैं तो बच्चे ना। तो बच्चों

को बाप तो देखेगा। इसलिए आप सिर्फ थोड़ा समय जब अमृतवेले उठते हो तो भले बेड पर लेटे हुए हो, आंख खुलती है तो पहले पहले शिवबाबा को गुडमाँनग करो। कर सकते हो? देखो कहावत है सारे दिन में अगर कोई अच्छे को देखते हैं तो सारा दिन अच्छा बीतता है कोई खराब को देख लेते हैं ना तो क्या कहते हैं? कहते हैं पता नहीं किसकी शकल देखी जो सारा दिन खराब गया। तो अच्छे ते अच्छा कौन? शिवबाबा। शिवबाबा से प्यार है ना। तो आंख खुलते शिवबाबा गुडमाँनग। और आंख बन्द करते रात्रि को, जब बेड पर जाओ तो शिवबाबा गुडनाईट। यह तो सहज है ना। तो सारा दिन आपका अच्छा होगा। क्योंकि शुभ संकल्प भी ले लिया ना वरदान। तो ऐसे करना। बापदादा का प्यार है ना आप लोगों से। तो यह करने से और आप आगे बढ़ते जायेंगे। अपने इस जीवन में भी खुशी का अनुभव करेंगे। कभी दुःख की लहर नहीं आयेगी। तो मंजूर है और सहज योगी बनो बस। मैं आत्मा हूँ, शिवबाबा का बच्चा हूँ, बस, यह सहजयोगी। चलते फिरते यह याद करो मैं आत्मा हूँ, शिवबाबा का बच्चा हूँ। यह तो याद कर सकते हो ना! तो बहुत अच्छा। यह तो हुआ इन बच्चों से रूहरिहान।

अभी आप सभी जो वारिस भी हैं और वारिस बनने वाले भी हैं। जो अपने आपको बापदादा का पक्का वारिस समझते हैं, वह हाथ उठाओ। वारिस हैं? वी.आई.पी भी सभी हाथ उठा रहे हैं। ताली तो बजाओ। अच्छा। अभी वारिस क्वालिटी को आज यह संकल्प अपने से दृढ़ करेंगे, बापदादा को यह संकल्प देंगे कि हम अभी से, कब से नहीं, अब से व्यर्थ संकल्प को समाप्त करके ही छोड़ेंगे। मंजूर है। है मंजूर? है तो हाथ उठाओ। अच्छा। जो समझते हैं पक्का संकल्प है, मन का। हाथ उठाने का नहीं, मन का हाथ उठाने का, वह हाथ उठाओ। अच्छा सब। पीछे वाले उठा रहे हैं। जो पक्का वह दो हाथ उठाओ। तो आज है कौन सा दिन? व्यर्थ को समाप्त करना अर्थात् समर्थ बनना। सदा समर्थ और दूसरा कार्य कौन सा है? दुःख और अशान्ति की समाप्ति का दिवस समीप लाना। दो काम हैं। एक सदा समर्थ बनना और दूसरा समर्थ समय को समीप लाना। ठीक है। दोनों ही काम ठीक है? कांध हिलाओ। क्योंकि बापदादा के पास पुकार और दुःख की आह बहुत सुनाई देती है। आपके पास पता नहीं क्यों नहीं सुनाई देती है। बापदादा जब ऐसे सुनते रहते हैं तो आप बच्चों को जो अपने को वारिस समझते हैं, वर्सा लेने वाले हैं, तो वर्सा लेने वाले को दूसरों को वर्सा दिलाने के ऊपर रहम आना चाहिए ना। रहम क्यों नहीं आता? वैराग्य, बेहद का वैराग्य और रहम आना चाहिए। छोटी छोटी बातों में क्यों, क्या के क्यूं में टाइम नहीं देना है। अभी हे बापदादा के सिक्कीलधे पदम पदम वरदानों के वरदानी बच्चे! अभी संकल्प को दृढ़ करो। और दृढ़ता की चाबी लगाओ। कर्मयोगी बनो। कर्मयोगी लाइफ वाले हो। लाइफ सदाकाल होती है, कभी कभी नहीं। तो अभी अपना कृपालु, यालु, दुःखहर्ता, सुख देता स्वरूप को इमर्ज करो। बापदादा ने अचानक का समय बहुतकाल से बताया है। तो अचानक के पहले भक्तों की पुकार तो पूरी करो। दुःखियों के दुःख के आवाज तो सुनो। अभी हर एक छोटा बड़ा विश्व परिवर्तक, विश्व के दुःख परिवर्तन कर सुख की दुनिया लाने वाले जिम्मेवार समझो।

बापदादा का यह आना जाना भी कब तक? इसलिए सब अचानक होना है। तो अभी वारिस क्वालिटी, वर्सा दिलाना, रहमदिल बनने का पार्ट बजाओ। ऐसे नहीं सोचना कब तक होगा! अचानक होगा। इसलिए व्यर्थ को समाप्त करना ही है। होना है नहीं, करना ही है। बापदादा ने रिजल्ट देखी सभी के कर्मों के गति को चेक किया। पुरूषार्थ की गति को चेक किया। खज़ाने जमा का खाता चेक किया। तो रिजल्ट में क्या देखा? जमा करने का पुरूषार्थ बहुत अच्छा करते हैं लेकिन जो जमा करते हो उसमें परसेन्टेज भिन्न-भिन्न है। जितना सोचते हो जमा किया, होता है जमा लेकिन परसेन्टेज, थोड़ा जमा होता है, सदा के लिए जमा नहीं। जितना करते हो उतना सदा के लिए जमा में फर्क है। इसलिए बापदादा अभी एक एक बात पर दृढ़ संकल्प कराता है। क्रोध पर कराया, लेकिन मन से भी किसके प्रति हलचल नहीं हो। क्यों, क्या नहीं हो। मुख से कंट्रोल किया है, कोई कोई ने अच्छा किया है लेकिन मन से थोड़ा थोड़ा चलता है। मिटाने की कोशिश कर रहे हैं फिर भी बापदादा खुश है कि अटेन्शन गया है। समझने लगे हैं कि इसमें मेरे को ही नुकसान है। समझा। अच्छा।

सेवा का टर्न ईस्टर्न ज़ोन, (बंगाल बिहार, उड़ीसा, आसाम) नेपाल और तामिलनाडु:- पौना हाल तो इसी ज़ोन वाले हैं। अच्छा। सेवाधारी, सिर्फ सेवाधारी उठो बाकी ऐसे जो साथ आये हैं वह बैठ जाओ। बहुत हैं। अच्छा है। तो अभी विशेष है ईस्टर्न ज़ोन। ईस्टर्न में भी बहुत ही भाग हैं। तो ईस्टर्न ज़ोन की तो विशेषता है, उसमें भी विशेष है कलकत्ता, जहाँ ज्ञान सूर्य प्रगट हुआ। तो जिस धरनी पर ज्ञान सूर्य प्रगट हुआ वह धरनी कितनी महान है। और बंगाल बिहार, बिहार भी कम नहीं। क्योंकि बापदादा ने देखा कि बिहार में सेवा का साधन बहुत अच्छा है। क्यों अच्छा है? क्योंकि बिहार के लोग चाहना बहुत अच्छी रखते हैं और बिहार में अभी अभी जो हलचल हुई, उसमें बहिनों ने बिहार के भाईयों ने जो कार्य किया है, जो उन्हीं को चाहिए था, जीवन के लिए वह प्राप्त कराने का और ज्ञान सुनाने का, मन का भोजन और तन की परवरिश दोनों की है, इसलिए बिहार में नाम बहुत अच्छा फैला है। प्यार से सुनते हैं, यह सेवा दिल से की है, बापदादा ऐसी सेवा डबल, सिर्फ चीजे देने की नहीं, सेन्टर भी खोले हैं, ऐसे डबल सेवा करने वाले बिहार के बच्चों को बापदादा विशेष मुबारक दे रहे हैं।

वैसे तो देखा जाए और जगह पर भी करते हैं, और की है। उन्हीं का नाम नहीं लेते लेकिन करते रहते हैं। फारेन में भी किया है, इन्डिया में भी किया है लेकिन बिहार की विशेषता यह है कि वहाँ जगह जगह पर ज्ञान की वर्षा बहुत अच्छी की है। कितने सेन्टर खोले हैं? (एक वर्ष में 12 सेन्टर 12 जिलों में खोले हैं) गीता पाठशालायें भी खोली होगी। (वह भी खुली हैं) अच्छा है। बापदादा को यह सेवा बहुत अच्छी लगती है। जहाँ भी ऐसी हालत हो वहाँ यह डबल सेवा करनी चाहिए। सेन्टर खोलने में निमित्त आपको बनना पड़ेगा क्योंकि वहाँ की हालत खराब होती है लेकिन फिर थोड़े समय में आपके सहयोगी अच्छे बन जायेंगे। और बापदादा ने देखा कि अभी इस ज़ोन में भी सेवा फैल रही है चाहे बंगाल, चाहे बिहार, चाहे उनके साथी हैं, नेपाल भी है, उड़ीसा, आसाम और तामिलनाडु। इनके साथी बहुत हैं क्योंकि ज्ञान सूर्य प्रगटा ना तो सेन्टर भी बहुत हैं साथी भी बहुत हैं। और आज तक बापदादा ने देखा कि हर एक एरिया को चाहे बड़ा ज़ोन नहीं है, छोटे हैं लेकिन छोटों में सेवा का उमंग और बहुत है। और रूचि से किया भी है, कर भी रहे हैं। इसलिए इन सब ज़ोन में जो भी नाम ले रहे हैं, उन सब तरफ सेवा का बोलबाला हो गया है। और रिजल्ट में यह भी देखा गया तो रेग्युलर स्टूडेंट भी बने हैं। चाहे बड़े या छोटे प्रोग्रामस, मीडिया का भी साथ है लेकिन अभी जो बाबा ने कहा है कि समय को समीप लाओ, उसकी तैयारी जल्दी से जल्दी करना है। अच्छा। बापदादा जो बंगाल बिहार की तरफ से आये हैं उन सबको भी मुबारक देते हैं कि यज्ञ सेवा का पुण्य का कार्य अच्छा सम्भाल भी रहे हैं, भीड़ थोड़ी ज्यादा है लेकिन बापदादा ने एक बात देखी कि सभी को कम संख्या में आने के बजाए बड़ी संख्या में आना पसन्द आ गया है। दिन प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। फिर भी कुम्भ के मेले से शुद्ध खाना तो मिलता है। रहने के लिए चलो टेन्ट भी तो मिलता है। लेकिन जो भी आते हैं बापदादा उन्हीं का प्यार देख करके, क्योंकि प्यार में कुछ भी देखना पड़ता या करना पड़ता, तो वह पता नहीं पड़ता है, कर रहे हैं, खुशी खुशी से करते हैं। तो बंगाल बिहार के ज़ोन ने भी सेवा का पार्ट अच्छा बजाया। अच्छा। यहाँ जो बैठे हैं इन्हीं में से किसी को तकलीफ है सोने की या खाने की वह हाथ उठाओ। जिसको खाने की सोने की तकलीफ हो तो हाथ उठाओ। हाँ बड़ा हाथ उठाओ। अच्छा।

तामिलनाडु:- क्योंकि आजकल तामिलनाडु भी सेवा के उमंग उत्साह में है। बापदादा ने समाचार भी सुना कि यह जो शिव का मेला बनाया है, उसकी सेवा जगह जगह पर जाके भी करते हैं। फायदा और देशों को भी पहुंचाते हैं यह बहुत अच्छा है क्योंकि फिर भी विशेष तो शिवबाबा का परिचय है ना। उसमें शिवबाबा का ही परिचय मिलता है तो यह सेवा और देशों में भी जाकर करते हैं यह बापदादा को अच्छा सेवा का समाचार लगा। करते रहो। और अच्छा है आपस में जिस ज़ोन की युनिटी है, युनिटी स्वतः ही पुण्य का काम कराती है, उमंग उत्साह बढ़ाती है। बापदादा ने देखा कि सभी ने सारे ज़ोन ने मिलके जो हॉल बनाया है, सबके सहयोग से ज़ोन के सहयोग से जो हाल बनाया है, यह एक दो में ज़ोन वालों का सहयोग यह बात भी अच्छी है। क्योंकि जोन इकट्ठा इसीलिए किया जाता है कि एक दो के नजदीक होने के कारण एक दो को सहयोग देना सहज हो जाता है। तो यह भी सहयोगी बनना, मेरी एरिया नहीं, सब मेरे हैं। आवश्यकता जहाँ है वह मेरा है। चाहे ज़ोन नाम अलग अलग है लेकिन जहाँ आवश्यकता है, आवश्यकता के समय सहयोग देना यह महापुण्य है। अगर अपना पुण्य का खाता जमा करना है, तो सहयोगी बनो और सेवा को और चारचांद लगाओ। यह बापदादा को अच्छा लगा। तो इस संगठन को बढ़ाते रहना। बढ़ाते रहेंगे ना, हाथ उठाओ। सभी ने हाथ उठाया। अच्छा। हम सब एक हैं, यह तो सेवा के कारण, कोई देखरेख हो सके इसके कारण जोन बनाया है, बाकी एक ही हैं, एक ही रहेंगे, एक के हैं, एक के रहेंगे। अच्छा।

नेपाल:- नेपाल की सर्विस का समाचार सुनते रहते हैं। वहाँ जैसा वायुमण्डल है उस हिसाब से सेवा की वृद्धि युक्ति से अच्छी कर रहे हैं। बापदादा नेपाल की सर्विस सुन करके खुश होते हैं कि कुछ भी हो जाए लेकिन यह आध्यात्मिक सेवा कम नहीं होती है। बढ़ती है लेकिन कम नहीं होती है। सेन्टर बढ़ रहे हैं, हलचल में अचल हैं। इसलिए बापदादा को नेपाल की सेवा पर नाज है। बहुत अच्छा। यह सब नेपाल उठा है। नेपाल वाले हाथ ऊंचा करो। यह अच्छा बनाया है कि ज़ोन ज़ोन को मिलने से वह जी भरके आ जाते हैं। और सेवा भी करते हैं सभी को सैलवेशन भी मिल जाती है। अच्छा।

डबल विदेशी :- डबल विदेशियों को बापदादा ने टाइल दिया है डबल पुरूषार्थी। तो बताओ डबल पुरूषार्थी हो, हाथ उठाओ। डबल विदेशी नहीं डबल पुरूषार्थी। बहुत अच्छा। बापदादा हमेशा कहते आये हैं कि विदेश की सेवा ने बाप को विश्व सेवाधारी सिद्ध किया। पहले सिर्फ भारत सेवाधारी थे लेकिन अभी हर टर्न में 90 देशों से 80 देशों से डबल विदेशी आते हैं। तो बापदादा को खुशी है कि हर सीजन में विदेश में भी सेवा बढ़ती जाती है और कितने उमंग से हर टर्न में पहुंच जाते हैं। चाहे कितना भी प्रयत्न करना पड़ता है बापदादा को पता है तो पहले शुरूआत में एक बार होके जाते थे और दूसरे साल के लिए बाक्स में टिकेट के लिए इकट्ठा करते थे, आते जरूर थे। लेकिन अभी तन मन धन सबमें आगे जा रहे हैं। और बापदादा ने पहले भी सुनाया कि यह मधुबन में आके जो रिफ्रेश होते हैं और ग्रुप ग्रुप रिफ्रेश होते हैं, पर्सनल अटेन्शन देते हैं यह बापदादा को पसन्द है और इस बारी की रिजल्ट भी बापदादा ने सुनी। तो एक दो के स्नेही, सहयोगी बनकर एक दो

को कोई भी इशारा देने में पुरूषार्थ तीव्र करने में कोई कमी है तो खुली दिल से एक दो में दी है। यह बापदादा को समाचार पसन्द आया क्योंकि जब तक अपनी कमी को जाना नहीं, पहचाना नहीं तो परिवर्तन हो नहीं सकता। इसलिए बापदादा को पुरूषार्थ की विधि अच्छी लगी। थोड़े थोड़े आपस में मिलके जो मीटिंग करते हैं उसमें अटेन्शन ज्यादा जाता। तो डबल विदेशी डबल पुरूषार्थी हैं यह बापदादा ने मधुबन के समाचार में ज्यादा देखा। बाकी सभी जो भी आये हो अभी अपने को निर्विघ्न समझते हो? निर्विघ्न समझते हो वह हाथ उठाओ, निर्विघ्न। अच्छा। मैजारिटी है। कोई कोई नहीं भी हैं। मैजारिटी हैं। तो बापदादा आज डबल विदेशियों को डबल वरदान देते हैं एक तो सेवा कर सेन्टर की वृद्धि बढ़ाओ। रेग्युलर स्टूडेंट बढ़ाते चलो। बढ़ेंगे। और दूसरा एक दो को पुरूषार्थ करने और कराने का जो मीटिंग बनाई है, जो हर वर्ष करते रहते हैं उसका भी फायदा जितना उठाना चाहिए उतना और उठाते चलेंगे। बाकी आपस में जो बनाया है वह विधि अच्छी है इससे और ज्यादा प्रोग्रेस हो सकती है, इसको अटेन्शन देके और बढ़ायेंगे तो बढ़ जायेगी। सुना। बापदादा खुश है। और दिल में क्या याद करते? वाह बच्चे वाह! अच्छा।

फर्स्ट टाइम वालों से:- अभी की सीजन में मैजारिटी आधी क्लास से भी ज्यादा पहली बार वाले होते हैं क्योंकि रेग्युलर तो बाहर बैठते हैं क्लास में तो नये बैठते हैं। अच्छा सभी ने देखा कितना परिवार बढ़ रहा है। बापदादा कहते हैं वाह परिवार वाह! अभी तो जो भी स्थान बनायेंगे ना वह छोटा होना ही है। प्लैन बनाना है ना। क्योंकि अभी आप सभी का अटेन्शन सन्देश देने में अच्छी तरह से गया। तो जो इतनी सेवा होती है उनमें से वृद्धि तो होगी ना। तो पहले बारी आने वालों को बापदादा पहले बारी आने की बहुत-बहुत पदमगुणा मुबारक देते हैं। अभी निर्विघ्न बन आने वाली समस्याओं को स्वयं वा सहयोग से जल्दी से जल्दी समाप्त कर उड़ते चलो। अभी चलने का समय पूरा हो गया, आप जब आये हो तो उड़ने का समय है। तो उड़ने के समय पर चलना नहीं, उड़ना। तो उड़ेंगे रहेंगे और आगे बढ़ते रहेंगे यह बापदादा का विशेष वरदान और एकस्ट्रा मदद पहले आने वालों को है। अच्छा।

अभी चारों ओर के परमात्म प्रेमी बच्चों को जो सदा बाप के प्यार में उड़ते रहते हैं तीव्र पुरूषार्थी हैं और सेवा में निर्विघ्न सच्चे सेवाधारी हैं, ऐसे चारों ओर के बच्चों को बापदादा भी देख रहे हैं, साथ साथ दूर वालों को भी देख रहे हैं और यहाँ शान्तिवन में भी जो जगह जगह पर स्क्रीन पर देख रहे हैं, सुन रहे हैं, उन सभी बच्चों को बापदादा सदा के लिए खुश रहो और खुशी बांटों, यह वरदान दे रहे हैं। खुश चेहरा, कोई भी आपका चेहरा देखे वह चेहरा देखके खुश हो जाए। कैसा भी हो आपका चेहरा खुशनुमा देखके खुद भी खुश हो जाए, यह वरदान चारों ओर के बच्चे या जो सम्मुख बैठे हैं उन सभी के लिए एक वरदान है। कभी चेहरा मुरझाया हुआ नहीं। अगर आप मुरझायेंगे तो विश्व का हाल क्या होगा! आपको सदा खुशनुमा चेहरा और खुशनुमा चलन में रहना है और रहाना है। ऐसे सभी तीव्र पुरूषार्थी बच्चों को बापदादा का यादप्यार और मीठे मीठे बच्चों को नमस्ते।

निर्मलशान्ता दादी से:- यह अच्छा है। कोई भी हिसाब किताब चुक्त् कराने में साक्षी, न्यारे प्यारे होकरके कराने में एकजैम्पुल अच्छी हो।

प्राणेश्वर शिव-भोलानाथ बाप के अति स्नेही, सदा विश्व परिवर्तन के आक्यूपेशन को स्मृति में रख, विश्व कल्याण की सेवा के साथ स्वयं को सम्पन्न बनाने के तीव्र पुरुषार्थ में तत्पर निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद के साथ 85 वीं त्रिमूर्ति शिवजयन्ती की सबको कोटि कोटि बधाई हो।

यह भी बाप और बच्चों का अलौकिक जन्म दिन हम सभी अर्थ सहित मनाते, सबको शिवबाबा के अवतरण का दिव्य सन्देश देते हुए बधाईयां देते हैं। बाबा कहते बच्चे, अब तो बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनने के प्लैन बनाओ, कर्मातीत बनने की धुन लगाओ। अपनी सूक्ष्म चेकिंग कर विकारों के अंश और वंश को समाप्त करो। मीठे बाबा के ऐसे प्यार भरे शिक्षायुक्त मधुर महावाक्य आप सब लाइव सुन रहे होंगे। समय की तीव्रता प्रमाण सभी तरफ सेवाओं की भी धूम है, साथ-साथ तपस्या की भी बहुत अच्छी लहर चल रही है। इस 85 वीं त्रिमूर्ति शिव जयन्ती को सभी बहुत उमंग-उत्साह से मना रहे हैं। सब तरफ शिव बाबा के ध्वज फहराये जा रहे हैं। कई स्थानों पर प्रभातफेरियां निकालकर शिव सन्देश दे रहे हैं। अनेक स्थानों पर प्रदर्शनी, 12 ज्योर्तिलिंगम् मेलों का भी आयोजन किया गया है।

इस बार अपने मनमोहिनी वन में भी विशेष शिव दर्शन आध्यात्मिक मेला 9 मार्च से 14 मार्च 2021 तक रखा गया है। एक सप्ताह से मधुबन के सभी स्थानों पर झण्डे भी फहराये जा रहे हैं।

अभी इस टर्न में कर्नाटक के भाई बहिनें मधुबन बेहद घर में पहुंचे हैं। सभी एक दो को अलौकिक जन्म दिन की बधाईयां देते खुशियां मना रहे हैं। अच्छा - सभी को बहुत-बहुत याद.... ओम् शान्ति।

“सेवा के साथ-साथ अब सम्पन्न बनने का प्लैन बनाओ, कर्मातीत बनने की धुन लगाओ”

आज शिव बाप अपने सालिग्राम बच्चों के साथ अपनी और बच्चों के अवतरण की जयन्ती मनाने आये हैं। यह अवतरण की जयन्ती कितनी वण्डरफुल है। चारों तरफ के सभी बच्चे भाग-भाग कर आये हैं बाप की जयन्ती और अपनी जयन्ती मनाने के लिए। बाप और बच्चों की जयन्ती अर्थात् अवतरण दिवस एक ही है। बाप और बच्चों का एक दिवस जन्म यही वण्डर है। तो आज आप सभी सालिग्राम बच्चे बाप को मुबारक देने आये हो वा बाप से मुबारक लेने आये हो? देने भी आये हो, लेने भी आये हो। साथ-साथ की निशानी है कि आप बच्चों का और बाप का आपस में बहुत-बहुत-बहुत स्नेह है इसलिए जन्म भी साथ-साथ है और रहते भी सारा जन्म कम्बाइण्ड अर्थात् साथ हैं। इतना प्यार देखा है! अगर आक्यूपेशन भी है तो बाप और बच्चों का एक ही विश्व परिवर्तन करने का आक्यूपेशन है और वायदा क्या है? कि परमधाम, स्वीट होम में भी साथ-साथ चलेगे या आगे पीछे चलेगे? साथ-साथ चलना है ना! तो ऐसा स्नेह आपका और बाप का है। न बाप अकेला कुछ कर सकता, न बच्चे अकेले कुछ कर सकते। कर सकते हो? सिवाए बाप के कुछ कर सकते हो! और बाप भी कुछ नहीं कर सकता इसीलिए ब्रह्मा बाप का आधार लिया आप ब्राह्मणों को रचने के लिए। सिवाए ब्राह्मणों के बाप भी कुछ नहीं कर सकते इसलिए इस अलौकिक अवतरण के जन्म दिवस पर बाप बच्चों को और बच्चे बाप को पदमापदम बार मुबारक दे रहे हैं। आप बाप को दे रहे हैं, बाप आपको दे रहे हैं। अमृतवेले से लेकर, उससे भी पहले से बच्चों की मुबारकें, कार्ड, पत्र, दिल के मीठे-मीठे गीत बाप को मिले और अभी भी बापदादा देख रहे हैं कि चारों ओर के देश-विदेश के बच्चे सूक्ष्म में बापदादा को मुबारक दे रहे हैं। पहुंच रही हैं। बच्चों के पास आवाज पहुंच रहा है और बच्चों के दिल का आवाज बाप को पहुंच रहा है। चारों ओर बच्चे खुशी में झूम रहे हैं। वाह! बाबा, वाह! हम सालिग्राम आत्मायें! वाह! वाह!

के गीत गा रहे हैं। इसी आपके जन्म दिवस की यादगार द्वापर से अब तक भक्त भी मनाते रहते हैं। भक्त भी भावना में कम नहीं हैं। लेकिन भगत हैं, बच्चे नहीं हैं। वह हर वर्ष मनाते हैं और आप सारे कल्प में एक बार अवतरण का महत्व मनाते हो। वह हर वर्ष व्रत रखते हैं, व्रत रखते भी हैं और व्रत लेते भी हैं। आप एक ही बार व्रत ले लेते हो, कापी आपकी ही की है लेकिन आपका महत्व और उनके यादगार के महत्व में अन्तर है। वह भी पवित्रता का व्रत लेते हैं लेकिन हर वर्ष व्रत लेते हैं एक दिन के लिए। आप सभी ने भी जन्म लेते एक बार पवित्रता का व्रत लिया है ना! लिया है कि लेना है? ले लिया है। एक बार लिया, वह वर्ष-वर्ष लेते हैं। सभी ने लिया है? सिर्फ ब्रह्मचर्य नहीं, सम्पूर्ण पवित्रता का व्रत लिया है। पाण्डव, सम्पूर्ण पवित्रता का व्रत लिया है? या सिर्फ ब्रह्मचर्य में ठीक है! ब्रह्मचर्य तो फाउण्डेशन है लेकिन सिर्फ ब्रह्मचर्य नहीं साथ में और चार भी हैं। चार का भी व्रत लिया है कि सिर्फ एक का लिया है? चेक करो। क्रोध करने की तो छुट्टी है ना? नहीं छुट्टी है? थोड़ा-थोड़ा तो क्रोध करना पड़ता है ना? नहीं करना पड़ता है? बोलो पाण्डव, क्रोध नहीं करना पड़ता है? करना तो पड़ता है! चलो, बापदादा ने देखा कि क्रोध और सभी साथी जो हैं, महाभूत का तो त्याग किया है लेकिन जैसे माताओं को, प्रवृत्ति वालों को बड़े बच्चों से इतना प्यार नहीं होता, मोह नहीं होता लेकिन पोत्रों धोत्रों से बहुत होता है। छोटे-छोटे बच्चे बहुत प्यारे लगते हैं। तो बापदादा ने देखा कि बच्चों को भी यह 5 विकारों के महाभूत जो हैं, महारूप उनसे तो प्यार कम हो गया है लेकिन इन विकारों के जो बाल बच्चे हैं ना, छोटे-छोटे अंश मात्र, वंश मात्र, उससे अभी भी थोड़ा-थोड़ा प्यार है। है प्यार! कभी-कभी तो प्यार हो जाता है। हो जाता है? मातायें? डबल फारेनर्स, क्रोध नहीं आता? कई बच्चे बड़ी चतुराई की बातें करते हैं, सुनायें क्या कहते हैं? सुनायें? अगर सुनायें तो आज छोड़ना पड़ेगा। तैयार हैं? तैयार हैं छोड़ेंगे? या सिर्फ फाइल में कागज जमा करेंगे? जैसे हर साल करते हो ना, प्रतिज्ञा के फाइल बाप के पास बहुत-बहुत बड़े हो गये हैं, तो अभी भी ऐसे तो नहीं कि एक प्रतिज्ञा का कागज फाइल में एड कर देंगे, ऐसे तो नहीं! फाइनल करेंगे या फाइल में डालेंगे? क्या करेंगे? बोलो, टीचर्स क्या करेंगे? फाइनल? हाथ उठाओ। ऐसे ही वायदा नहीं करना। बापदादा फिर थोड़ा सा रूप धारण करेगा। ठीक है। डबल फारेनर्स - करेंगे फाइनल? जो फाइनल करेंगे वह हाथ उठाओ। टी.वी. में निकालो। छोटा, त्रेतायुगी हाथ, बड़ा उठाओ। अच्छा, ठीक है। सुनो - बाप और बच्चों की बातें क्या होती हैं? बापदादा मुस्कराते रहते हैं। बाप कहते हैं क्रोध क्यों किया? कहते हैं मैंने नहीं किया, लेकिन क्रोध कराया गया। किया नहीं, मुझे कराया गया। अभी बाप क्या कहे? फिर क्या कहते हैं, अगर आप भी होते ना तो आपको भी आ जाता। मीठी-मीठी बातें करते हैं ना! फिर कहते हैं निराकार से साकार तन लेके देखो। अभी बताओ ऐसे मीठे बच्चों को बाप क्या कहे! बाप को फिर भी रहमदिल बनना ही पड़ता है। कहते हैं अच्छा, अभी माफ कर रहे हैं लेकिन आगे नहीं करना। लेकिन जवाब बहुत अच्छे-अच्छे देते हैं।

तो पवित्रता आप ब्राह्मणों का सबसे बड़े से बड़ा श्रृंगार है, इसीलिए आपके चित्रों का कितना श्रृंगार करते हैं। यह पवित्रता का यादगार श्रृंगार है। पवित्रता, सम्पूर्ण पवित्रता, काम चलाऊ पवित्रता नहीं। सम्पूर्ण पवित्रता आप ब्राह्मण जीवन की सबसे बड़े ते बड़ी प्रापर्टी है, रॉयल्टी है, पर्सनाल्टी है इसीलिए भक्त लोग भी एक दिन पवित्रता का व्रत रखते हैं। यह आपकी कॉपी की है। दूसरा व्रत लेते हैं - खाने-पीने का। खाने पीने का व्रत भी आवश्यक होता है। क्यों? आप ब्राह्मणों ने भी खाने-पीने का व्रत पक्का लिया है ना! जब मधुबन आने का फार्म सबसे भराते हो, तो यह भी फार्म में भराते हो ना - खाना-पीना शुद्ध है? भराते हो ना! तो खाने-पीने का व्रत पक्का है? है पक्का कि कभी-कभी कच्चा हो जाता है? डबल विदेशियों का तो डबल पक्का होगा ना! डबल विदेशियों का डबल पक्का है या कभी थक जाते हो तो कहते हो अच्छा आज थोड़ा खा लेते हैं। थोड़ा ढीला कर देते हैं, नहीं। खाने-पीने का पक्का है, इसीलिए भक्त लोग भी खाने-पीने का व्रत लेते हैं। तीसरा व्रत लेते हैं जागरण का - रात जागते हैं ना! तो आप ब्राह्मण भी अज्ञान नींद से जागने का व्रत लेते हो। बीच-बीच में अज्ञान की नींद तो नहीं आती है ना! भक्त लोग आपको कॉपी कर रहे हैं, तो आप पक्के हैं तभी तो कॉपी करते हैं। कभी भी अज्ञान अर्थात् कमजोरी की,

अलबेलेपन की, आलस्य की नींद नहीं आये। या थोड़ा-थोड़ा झुटका आवे तो हर्जा नहीं है? झुटका खाते हो? ऐसे अमृतवेले भी कई झुटके खाते हैं। लेकिन यह सोचो कि हमारे यादगार में भक्त लोग क्या-क्या कॉपी कर रहे हैं! वह इतने पक्के रहते हैं, कुछ भी हो जाए, लेकिन व्रत नहीं तोड़ते हैं। आज के दिन भक्त लोग व्रत रखेंगे खाने-पीने का भी और आप क्या करेंगे आज? पिकनिक करेंगे? वह व्रत रखेंगे आप पिकनिक करेंगे, केक काटेंगे ना! पिकनिक करेंगे क्योंकि आपने जन्म से व्रत ले लिया है इसीलिए आज के दिन पिकनिक करेंगे।

बापदादा अभी बच्चों से क्या चाहते हैं? जानते तो हो। संकल्प बहुत अच्छे करते हो, इतने अच्छे संकल्प करते हैं जो सुन-सुन खुश हो जाते हैं। संकल्प करते हो लेकिन बाद में क्या होता है? संकल्प कमजोर क्यों हो जाते हैं? जब चाहते भी हो क्योंकि बाप से प्यार बहुत है, बाप भी जानते हैं कि बापदादा से सभी बच्चों का दिल से प्यार है और प्यार में सभी हाथ उठाते हैं कि 100 परसेन्ट तो क्या लेकिन 100 परसेन्ट से भी ज्यादा प्यार है और बाप भी मानते हैं प्यार में सब पास हैं। लेकिन क्या है? लेकिन है कि नहीं है? लेकिन आता है कि नहीं आता है? पाण्डव, बीच-बीच में लेकिन आ जाता है? ना नहीं करते हैं, तो हाँ है! बापदादा ने मैजारिटी बच्चों की एक बात नोट की है, प्रतिज्ञा कमजोर होने का एक ही कारण है, एक ही शब्द है। सोचो, वह एक शब्द क्या है? टीचर्स बोलो, एक शब्द क्या है? पाण्डव बोलो एक शब्द क्या है? याद तो आ गया ना! एक शब्द है - 'मैं'। अभिमान के रूप में भी 'मैं' आता है और कमजोर करने में भी 'मैं' आता है। मैंने जो कहा, मैंने जो किया, मैंने जो समझा, वही राइट है। वही होना चाहिए। यह अभिमान का 'मैं'। मैं जब पूरा नहीं होता है तो फिर दिलशिकस्त में भी आता है, मैं कर नहीं सकता, चल नहीं सकता, बहुत मुश्किल है। एक बॉडी कॉन्सेप्शन का 'मैं' बदल जाए, 'मैं' स्वमान भी याद दिलाता है और 'मैं' देह-अभिमान में भी लाता है। 'मैं' दिलशिकस्त भी करता है और 'मैं' दिलखुश भी करता है और अभिमान की निशानी जानते हो क्या होती है? कभी भी किसी में भी अगर बॉडीकॉन्सेप्शन का अभिमान अंश मात्र भी है, उसकी निशानी क्या होगी? वह अपना अपमान सहन नहीं कर सकेगा। अभिमान अपमान सहन नहीं करायेगा। जरा भी कोई कहेगा ना - यह ठीक नहीं है, थोड़ा निर्माण बन जाओ, तो अपमान लगेगा, यह अभिमान की निशानी है।

बापदादा वतन में मुस्करा रहे थे - यह बच्चे शिवरात्रि पर यहाँ-वहाँ भाषण करते हैं ना, अभी बहुत भाषण कर रहे हैं ना। उसमें कहते हैं, बापदादा को बच्चों की प्वाइंट याद आई। तो उसमें कहते हैं कि शिवरात्रि पर बकरे की बलि चढ़ाते हैं - वह बकरा में-में बहुत करता है ना, तो ऐसे शिवरात्रि पर यह "मैं" "मैं" की बलि चढ़ा दो। तो बाप सुन-सुनकर मुस्करा रहे थे। तो इस 'मैं' की आप भी बलि चढ़ा दो। सरेण्डर कर सकते हो? कर सकते हैं? पाण्डव कर सकते हो? डबल फारनेर्स कर सकते हो? फुल सरेण्डर या सरेण्डर? फुल सरेण्डर। आज बापदादा झण्डे पर ऐसे ही प्रतिज्ञा नहीं करायेगा। आज प्रतिज्ञा करो और फाइल में कागज जमा करना पड़े, ऐसी प्रतिज्ञा नहीं करायेगा। क्या सोचते हो, दादियां आज भी ऐसी प्रतिज्ञा कराये? फाइनल करेंगे या फाइल में जमा करेंगे? बोलो, (फाइनल कराओ) हिम्मत है? हिम्मत है? सुनने में मगन हो गये हैं, हाथ नहीं उठा रहे हैं। कल तो कुछ नहीं हो जायेगा! नहीं ना! कल माया चक्कर लगाने आयेगी। माया का भी आपसे प्यार है ना क्योंकि आजकल तो सभी धूमधाम से सेवा का प्लैन बना रहे हैं ना। जब सेवा जोर-शोर से कर रहे हो तो सेवा जोर-शोर से करना अर्थात् सम्पूर्ण समाप्ति के समय को समीप लाना है। ऐसे नहीं समझो भाषण करके आये लेकिन समय को समीप ला रहे हो। सेवा अच्छी कर रहे हो। बापदादा खुश है। सन्देश दे रहे हो तो सन्देश के साथ-साथ सम्पन्नता की भी तैयारी है?

ब्रह्मा बाप सभी बच्चों से पूछते हैं कि गेट खोलने की डेट बताओ। गेट खोलना है ना! चलना है ना! आज मनाना अर्थात् बनना। सिर्फ केक नहीं काटेंगे लेकिन मैं को समाप्त करेंगे। सोच रहे हैं या सोच लिया है? क्योंकि बापदादा के पास अमृतवेले सबके बहुत वैरायटी संकल्प पहुंचते हैं। तो आपस में राय करना और डेट बाप को

बताना। जब तक डेट नहीं फिक्स की है ना, तब तक कोई कार्य नहीं होता। पहले आपस में महारथी डेट फिक्स करो फिर सब फालो करेंगे। फालो करने वाले तैयार हैं और आपकी हिम्मत से और बल मिल जायेगा। जैसे देखो अभी उमंग उल्लास दिलाया तो तैयार हो गये ना! ऐसे सम्पन्न बनने का प्लैन बनाओ। धुन लगाओ, कर्मातीत बनना ही है। कुछ भी हो जाए बनना ही है, करना ही है, होना ही है। साइंस वालों का भी आवाज, विनाश करने वालों का भी आवाज बाप के कानों में आता है, वह भी कहते हैं क्यों रोकते हैं, क्यों रोकते हैं...। एडवांस पार्टी भी कहती है डेट फिक्स करो, डेट फिक्स करो। ब्रह्मा बाप भी कहते हैं डेट फिक्स करो। तो यह मीटिंग करो।

आगे लाइन वाली टीचर्स ठीक है? मीटिंग करेंगे ना! बापदादा को अभी डेट चाहिए, ऐसे नहीं हो जायेगा, कर रहे हैं, यह नहीं। यह बहुत हो गया। पहले तो आप शक्तियों को, देवता रूप पाण्डवों को रहम आना चाहिए। कितना पुकार रहे हैं। अभी थोड़ी-थोड़ी पुकार सुनो तो सही, बिचारे बहुत पुकार रहे हैं, जिगर से पुकार रहे हैं, तड़फ रहे हैं। साइंस वाले भी बहुत चिल्ला रहे हैं, कब करें, कब करें, कब करें, पुकार रहे हैं। आज भले केक काट लो, लेकिन कल से पुकार सुनना। मनाना तो संगमयुग के स्वहेज हैं। एक तरफ मनाना दूसरे तरफ आत्माओं को बनाना। अच्छा। तो क्या सुना?

आपका गीत है - दुःखियों पर कुछ रहम करो। सिवाए आपके कोई रहम नहीं कर सकता इसलिए अभी समय प्रमाण रहम के मास्टर सागर बनो। स्वयं पर भी रहम, अन्य आत्माओं प्रति भी रहम। अभी अपना यही स्वरूप लाइट हाउस बन भिन्न-भिन्न लाइट्स की किरणें दो। सारे विश्व की अप्राप्त आत्माओं को प्राप्ति की अंचली की किरणें दो। अच्छा।

डबल विदेशी:- डबल विदेशियों को देखकरके बापदादा को डबल खुशी होती है। आप सबको बहुत खुशी है ना! कितनी खुशी है? बहुत खुशी है। सदा खुश रहो, आबाद रहो, औरों को भी खुशी से आबाद करते रहो। सभा अच्छी लगती है, इन्टरनेशनल सभा है ना! तो आप सभी को बापदादा अलौकिक जन्म की मुबारक दे रहे हैं। मुबारक हो, मुबारक हो। अच्छा।

सेवा का टर्न कर्नाटक का है:- अच्छा है, यह गोल्डन चांस सेवा का, परिवार के नजदीक लाने का चांस है। देखो सेवा में आये हो तो सबकी नज़र कहाँ पड़ती है। कर्नाटक वाले सेवा कर रहे हैं। तो सबको कर्नाटक याद आता है और आपको याद की दुआयें मिलती हैं। अच्छा।

सर्व साक्षात बाप मूर्त श्रेष्ठ आत्माओं को, सदा उमंग-उत्साह में रहने वाले बाप के समीप आत्माओं को, सदा सर्व कदम बाप समान करने वाले बच्चों को, चारों ओर के ब्राह्मण जन्म के मुबारक पात्र बच्चों को, सदा एकाग्रता की शक्ति सम्पन्न आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और पदमापदमगुणा जन्म मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो और नमस्ते।

त्रिमूर्ति शिव जयन्ती पर प्यारे अव्यक्त बापदादा ने अपने हस्तों से शिव ध्वज फहराया और सबको बधाईयां दी:-

आज के दिन सभी ने अपने जन्म दिन की मुबारक दी और ली और झण्डा भी लहराया। लेकिन अभी वह दिन जल्दी लाना है जो विश्व के ग्लोब के ऊपर सर्व आत्मायें खड़ी होकर आप सबके फेस में बाप का झण्डा देखें। कपड़े का झण्डा तो निमित्त मात्र है लेकिन एक-एक बच्चे का फेस बाप का चित्र दिखावे। ऐसा झण्डा लहराना है। वह दिन भी बहुत-बहुत-बहुत जल्दी लाना है, आना है, आना है। ओम् शान्ति।

प्राणप्यारे अव्यक्तमूर्त मात-पिता बापदादा के अति लाडले, सदा दिलाराम बाप के दिल में समाये हुए, संगमयुग की सर्व प्राप्तियों से सम्पन्न, ड्रामा की हर सीन को साक्षी हो देखते सेकण्ड में फुलस्टाप लगाने वाले, सदा सन्तुष्टमणि बन सबको सन्तुष्ट करने वाली निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर यादप्यार स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - हम सबकी अति स्नेही प्यारी मीठी दादी गुल्जार जी, जिनके माध्यम से हम सबको इतनी ऊंची परमात्म पालना मिलती रही है। प्यारे बापदादा ने अव्यक्त रूपधारी बन दादी जी को अपना साकार माध्यम बनाया और दादी जी अथक बन निरन्तर एकरस खुशनुमा स्थिति में रह, अपने शरीर की भी परवाह न कर सभी को अव्यक्त स्थिति बनाने में अपना भरपूर सहयोग देती रही। हजारों, लाखों ब्राह्मण बच्चों की दादी जी को दुआयें मिली हैं। अभी भी दादी जी फरिश्ते रूप में हम सबके बीच हैं, प्यारे बापदादा दादी जी को अपना राइट हैण्ड बनाकर अव्यक्त वतन से विश्व कल्याण की सेवा आगे भी कराते रहेंगे। कल दादी जी के निमित्त विशेष सभी स्थानों पर भोग तथा ब्रह्मा भोजन का कार्यक्रम रहा।

आज ऑन लाइन अव्यक्ति मिलन का यह लास्ट टर्न है, इसमें तामिलनाडु ज़ोन के भाई बहिनें विशेष मधुबन घर में पधारे हैं। उनके ज़ोन के सेवाओं की गोल्डन जुबली भी है, आज सवरे गोल्डन जुबली निमित्त विशेष डायमण्ड हाल में सभी मुख्य भाई बहिनों ने तामिलनाडु, पाण्डेचरी, साउथ केरला के भाई बहिनों को अपनी शुभ कामनायें देते हुए निर्विघ्न ज़ोन, निर्विघ्न सेवाओं की बधाइयां दी।

हमारी मीठी दादी जानकी जी को अव्यक्त हुए एक वर्ष पूरा हो रहा है। 27 मार्च 2021 को दादी जी के प्रथम पुण्य स्मृति दिवस पर उनकी यादगार में बनाये गये नये “शक्ति-स्तम्भ” का लोकार्पण किया जायेगा। उसके पश्चात दादी जी के निमित्त विशेष भोग तथा ब्रह्माभोजन का कार्यक्रम रहेगा। अभी अप्रैल से मधुबन के तीनों ही स्थानों पर अक्टूबर तक विशेष योग तपस्या के कार्यक्रम चलते रहेंगे। अच्छा - सभी को बहुत-बहुत याद... ओम् शान्ति।

“अपने भाग्य और प्राप्तियों को स्मृति में रख सदा हर्षित व सन्तुष्ट रहो, दृष्टि वृत्ति और प्रवृत्ति द्वारा सन्तुष्टता का अनुभव कराओ”

आज बापदादा सभी बच्चों को देख खुश हो रहे हैं। हर एक बच्चा परमात्म प्यार द्वारा पहुंच गये हैं। तो आज बापदादा हर एक बच्चे के मस्तक में भाग्य की रेखायें देख रहे हैं। ऐसा भाग्य और इतना बड़ा भाग्य सारे कल्प में किसी को प्राप्त नहीं है क्योंकि आपको भाग्य देने वाला स्वयं भाग्य दाता है। हर एक के मस्तक में पहले तो चमकता हुआ सितारा का भाग्य चमक रहा है। मुख में मधुर वाणी की रेखा चमक रही है। होठों पर मधुर मुस्कान की रेखा चमक रही है। दिल में दिलाराम बाप के लवलीन की रेखा चमक रही है। हाथों में सर्व खजानों के श्रेष्ठता की रेखा चमक रही है। पांव में हर कदम में पदम की रेखा चमक रही है। अभी सोचो, ऐसा भाग्य और किसका हुआ है! इसलिए आपके यादगार चित्रों का भी भाग्य वर्णन होता रहता है। और यह भाग्य स्वयं भाग्यविधाता ने हर एक बच्चे का बनाया है।

बापदादा हर बच्चे का भाग्य देख हर बच्चे को मुबारक दे रहे हैं – वाह बच्चे वाह! और यह भाग्य इस संगम पर ही मिलता है और चलता है। संगमयुग का सुख सब युगों से श्रेष्ठ है। सतयुग का भाग्य भी संगम के पुरुषार्थ की प्रालब्ध है इसलिए संगमयुग की प्राप्ति सतयुग की प्रालब्ध से भी ज्यादा है। अपने भाग्य में खो जाओ। कुछ भी होता रहे, अपना भाग्य स्मृति में लाओ तो क्या निकलता है? वाह मेरा भाग्य! क्योंकि स्वयं भाग्य दाता आपका बाप है। तो भाग्य दाता द्वारा हर एक को अपना भाग्य मिला है। जानते हो कि हम इतने भाग्यवान हैं कि कभी-कभी जानते हो, सदा नशा रहता है? दुनिया वाले तो देखकर पूछते हैं आपको क्या मिला है? और आप लोग उत्तर क्या देते हो? जो पाना था वह पा लिया। पा लिया है, हाथ उठाओ। पा लिया है, अच्छा। पा लिया है? फलक से कहते हो, कोई अप्राप्त वस्तु ही नहीं, है ना फखुर? और मिला कैसे? सिर्फ बाप को जाना, माना, अपना बनाया तो भाग्य मिल गया। इस भाग्य को जितना स्मृति में लाते रहेंगे उतना हर्षित होते रहेंगे। भाग्यवान आत्मा का चेहरा सदा हर्षित रहेगा। रहेगा नहीं, रहता है। उनकी दृष्टि, उनकी वृत्ति और उनकी प्रवृत्ति सदा सन्तुष्ट आत्मा बन स्वयं भी सन्तुष्ट रहेगी और दूसरों को भी सन्तुष्ट बनायेगी। तो आप सबको सन्तुष्टता का नशा रहता है? क्योंकि सन्तुष्टता का आधार है सर्व प्राप्ति। अप्राप्ति असन्तुष्टता का आधार है। तो आप क्या अनुभव करते हो? अप्राप्त कोई वस्तु है कि सर्व प्राप्ति है? प्राप्ति का नशा है? है, सदा है या कभी-कभी है? वैसे तो यही कहते हो पा लिया जो पाना था। तो जहाँ सर्व प्राप्ति है वहाँ असन्तुष्टता का नाम नहीं है।

तो बापदादा आज देश विदेश, कितने देशों से सभी बच्चे आके इकट्ठे हुए हैं लेकिन सबसे दूर से आने वाला कौन? क्या अमेरिका वाले दूर से आये हैं? अमेरिका वाले दूर से आये हैं ना! और बाप कहाँ से आया है? अमेरिका तो इसी लोक में है लेकिन बापदादा कहाँ से आये हैं? परमधाम से, ब्रह्मा बाप भी सूक्ष्मवतन से आये हैं। तो कौन दूर से आया? सबसे दूर कौन? यह है बाप और बच्चों के प्यार का नज़ारा। आपने कहा मेरा बाबा और बाप ने कहा मेरा बच्चा। सिर्फ एक को जानने से कितना वर्सा मिल गया। दुनिया वाले सुख के लिए, शान्ति के लिए दूँढ रहे हैं - कहाँ शान्ति मिलेगी, कहाँ सुख मिलेगा और आपकी जीवन ही सुख शान्ति सम्पन्न हो गई। बापदादा से पूछते हो ना कि बापदादा क्या चाहते हैं? तो बापदादा हर बच्चे से यही चाहते हैं कि हर एक बच्चा सदा स्वराज्य अधिकारी बनके रहे। कभी-कभी नहीं क्योंकि अभी के स्वराज्य अधिकार का वरदान बाप ने इस संगमयुग के लिए पूरा दिया है, थोड़ा नहीं, कभी-कभी वाला नहीं, सदा। तो सोचो सदा के लिए स्वराज्य अधिकारी बन रहते हो? क्योंकि बापदादा ने सुनाया कि इन सभी कर्मेन्द्रियों के, मन बुद्धि संस्कार के भी मालिक हो। सबके लिए मेरा शब्द बोलते हो, मैं नहीं बोलते हो, मेरा बोलते हो। तो मन बुद्धि संस्कार मेरा है तो मेरे के ऊपर सदा अधिकार रहता है। ऐसे मन बुद्धि संस्कार के ऊपर पूरा ही अधिकारी हो, इसको कहा जाता है स्वराज्यधारी। जो आर्डर करो उसी प्रमाण यह कार्य करने के लिए निमित्त हैं। लेकिन इसके लिए चलते फिरते कार्य करते मालिकपन का नशा होना चाहिए। निश्चय और नशा।

अब तो आत्माओं को मन्सा द्वारा भी सेवा देने का समय है। चिल्लाते रहते, हे पूर्वज हमें थोड़ा सा सुख शान्ति की किरणें दे दो। तो हे पूर्वज दुःखियों की पुकार सुनाई देती है ना! बापदादा ने इशारा दे दिया है कि कुछ भी आपदा अचानक आनी है, इसके लिए सेकण्ड में फुलस्टाप। वह प्रैक्टिस भी कर रहे हो क्योंकि उस समय पुरुषार्थ का समय नहीं होगा, अभ्यास करें, लगाओ फुलस्टाप और हो जाए आश्चर्य की मात्रा, इसलिए पुरुषार्थ का समय अभी मिला हुआ है। उस समय प्रैक्टिकल करने का समय है, तो अभी से इस अभ्यास को कर भी रहे हैं, बापदादा रिजल्ट देखते हैं, अटेन्शन में है, कर भी रहे हैं लेकिन और भी अटेन्शन को अण्डरलाइन करो। देखो पुरुषार्थ

कितना सहज है, मैं भी बिन्दी, लगाना भी बिन्दी है सिर्फ अटेन्शन देना है।

बापदादा विशेष बच्चों को सौगात देते हैं **बच्चे मैं आपके सदा साथ हूँ**। बाबा कहा और बच्चों के लिए बाप सदा हाज़िर है। जो कहा गया है हज़ूर हाज़िर है, सर्वव्यापी नहीं है लेकिन बच्चों के आगे हज़ूर हाज़िर है। तो सदा विजयी बनना, जहाँ भगवान साथ है वहाँ विजयी बनना क्या मुश्किल है। विजय आपका जन्म सिद्ध अधिकार है। सिर्फ मेरा बाबा कहा तो विजयी है ही इसलिए सदा विजयी बनना, जो याद में रहता उसके लिए अति सहज है। मुश्किल नहीं। जहाँ भगवान है वहाँ विजय है ही। तो आज बापदादा सभी बच्चों को देख खुश हो रहे हैं कि कितने स्नेह से, कौन से साधन से आये हैं? ट्रेन में या प्लेन में, वह तो शरीर के द्वारा पहुंच गये हैं लेकिन दिल से तो प्यार आपको यहाँ लाया है। हिम्मत आपकी है तो मदद बाप की है ही। अभी बापदादा यही चाहते हैं कि **हर बच्चा हर कर्म में अपने स्वराज्य की सीट पर स्थित रहे। अच्छा।**

डबल विदेशी:- बापदादा को यह बहुत अच्छा लगता है जो मधुबन में आके आपस में भी मिलते, बाप से भी मिलते और सर्विस की लेन देन भी करते। और तो कहाँ इतना बड़ा परिवार इकट्ठा देख नहीं सकते, मधुबन में ही इतना बड़ा परिवार देखते हो। तो दिल में क्या आता है? वाह बाबा और वाह मेरा ईश्वरीय परिवार! और बापदादा को कितनी खुशी होती है, अपने बच्चों को देखकर। वैसे तो अमृतवेले बापदादा सभी तरफ चक्र लगाते हैं, उनके लिए चक्र लगाना क्या बड़ी बात है!

बाकी बापदादा की रोज़ यादप्यार तो मिलती रहती है। देखो, घर बैठे भी बापदादा की यादप्यार एक दिन भी मिस नहीं होती, अगर रोज़ विधिपूर्वक मुरली पढ़ते हैं तो। एक दिन भी यादप्यार मिस नहीं करते। मिलती है ना! मिलती है? रोज़ यादप्यार मिलती है। सभी को मिलती है ना? यह है बापदादा के प्यार की निशानी। मुरली मिस तो यादप्यार भी मिस। सिर्फ मुरली नहीं मिस की लेकिन बापदादा का यादप्यार, वरदान सब मिस किया। मुरली तो पढ़ भी लेंगे लेकिन जो समय फिक्स है बापदादा की यादप्यार लेने का, वह तो मिस हुआ ना। तो उमंग है इस पर बापदादा खुश भी है। अच्छा।

बाकी जो भी सभा में आये हैं, नये भी हैं पुराने भी हैं तो यह पक्का पक्का पक्का नोट करो मुरली नहीं मिस करनी है क्योंकि बाप रोज़ परमधाम से आते हैं, कितना दूर से आते हैं, बच्चों के लिए आता है ना! जैसे बाप मुरली मिस नहीं करते, ऐसे बच्चों को भी मुरली मिस नहीं करना है। अच्छा।

अभी जो मधुबन में आता है ना, तो जैसे फार्म भरते हैं, उसमें यह भी लिखो कि मुरली रोज़ सुनी या कितने दिन मिस किया? मंजूर है? जिसको मंजूर है वह हाथ उठाओ। मधुबन वाले भी हाथ उठाओ। किसी भी कारण से मुरली मिस नहीं करनी है। जैसे खाना नहीं मिस करते हो तो यह भी भोजन है ना। वह शरीर का भोजन, यह आत्मा का भोजन। अच्छा लगा। जो नये भी आये हैं, आने को तो मिला है ना। उन्हों को भी यह नियम पालन करना है। जैसे और नियम हैं वैसे यह भी नियम है। ब्राह्मण माना मुरली सुनने वाला, सेवा करने वाला। अच्छा। जो भी ज़ोन आये हैं, वह एक-एक अलग उठाओ।

तामिलनाडु:- यह सेवा के लिए आये हैं। बहुत अच्छा। सेवा माना मेवा खाना। जो भी आये हैं, सबको बापदादा यही मुबारक देते हैं कि सभी यज्ञ स्नेही, यज्ञ सहयोगी आत्मायें हैं।

अभी आप तो सम्मुख बैठे हो लेकिन आपसे ज्यादा संख्या बापदादा के आगे भिन्न-भिन्न स्थानों की बापदादा देख रहे हैं। आप सम्मुख हो, वह दूर बैठे भी दिल में समाये हुए हैं। आप तो हो ही तब तो चलके पहुंचे हो ना। लेकिन बापदादा ने देखा कि दूर बैठे भी प्यार से सुनते हैं, और देखते भी सब अच्छा हैं। बापदादा ने शुरू में कहा था

यह साइंस आपके काम में आयेगी। तो देखो, दूर बैठे भी नजदीक अनुभव कराने वाला यह साइंस का साधन है। विनाश में भी मदद करेगी, वह भी जरूरी है और आपको यहाँ भी ब्राह्मण लाइफ में गोल्डन चांस दिया है। तो साइंस वाले भी आपके मददगार हैं। उन्हों को बुरा नहीं समझना, यह क्या करते हैं! नहीं। जिसका जो काम है वह तो करना पड़ेगा। बाकी साइंस भी आपके मददगार है भी और आगे भी बनती रहेगी। अच्छा।

बापदादा सभी बच्चों से खुश है लेकिन रोज़ रात्रि को अपने को बापदादा का यादप्यार देना और मुबारक देना, बापदादा की मुबारक रोज़ अपने को देना, बापदादा देता है और आप अपने आपको देना। बापदादा छोड़ते नहीं हैं, चाहे इण्डिया है चाहे विदेश है, जैसे अमृतवेले चक्र लगाते हैं ऐसे रात को गुडनाइट भी सबसे करते हैं इसलिए अपने आपको मुबारक देके सोना। अच्छा।

अभी सभी तरफ के बच्चों को बापदादा यादप्यार के साथ मुबारक भी दे रहे हैं। सदा उमंग उत्साह में आगे बढ़ भी रहे हो और बढ़ते रहना। कभी अपना उमंग-उत्साह किसी भी कारण से, किसी भी बात से कम नहीं करना। बात, बात हो जाती है लेकिन पुरुषार्थ और बाप का प्यार वह अपना है इसीलिए कभी भी अपने बुद्धि को बाप के बिना और कोई बातों में बिजी नहीं करना। बाप और बाप की मुरली और बाप द्वारा सर्विस जो मिली है वह सर्विस करते रहना। अच्छा। अभी क्या कहें, साथ तो रहना है ना। तो छुट्टी लेते हैं, यह भी नहीं कह सकते। साथ रहेंगे, साथ चलेंगे और साथ आयेगे। अच्छा। अभी समाप्ति।

दादी जानकी जी से:- टाइम पर ठीक हो गई ना! यह है बाप की मदद। (हंसा बहन से) सेवा अच्छी करती हो, इसको भी बापदादा मुबारक देते हैं। दूसरी कहाँ है? (प्रवीणा बहन) दोनों को बापदादा मुबारक देते हैं कि टाइम पर मेहनत करके ठीक कर दिया, सभी को लाभ मिला। कोई वंचित नहीं रहा, क्लास मिला। तो यह सम्भालने वालों को मुबारक।

नीलू बहन से:- इतने वर्ष रथ को चलाना, समय पर सेवा का चांस दिलाना, यह भी मुबारक है। बापदादा ने देखा रथ की भी कमाल है। जो 42 वर्ष रथ से सेवा ली, दिलाने वाला तो बापदादा ही है लेकिन निमित्त रथ की जो सेवा के टाइम हाज़िर रहा है, एक टाइम भी मिस नहीं किया है। सरल स्वभाव होने के कारण रथ को चलाना आता है। (दादी जानकी से) यह भी सेवा की बहुत बहुत उमंग उत्साह वाली है इसीलिए सेवा के टाइम ठीक कर लेती है। (बाबा ठीक कर देता है यह भी बाबा की....) चतुराई है।

जब ब्रह्मा बाबा इतनी बड़ी आयु होते हुए चलाया, अभी भी चला रहा है। कब तक चलाता वह तो ड्रामा में देखते जाते हैं। सब बापदादा की कमाल देखते जाओ और दुनिया की धमाल सुनते जाओ। आपको तो कोई फुरना नहीं, बेफिकर बादशाह हो। जो होगा अच्छा होगा आप ब्राह्मणों के लिए। आपको तो यही है संगम अमृतवेला हो रहा है। अमृतवेले के बाद क्या आता है? दिन आता है ना! तो दिन तो आना ही है। क्या होगा! यह संकल्प भी नहीं है। दिन आना ही है। अपना राज्य होना ही है। निश्चित है। तो निश्चित बात कभी बदल नहीं सकती। अच्छा - ओम् शान्ति।